# اِسلام کے بُنیادی ارکان




تالیف حضرت علامہ صاحبزادہ پیر محمد احمد قادری مدظلہ العالی

ترتیب و تدوین محمد طارق محمود قادری



ادارہ قاسم المصنفین

بسم اللہ الرحمن الرحیم

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَارَسُوْلَ اللّٰہ
وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ یَاحَبِیْبَ اللّٰہ

# اِسلام کے بُنیادی ارکان

تالیف


پیرطریقت، رہبر شریعت، شمس العارفین شیخ المشائخ

حضرت علامہ صاحبزادہ پیر محمد احمد قاسمی قادری مدظلہ العالی

زیب آستانہ عالیہ قادریہ قاسمیہ ڈھوا شریف تحصیل وضلع گجرات

0300-6229094


ترتیب تدوین


سگ مدینہ محمد طارق محمود قادری ہروہنزیف

فارغ التحصیل مرکزی دارالعلوم جامعہ قادریہ قاسمیہ

ڈھوا شریف: گجرات پاکستان



ادارہ قاسم المصنفین

جملہ حقوق بحق مؤلف محفوظ ہیں

نام کتاب : اسلام کے بنیادی ارکان

تالیف : علامہ صاحبزادہ محمد احمد قادری مدظلہ العالی

ترتیب وتدوین : سگِ مدینہ محمد طارق محمود قادری

پروف ریڈنگ : علامہ محمد زاہد لطیف قادری

نظر ثانی : علامہ محمد تنویر قادری

زیر اہتمام : ادارہ قاسم المصنفین

معاونین : محمد تبسم علی قادری، مدثر زمان قادری

کمپوزنگ : محمد طیب

اشاعت اوّل : 2010ء

تعداد : 1000

صفحات : 236

ہدیہ : 160روپے

## ملنے کا پتہ

آستانہ عالیہ قادریہ قاسمیہ

ڈھوڈا شریف گجرات فون: 0302-6231133

marfat.com

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

یَا شَفِیْعُ الْوَرٰی سَلَامٌ عَلَیْكَ

یَا رَسُوْلَ اللّٰہِ اُنْظُرْ حَالَنَا

یَاحَبِیْبَ اللّٰہِ ﷺ اِسْمَعْ قَالَنَا

اِنَّنِیْ فِیْ بَحْرِ هَمٍّ مُّغْرَقٌ

خُذْ یَدِیْ سَهِّلْ لَّنَا اَشْكَالَنَا

تَقَبَّلْنِیْ وَلَا تَرُدَّ سُؤَالِیْ

اَغِثْنِیْ سَیِّدِیْ اُنْظُرْ بِحَالِیْ

marfat.com

# ﴿حُسنِ ترتیب﴾


| نمبر شمار | مضمون | صفحہ نمبر |
|---|---|---|
| 0 | تقریظ | 13 |
| 1 | الانتساب | 17 |
| 2 | نذرانہ عقیدت | 18 |
| 3 | پیشِ لفظ | 19 |
| 4 | **ارکانِ اسلام** | 21 |
| 5 | پہلا رکن | 23 |
| 6 | توحید ورسالت | 23 |
| 7 | کلمہ توحید | 23 |
| 8 | توحید کی دو صورتیں | 23 |
| 9 | شرک | 24 |
| 10 | توحید باعتبار ایمان معبودیت | 25 |
| 11 | شرک | 25 |
| 12 | ایمان | 26 |
| 13 | عبادت اور تعظیم | 26 |
| 14 | افعالِ تعظیم | 28 |
| 15 | نماز | 29 |
| 16 | رسالت | 30 |
| 17 | **دوسرا رکن** | 32 |
| 18 | نماز | 32 |
| 19 | کفر وایمان کے درمیان نماز | 32 |
| 20 | یہی حدِ فاصل ہے | 32 |
| 21 | نماز کا لغوی مفہوم | 32 |
| 22 | آدابِ نماز | 33 |
| 23 | پاکیزگی وطہارت | 33 |
| 24 | بیت الخلا جانے کے آداب | 34 |
| 25 | حدیث مبارکہ | 36 |
| 26 | وضو کے احکام | 37 |
| 27 | نماز کے لئے وضو | 37 |
| 28 | اچھی طرح وضو کرنا | 38 |
| 29 | وضو کے فرائض | 39 |
| 30 | فرائض وضو کی تکمیل | 41 |
| 31 | وضو کی سنتیں | 43 |
| 32 | مستحبات وضو | 45 |
| 33 | وضو کرتے وقت کی دعائیں | 46 |
| 34 | مکروہات وضو | 48 |
| 35 | وضو کی اقسام | 49 |
| 36 | جن چیزوں سے وضو ٹوٹ جاتا ہے | 50 |
| 37 | جن چیزوں سے وضو نہیں ٹوٹتا | 50 |


marfat.com

| | | |
|---|---|---|
| 38 | معذور کون ہیں | 51 |
| 39 | فضیلت وضو، احادیثِ پاک کی روشنی میں | 52 |
| 40 | گناہ جھڑنے کی حکایت | 56 |
| 41 | باوضو سونے کی فضیلت | 57 |
| 42 | باوضو مرنے والا شہید ہے | 57 |
| 43 | جنت کے آٹھ دروازے کھل جاتے ہیں | 57 |
| 44 | مسواک کے بارے میں تین احادیث مبارکہ | 57 |
| 45 | غسل کا بیان | 58 |
| 46 | غسل کا طریقہ | 58 |
| 47 | غسل کے فرائض | 58 |
| 48 | غسل کی سنتیں | 59 |
| 49 | جن کاموں سے غسل فرض ہوتا ہے | 60 |
| 50 | دس چیزوں سے غسل فرض نہیں ہوتا | 61 |
| 51 | آداب غسل | 62 |
| 52 | اقسام غسل | 62 |
| 53 | فرض غسل | 63 |
| 54 | مسنون غسل | 63 |
| 55 | مستحب غسل | 63 |
| 56 | تیمم | 64 |
| 57 | تیمم کا بیان | 65 |
| 58 | تیمم کرنے کا طریقہ | 66 |
| 59 | طہارت کا طریقہ | 66 |
| 60 | تیمم کے فرائض | 66 |
| 61 | تیمم کی سنتیں | 67 |
| 62 | تیمم | 67 |
| 63 | کن چیزوں سے تیمم کرنا جائز ہے | 67 |
| 64 | تیمم کے بارے میں ایک اہم اصول | 68 |
| 65 | موزوں پر مسح | 68 |
| 66 | موذن کی فضیلت حدیث مبارکہ کی روشنی میں | 68 |
| 67 | اذان کا بیان | 70 |
| 68 | کیفیت اذان | 71 |
| 69 | مسئلہ | 71 |
| 70 | اقامت | 72 |
| 71 | اذان اور اقامت میں فرق | 72 |
| 72 | اذان اور اقامت کا جواب | 73 |
| 73 | فائدہ عظیم | 74 |
| 74 | اذان کے بعد دعا | 74 |


marfat.com

| | | |
|---|---|---|
| 75 | پنجگانہ نمازوں کے مستحب اوقات | 75 |
| 76 | فجر | 75 |
| 77 | صبح صادق | 76 |
| 78 | ظہر | 76 |
| 79 | عصر | 76 |
| 80 | مغرب | 76 |
| 81 | عشاء | 77 |
| 82 | ممنوعہ اوقات | 77 |
| 83 | فضیلت نماز قرآن و حدیث کی روشنی میں | 78 |
| 84 | نماز اور صحابہ کرام کے معمولات | 82 |
| 85 | نماز نہ پڑھنے کی خوفناک سزائیں | 82 |
| 86 | اصطلاحات نماز | 85 |
| 87 | اصطلاحات۔تشریح | 86 |
| 88 | شرائط نماز | 87 |
| 89 | ترکیب نماز مع احکام وارکان | 87 |
| 90 | نماز پڑھنے کا طریقہ | 89 |
| 91 | قیام کے فوراً بعد ثناء | 90 |
| 92 | تعوذ | 90 |
| 93 | تسمیہ | 90 |
| 94 | فاتحہ | 90 |
| 95 | تسبیح رکوع | 91 |
| 96 | تسمیع | 91 |
| 97 | سجدہ کا طریقہ | 91 |
| 98 | تسبیح سجدہ | 92 |
| 99 | جلسہ | 92 |
| 100 | دُعا | 92 |
| 101 | قعدہ اولیٰ | 92 |
| 102 | تشہد | 93 |
| 103 | قعدہ اخیرہ | 93 |
| 104 | دعائے ماثورہ | 94 |
| 105 | صلوۃ الوتر | 94 |
| 106 | دعائے قنوت | 95 |
| 107 | ضروری مسائل | 96 |
| 108 | فرائض نماز | 97 |
| 109 | واجب نماز | 98 |
| 110 | نماز کی سنتیں | 99 |
| 111 | نماز کے مستحبات | 101 |
| 112 | نماز کے مکروہات | 102 |
| 113 | نماز کے باہر مکروہات تحریمی | 102 |
| 114 | نماز کے اندرونی مکروہات تحریمی | 103 |
| 115 | مفسدات نماز | 104 |


marfat.com

| | | |
|---|---|---|
| 116 | سنت موکدہ غیر موکدہ میں فرق | 106 |
| 117 | سجدہ سہو کا بیان | 107 |
| 118 | سہو کرنے کا طریقہ | 107 |
| 119 | سجدہ سہو کب واجب ہوتا ہے | 107 |
| 120 | سجدہ سہو کے مسائل | 108 |
| 121 | تنبیہات | 112 |
| 122 | شک کے مسائل | 112 |
| 123 | جماعت کی اہمیت | 115 |
| 124 | ترک جماعت کے عذر | 116 |
| 125 | قضاء نماز | 117 |
| 126 | نماز قضاء کرنے کا شرعی عذر | 117 |
| 127 | قضاء نماز کا وقت | 117 |
| 128 | ادا قضاء | 118 |
| 129 | اعادہ نماز | 118 |
| 130 | چند ضروری مسائل صاحب ترتیب | 118 |
| 131 | امامت کا بیان | 119 |
| 132 | عورت اور مرد کی نماز میں فرق | 120 |
| 133 | مسافر کی نماز | 123 |
| 134 | مسئلہ | 124 |
| 135 | جن پر جمعہ فرض ہے | 124 |
| 136 | ضروری مسائل | 125 |
| 137 | جنازہ کا بیان | 125 |
| 138 | نماز جنازہ کا طریقہ | 125 |
| 139 | دعائے جنازہ | 126 |
| 140 | نابالغ لڑکے کی دعا | 126 |
| 141 | نابالغ لڑکی کی دعا | 126 |
| 142 | انتباہ | 126 |
| 143 | مسئلہ | 127 |
| 144 | تدفین کے متعلق چند ضروری مسائل | 127 |
| 145 | مسئلہ: جنازہ پڑھانے کا زیادہ حق دار کون ہے | 128 |
| 146 | نفلی نمازیں | 129 |
| 147 | نفلی نمازیں اور انکے مسائل | 129 |
| 148 | نماز تہجد | 129 |
| 149 | صلوٰۃ اللیل | 129 |
| 150 | نماز اشراق | 130 |
| 151 | نماز چاشت | 130 |
| 152 | صلوٰۃ التسبیح | 131 |
| 153 | نماز تسبیح پڑھنے کا طریقہ | 131 |
| 154 | صلوٰۃ اوابین | 132 |
| 155 | تحیۃ وضو | 132 |
| 156 | تحیۃ المسجد | 133 |
| 157 | آداب مسجد | 133 |


marfat.com

| | | |
|---|---|---|
| 158 | حدیث پاک کی روشنی میں مسجد کے آداب | 133 |
| 159 | **تیسرا رکن** | 136 |
| 160 | زکوٰۃ کا لغوی معنٰی ومفہوم | 136 |
| 161 | فرضیت زکوٰۃ کا سبب اور غرض وغایت | 137 |
| 162 | مسائل زکوٰۃ کا بیان | 138 |
| 163 | زکوٰۃ فرض ہونے کی شرائط | 138 |
| 164 | زیورات کی زکوٰۃ | 140 |
| 165 | سونے چاندی کی زکوٰۃ | 141 |
| 166 | عشر کا بیان | 142 |
| 167 | سائمہ جانوروں کی زکوٰۃ کا بیان | 142 |
| 168 | اونٹ کی زکوٰۃ | 143 |
| 169 | گائے کی زکوٰۃ | 144 |
| 170 | بکریوں کی زکوٰۃ | 145 |
| 171 | تجارتی سامانوں کی زکوٰۃ | 146 |
| 172 | زکوٰۃ کا مال کن لوگوں کو دیا جائے | 147 |
| 173 | کن لوگوں کو زکوٰۃ کا مال دینا جائز ہے اور کن کو جائز نہیں ہے۔ | 148 |
| 174 | زکوٰۃ کب فرض ہوئی | 151 |
| 175 | زکوٰۃ کی فرضیت کا انکار کرنا کیسا | 151 |
| 176 | تکمیل ایمان کا ذریعہ | 151 |
| 177 | رحمت الٰہی عزوجل کی برسات | 151 |
| 178 | تقویٰ وپرہیزگاری کا حصول | 152 |
| 179 | کامیابی کا راستہ | 152 |
| 180 | نصرت الٰہی عزوجل کا مستحق | 152 |
| 181 | مسلمان بھائیوں کے دل میں خوشی داخل کرنے کا ثواب | 153 |
| 182 | اسلامی بھائی چارے کا بہترین اظہار | 153 |
| 183 | فرمانِ مصطفیٰ ﷺ کا مصداق | 154 |
| 184 | مال پاک ہوجاتا ہے | 154 |
| 185 | مال میں برکت | 154 |
| 186 | حفاظت مال کا سبب | 155 |
| 187 | حاجت روائی | 155 |
| 188 | دعائیں ملتی ہیں | 155 |
| 189 | مال کی بربادی | 155 |
| 190 | آیۃ قرآنی | 156 |
| 191 | عذاب جہنم | 156 |
| 192 | زکوٰۃ کی اقسام | 156 |
| 193 | نصاب کا مالک | 157 |


marfat.com

| | | |
|---|---|---|
| 194 | مالک نصاب کا ہونے سے پہلے زکوۃ دے دی تو | 157 |
| 195 | مال حرام پر زکوۃ | 157 |
| 196 | مال حرام سے نجات کا طریقہ | 157 |
| 197 | مال ناجی کا مطلب | 158 |
| 198 | حاجت اصلیہ کسے کہتے ہیں | 158 |
| 199 | سال کب مکمل ہوگا | 158 |
| 200 | قمری مہینوں کا اعتبار ہوگا یا شمسی کا؟ | 159 |
| 201 | **(چوتھا رکن) حج** | 161 |
| 202 | مسائل حج وعمرہ | 168 |
| 203 | سفر حج وعمرہ کے آداب | 169 |
| 204 | حقوق اللہ کی ادائیگی | 169 |
| 205 | حقوق العباد کی ادائیگی | 169 |
| 206 | قصور کی معافی | 169 |
| 207 | لڑائی جھگڑے سے اجتناب | 169 |
| 208 | طلب اجازت | 170 |
| 209 | عورت کے لئے محرم کا ساتھ ضروری ہے | 170 |
| 210 | اہل حجاز کا احترام | 170 |
| 211 | متفرقات | 171 |
| 212 | خاص وظائف | 171 |
| 213 | وجوب حج کی شرائط | 171 |
| 214 | مسلمان ہونا | 172 |
| 215 | عقل مند ہونا | 172 |
| 216 | نابالغ | 172 |
| 217 | صاحب استطاعت ہونا | 172 |
| 218 | تندرست ہونا | 172 |
| 219 | آزاد ہونا | 172 |
| 220 | راستے میں امن امان ہونا | 173 |
| 221 | جان کا خوف ہونا | 173 |
| 222 | عورت کیلئے شوہر یا محرم کا ساتھ ہونا | 173 |
| 223 | عورت کا حالت عدت میں نہ ہونا | 173 |
| 224 | اقسام حج | 173 |
| 225 | افراد | 173 |
| 226 | قران | 173 |
| 227 | تمتع | 174 |
| 228 | عمرہ | 174 |
| 229 | عمرہ کے واجبات دو ہیں | 174 |
| 230 | عمرہ کی نیت | 175 |
| 231 | حج کے فرائض | 175 |
| 232 | حج کے واجبات | 176 |


marfat.com

| | | |
|---|---|---|
| 233 | حالت احرام میں جو چیزیں ممتنع ہیں | 176 |
| 234 | دم | 177 |
| 235 | بدنہ | 177 |
| 236 | صدقہ | 177 |
| 237 | طواف کے واجبات | 178 |
| 238 | ایام حج اور ارکان حج کی ادائیگی کا مختصر بیان | 179 |
| 239 | ۸ ذی الحجہ | 180 |
| 240 | منیٰ کی روانگی | 180 |
| 241 | ۹ ذی الحج کو عرفات روانگی | 180 |
| 242 | وقوف عرفات | 180 |
| 243 | عرفات سے مزدلفہ روانگی | 181 |
| 244 | ۱۰ ذی الحجہ کو مزدلفہ سے منیٰ روانگی | 181 |
| 245 | طواف زیارت کے لیے مکہ روانگی | 182 |
| 246 | خواتین | 182 |
| 247 | صفا مروہ کے درمیان سعی | 182 |
| 248 | مکہ سے منیٰ واپسی | 182 |
| 249 | طواف وداع | 183 |
| 250 | دربار رسالت ﷺ کی حاضری | 184 |
| 251 | (پانچواں رکن) روزہ | 186 |
| 252 | روزے کی فرضیت | 186 |
| 253 | روزے کے واجبات وشرائط | 187 |
| 254 | روزہ گزشتہ گناہوں کا کفارہ ہے | 188 |
| 255 | روزے دار کے لیے دو خوشیاں ہیں | 190 |
| 256 | روزے کا اجر وثواب | 191 |
| 257 | روزے کی فضیلت کے اسباب | 191 |
| 258 | روزہ دار کے منہ کی ہوا کا متغیر ہو جانا | 195 |
| 259 | جنت کے دروازہ کا کھل جانا اور جہنم کے دروازے کا بند ہونا | 196 |
| 260 | شیطانوں کے جکڑے جانے کا مفہوم | 197 |
| 261 | باب الریان | 198 |
| 262 | معمولات مصطفوی ﷺ | 199 |
| 263 | روزے میں سحری و افطاری کا معمول | 200 |
| 264 | برکت سے کیا مراد ہے | 200 |


marfat.com

| | | |
|---|---|---|
| 265 | شرائط وجوب | 201 |
| 266 | شرائط وجوب ادا | 201 |
| 267 | روزہ نہ رکھنے کے شرعی عذر | 202 |
| 268 | مرض یا بھوک و پیاس کی شدت | 202 |
| 269 | سفر | 202 |
| 270 | کمزور لاغر اور بوڑھا ہونا | 202 |
| 271 | عورت کا حاملہ ہونا یا دودھ پلانا | 203 |
| 272 | جہاد میں شرکت | 203 |
| 273 | روزے کے ارکان | 203 |
| 274 | روزے کی نیت کے احکام | 203 |
| 275 | سحری و افطاری کے احکام | 205 |
| 276 | روزہ توڑنے والی چیزیں | 205 |
| 277 | روزہ کے مکروہات | 206 |
| 278 | روزہ توڑ ڈالنے کا کفارہ | 207 |
| 279 | مسنون اور نفلی روزوں کی فضیلت | 207 |
| 280 | صوم عاشورہ | 207 |
| 281 | صوم عرفہ | 208 |
| 282 | شوال کے چھ روزے | 208 |
| 283 | شعبان کا روزہ اور شب برات | 209 |
| 284 | ایام بیض کے روزے | 209 |
| 285 | دوشنبہ اور جمعرات کا روزہ | 210 |
| 286 | بدھ جمعرات و جمعہ کا روزہ | 210 |
| 287 | صوم داؤدی | 211 |
| 288 | حالت جنابت میں روزہ رکھنا | 211 |
| 289 | ایام مخصوصہ میں خواتین کا روزہ | 212 |
| 290 | ایام مخصوصہ | 212 |
| 291 | حیض کا طلوع فجر سے پہلے رکنا | 213 |
| 292 | مسئلہ | 213 |
| 293 | فضیلت اعتکاف | 213 |
| 294 | حقیقت اعتکاف | 215 |
| 295 | خلوت نشینی کیوں؟ | 216 |
| 296 | اعتکاف کے مسائل | 217 |
| 297 | اعتکاف واجب | 217 |
| 298 | اعتکاف سنت موکدہ | 217 |
| 299 | اعتکاف مستحب | 218 |
| 300 | اعتکاف کے چند دیگر مسائل | 218 |
| 301 | اعتکاف بیٹھنے کی شرائط | 221 |
| 302 | نفلی اعتکاف | 221 |
| 303 | اعتکاف واجب نذر | 222 |
| 304 | دوران اعتکاف معتکف سے سرانجام ہونے والے امور | 222 |
| 305 | اجتماعی اعتکاف | 222 |

| | | |
|---|---|---|
| 306 | انفرادی و اجتماعی نوعیت کے امور کا فرق | 223 |
| 307 | اجتماعی اعتکاف کے فضائل وثمرات | 224 |
| 308 | مسنون اعتکاف کے ٹوٹنے کے بعد نفل کی نیت سے جاری رہنا | 224 |
| 309 | اعتکاف کا توڑنا | 225 |
| 310 | بیماری | 225 |
| 311 | والدین، بیوی، بچوں کی تکلیف | 225 |
| 312 | جنازہ | 225 |
| 313 | زبردستی نکالنا | 225 |
| 314 | اعتکاف توڑنے والے امور | 225 |
| 315 | مکروہات اعتکاف | 226 |
| 316 | کیا خواتین کا اعتکاف بیٹھنا درست ہے | 226 |
| 317 | بیوی کا خاوند کی اجازت کے بغیر اعتکاف | 226 |
| 318 | عورت اعتکاف کہاں بیٹھے | 226 |
| 319 | گھر سے دور عورتوں کا اجتماعی اعتکاف | 227 |
| 320 | وضاحت | 228 |
| 321 | عید کے دن مسنون اور مستحب امور | 228 |
| 322 | صدقہ فطر | 230 |
| 323 | صدقہ فطر کن پر واجب ہے | 230 |
| 324 | صدقہ فطر کی ادائیگی کا وقت | 231 |
| 325 | ماہ رمضان میں صدقہ خیرات کرنے کی فضیلت | 231 |
| 326 | فطرانہ لینے کے مستحق لوگ | 232 |
| 327 | رشتہ داروں کو صدقہ فطر دینا جائز ہے | 232 |
| 328 | صدقہ فطر کی فضیلت حدیث مبارکہ کی روشنی میں | 232 |
| 329 | ماخذ ومراجع | 236 |


☆☆☆☆☆

marfat.com

بسم اللہ الرحمن الرحیم

# تقریظ

از.....علامہ حافظ محمد تنویر قادری وٹالوی آف وٹالہ (آزاد کشمیر)

مشائخ عظام، علماء کبار اور مشاہیر واخیار اُمت کا تذکرہ جہاں لمحہ موجود میں علم و عمل دُرست کرنے کا باعث ہوتا ہے وہاں مستقبل میں ایک صالح روایت کے تسلسل کا موجب بھی، پیر طریقت، رہبر شریعت، مبلغ اسلام، شیخ المشائخ حضرت علامہ الحاج صاحبزادہ پیر محمد احمد قادری مدظلہ العالی ہمارے درمیان اپنی ذات میں علم وعمل کے حوالے سے ایسی ہی ایک صالح روایت کے نمائندے ہیں آپ بڑے وسیع القلب، نہایت مخلص، مہمان نواز اور شفیق انسان ہیں۔ آپ محض ایک رسمی پیر ہی نہیں بلکہ حقیقت شناس بھی ہیں۔ آپ کا کوئی کام بھی درد کی گہرائی سے خالی نہیں ہوتا مسلسل تبلیغی دورہ جات کی وجہ سے تھکے ماندے ''شیخ'' حیرت ہوتی ہے کہ زندہ ذوق کی لذتوں سے بہرہ مند رہتے ہیں۔ آپ یاد خدا عزوجل اور یاد مصطفیٰ ﷺ میں نہ صرف روتے ہیں بلکہ اوروں کو رُلاتے بھی ہیں، نہ صرف خود تڑپتے ہیں بلکہ اوروں کو تڑپاتے بھی ہیں۔ مسلک اہلسنت کی خدمت اور اعلاء کلمۃ اللہ کے لیے کام کرنا ان کا کاروبار نہیں بلکہ درد ہے۔ وہ اپنے درد کے اظہار کے لیے اس کے قائل نہیں کے اپنا ہی گیت سناتے جائیں بلکہ جب کوئی میٹھا نغمہ کہیں سے بھی سنائی دیتا ہے تو وہ اس کی سروں اور لہروں کو عام کرنے کا مشتاق بن جاتے ہیں۔ آپ سنیت کے فروغ کیلئے عرصہ سے بدنی وزبانی جہاد میں مصروف ہیں اور اب اس کے ساتھ ساتھ قلمی جہاد میں بھی اتر

marfat.com

آئے ہیں۔ یہ بات حقیقت ہے کہ آپ جس شعبے میں بھی گئے ہیں اس شعبے نے آپ پے ناز کیا ہے۔ آپ تقریر وتحریر میں تعمیرِ سیرت، کردار سازی، اخلاقی بلندی اور روحانی برتری کی طرف خصوصی توجہ رکھتے ہیں۔ سنگین حالات، کٹھن مراحل اور دشوار گزار منازل میں صبر و استقامت، علم و تحمل کے پیکر جمیل نظر آتے ہیں۔ راقم (محمد تنویر قادری) کی علم و قلم سے شناسائی آپ ہی کا فیضان ہے۔ چونکہ اس وقت آپ کے ایک قلمی شاہکار پر تبصرہ کرنا مقصود ہے اس لیے ہم قلم کی اہمیت کی طرف اپنے قلم کا رُخ کرتے ہیں۔

جہاں علم میں قلم کو منفرد و ممتاز مقام حاصل ہے اور پھر یہ کیوں نہ ہو جبکہ تخلیق اولیات خالق میں قلم کو بھی اولیت کے شرف سے نوازا گیا اور قرآن مجید میں رب العزت نے (نٓ وَالْقَلَمِ وَمَا يَسْطُرُوْنَ) کی قسم سے اس کی عزت افزائی فرمائی۔ پھر حضور نبی کریم ﷺ نے علم کو قلم سے محفوظ کرنے کی تاکید اور اس کے ذریعے خطوط اور معاہدہ جات لکھوا کر اس کو عزت بخشی، اس کے بعد صحابہ کرام، تابعین، تبع تابعین، محققین، مفکرین اور علماء عظام (رضوان اللہ علیہم اجمعین) نے قلم کے ذریعے علمی ورثہ آنے والی نسلوں تک منتقل کرنے کا حق ادا کردیا۔ اپنے تو اپنے دشمنان اسلام کی لائبریریاں بھی ان علمی جواہر پاروں سے بھری پڑی ہیں۔ یورپ میں علامہ اقبال رحمۃ اللہ علیہ نے مسلمان مفکرین کے قلمی تحائف کو دیکھا تو پکار اٹھے:

مگر وہ علم کے موتی کتابیں اپنے آباء کی
کہ جن کو دیکھ کر یورپ میں دل ہوتا ہے سی پارہ

مسلمانوں کی ریسرچ و تحقیق سے بے اعتنائی دیکھ کر علامہ اقبال جیسے عظیم مسلمان سکالر خون کے آنسو بہانے پر مجبور ہو گئے اور بیداری کا درس دیتے ہوئے فرماتے ہیں:

marfat.com

حفاظت پھول کی ممکن نہیں ہے
اگر کانٹوں میں ہو خوئے حریری

ایک دوسرے مقام پر علامہ اقبال رحمۃ اللہ علیہ اپنے جذبات کا اظہار کرتے ہوئے یوں دیکھائی دیتے ہیں۔

فولاد کب رہتا ہے شمشیر کے لائق
پیدا ہو اگر اس کی طبیعت میں حریری

ان اشعار سے جس عمل کی طرف حکیم الامت علیہ الرحمہ توجہ دلا رہے ہیں۔ فی زمانہ دیکھا جائے تو اس کی حسین ترین تعبیر بن کر ممدوح مشائخ، محسن اہلسنت، پیر طریقت، رہبرِ شریعت، یادگار اسلاف حضرت علامہ صاحبزادہ پیر محمد احمد قادری مدظلہ العالی سامنے آتے ہیں۔ آپ بیک وقت بہت سے شعبہ جات میں دین حنیف کی اس شان سے خدمت کر رہے ہیں کہ انسان حیران رہ جاتا ہے۔ ایک طرف تبلیغی دورہ جات میں معروف ہیں اور دوسری طرف تصنیف و تالیف میں محنت کر رہے ہیں اور شب و روز تقاریر کا جہاں آباد کئے ہوئے ہیں۔ نیز دارالعلوم جامعہ قادریہ قاسمیہ ڈھوڈا شریف اور آستانہ عالیہ ڈھوڈا شریف ضلع گجرات کے استحکام و استقلال کے لئے تگ و دو میں پیہم مصروف ہیں۔ یوں محسوس ہوتا ہے کہ اللہ تعالیٰ نے آپ کو دین متین کی جامع خدمت کیلئے منتخب فرما لیا ہے۔ آپ کی حسنات عظیمہ میں ''سالانہ اجتماعی اعتکاف'' اور ''ماہانہ محفل شب بیداری'' ایک عظیم الشان خدمت ہے۔ جس میں شامل ہو کر ہزاروں لوگ مستفیض ہو رہے ہیں۔ اس سال (2010) میں تقریباً 1200 افراد نے آپ کی زیر نگرانی اجتماعی اعتکاف کی سعادت حاصل کی۔ آپ اپنی مخلصانہ خدمات کی بناء پر چھوٹی عمر میں ہی اکابر علماء و مشائخ سے دادِ تحسین وصول کر چکے ہیں۔ آپ اپنے والد گرامی حضور قبلہ عالم، زینت المشائخ پیر طریقت، مبلغ عالم اسلام حضرت علامہ الحاج الحافظ پیر حیدر شاہ قادری

marfat.com

# نذرانہ عقیدت

اس کتاب کو میں اپنے پیر و مرشد پیر طریقت رہبر شریعت

منبع علم و حکمت پیکرِ خلوص و محبت

آستانہ عالیہ کی بہار، شیخ المشائخ، شمس العارفین

حضرت علامہ الحافظ الحاج **پیر حیدر شاہ قادری** مدظلہ العالی

زیب سجادہ نشین آستانہ عالیہ قادریہ قاسمیہ

ڈھوڈا شریف گجرات

.....سرپرست اعلیٰ.....

مرکزی دارالعلوم جامعہ قادریہ قاسمیہ ڈھوڈا شریف

گجرات پاکستان

کی بارگاہ میں نذرانۂ پیش کرنے کی سعادت حاصل کرتا ہوں

گر قبول زہے عز و شرف

خیر اندیش

صاحبزادہ محمد احمد قادری

marfat.com

# پیشِ لفظ

اللہ سبحانہ وتعالیٰ یوں تو ہر نبی کے ذریعے بنی نوع انسان کی ہدایت ورہنمائی کے لیے مختلف شکلوں میں رہنمائی تعلیمات پر مبنی احکام نازل فرماتا رہا لیکن خالقِ کائنات عزوجل نے محسن ومقصود کائنات حضور نبی اکرم ﷺ کے ذریعے امت مسلمہ ﷺ کو جس آخری حتمی مکمل اور جامع ترین دین سے نوازہ وہ دین اسلام ہے۔

اسلامی تعلیمات کے دو بنیادی شعبے ہیں عقائد اور اعمال، عقائد کا تعلق اِن نظریات اور حقائق سے ہے جن پر دل کی گہرایوں سے غیر متزلزل یقین رکھنا اسلام کی شرط اول ہے یہ عقائد پانچ ہیں ایمان باللہ، ایمان بالرسالت، ایمان بالکتب، ایمان بالملائکہ اور ایمان بالآخرہ اِن میں سے ہر ایک کے تقاضے الگ اور ہر ایک کی نوعیت بھی مختلف ہے۔

دین اسلام کا دوسرا شعبہ اعمال سے متعلق ہے جسے عبادات بھی کہا جاتا ہے یعنی ایسے امور جن کی ادائیگی ایک مسلمان کے لیے حسب استطاعت ضروری اور لازمی ہے اِن عبادات کی بھی پانچ قسمیں ہیں۔ اعمال کی یہی پانچ بنیادی اقسام جن پر اسلام کی بنیاد رکھی گئی ہے معروف اصطلاح میں ارکانِ اسلام کہلاتے ہیں، جو بالترتیب اسطرح ہیں۔

۱۔ کلمہ پڑھنا یعنی توحید خداوندی اور رسالت محمدی ﷺ کا دل سے قرار کرنا۔

۲۔ شب وروز میں پانچ نمازیں اوقاتِ مقررہ پر ادا کرنا۔

۳۔ صاحب نصاب کے لیے سال میں ایک مرتبہ مال کا ڈھائی فیصد (چالیسواں حصہ) زکوٰۃ کے طور پر مستحقین زکوٰۃ کو ادا کرنا۔

marfat.com

۴۔ سال بھر میں ایک مہینہ ماہ رمضان کے روزے رکھنا۔

۵۔ جسے طاقت ہو اسکے لیے بیت اللہ کا حج کرنا۔

حقیقت یہ ہے کہ یہی عقائد و اعمال اسلامی معاشرے کی خصوصیات کا بنیادی عنصر ہے اور یہ اسلامی تہذیب و ثقافت کو دیگر تہذیبوں سے ممتاز و منفرد کرتے ہیں۔ دین اسلام نے اپنی تمام تر روحانی، اخلاقی اور سماجی اقدار معاشرتی، سیاسی، اقتصادی نظام اور جملہ عبادات و معاملات کا ڈھانچہ انہی عقائد و اعمال پر استوار کر رکھا ہے لہٰذا یہ جاننے میں قطعاً دشواری نہیں ہونی چاہیے کہ ہر دور کے بدلتے ہوئے علمی، فکری، تہذیبی اور معاشرتی و سیاسی تقاضوں کے مطابق اسلام کی حقانیت و صداقت اور عملیت کو متحقق کرانے کے لیے ان کی مطلوبہ تشریح و توضیح بھی ضروری ہے۔

یہ مسلمہ حقیقت ہے کہ اسلام کے علاوہ دوسرے کسی بھی انسان ساختہ مذہب کے ہاں عبادات کا ایک ایسا عظیم اور جامع تصور نہیں ملے گا اسکی بنیادی وجہ یہ ہے کہ اسلام صرف عقائد کا مذہب نہیں بلکہ آفاقی دین اور مستقل ضابطہ حیات ہے یہ بنی نوع انسان کے لیے روحانی، سیاسی، معاشی اور معاشرتی زندگی کا بہترین اور قابل عمل جزو ہے۔

ارکان اسلام کے یہ پانچ نکاتی لائحہ عمل دنیوی و اخروی زندگی کے ہر پہلو پر محیط ہے۔ زیر نظر کتاب میں ارکان اسلام اور نصاب اعتکاف کے ہر پہلو پر روشنی ڈالی گئی ہے اللہ تعالیٰ ہمیں ایمان و اسلام کے مطلوبہ معیار پر پورا اترنے کے لیے حسنِ عقیدہ و عمل کی توفیق عطا فرمائے۔

العارض

گدائے گل پیر سگِ مدینہ محمد طارق محمود قادری

فارغ التحصیل مرکزی دار العلوم جامعہ قادریہ قاسمیہ ڈھوڈا شریف

فون: 0313-0302-6231133, 0347-6301413

marfat.com

# ارکانِ اسلام

حضرت عبداللہ بن عمر رضی اللہ عنہما سے مروی ہے کہ حضور ﷺ نے فرمایا:۔

بنی الاسلام علی خمس شهادة ان لا اله الا الله وأن محمدًا رسول الله

واقام الصلوٰة وایتاء الزکوٰة والحج وصوم رمضان

(بخاری الصحیح :۱:۱۲: کتاب الایمان، باب الایمان یقول النبی ﷺ بنی الاسلام علی خمس، رقم:۱۸)

(مسلم الصحیح :۱:۴۵ کتاب الایمان، باب الایمان ارکان الاسلام رقم:۱۶)

اسلام کی بنیاد پانچ چیزوں پر ہے اس بات کی گواہی دینا کہ اللہ کے سوا کوئی معبود نہیں اور حضرت محمد ﷺ اللہ کے رسول ہیں اور نماز قائم کرنا زکوٰۃ ادا کرنا حج کرنا اور رمضان المبارک کے روزے رکھنا

تشریح:۔

اس حدیث مبارکہ میں جن پانچ چیزوں کو بنیاد اسلام قرار دیا گیا ہے اصطلاح شریعت میں انہیں اسلام کے ارکان خمسہ سے تعبیر کیا گیا ہے یہی ارکان خمسہ حدیث جبرئیل میں بھی مذکور ہے اور متعدد روایات میں بھی انکا تذکرہ موجود ہے اور انہیں کی بطریق احسن ادائیگی پر لفظ اسلام کا اطلاق ہوتا ہے۔

اسلام کا رکن اوّل کلمہ شہادت ہے۔

اشهد ان لا اِله اِلا الله و اشهد ان محمدًا عبدهٗ ورسولهٗ

ترجمہ:۔ میں گواہی دیتا ہوں کہ اللہ کے سوا کوئی معبود نہیں اور میں گواہی دیتا ہوں کہ حضرت محمد ﷺ اللہ کے بندے اور اسکے رسول ہیں۔

Irfanat.com

تشریح:۔ شہادت توحید و رسالت کے لئے محض کلمہ طیبہ کا رسمی اعلان اور زبانی اقرار ہی کافی نہیں کیونکہ کسی شخص کا اپنی زبان سے کلمہ طیبہ ادا کرنا اور بات ہے اور دل وزبان کی ہم آہنگی سے اسکی شہادت دینا اور بات ہے ایمان فی الحقیقت: اقرار باللسان اور تصدیق بالقلب کا نام ہے۔

اٰمَنْتُ بِاللّٰہِ وَمَلٰٓئِکَتِہٖ وَکُتُبِہٖ وَرُسُلِہٖ وَالْیَوْمِ الْاٰخِرِ وَالْقَدْرِ خَیْرِہٖ وَشَرِّہٖ مِنَ اللّٰہِ تَعَالٰی وَالْبَعْثِ بَعْدَ الْمَوْتِ ط

ترجمہ: میں ایمان لایا اللہ پر اور اسکے فرشتوں پر اور اسکی کتابوں پر اور اسکے رسولوں پر اور قیامت کے دن پر اور اُس پر کہ اچھی اور بُری تقدیر کا خالق اللہ ہے اور موت کے بعد اٹھائے جانے پر۔

اٰمَنْتُ بِاللّٰہِ کَمَا ھُوَ بِاَسْمَآئِہٖ وَصِفَاتِہٖ وَقَبِلْتُ جَمِیْعَ اَحْکَامِہٖ اَقْرَارٌ بِاللِّسَانِ وَتَصْدِیْقٌ بِالْقَلْبِ ط

ترجمہ:۔ میں ایمان لایا اللہ پر جیسا کہ وہ اپنے ناموں اور اپنی صفتوں کے ساتھ اور میں نے اس کے احکام قبول کیئے زبان سے اقرار کرتے ہوئے اور دل سے تصدیق کرتے ہوئے اور دلی تصدیق کے بغیر محض زبانی اقرار کوئی معنی نہیں رکھتا۔

بقول اقبال:۔

زباں سے کہہ بھی دیا لا اِلہ تو کیا حاصل
دل و نگاہ مسلمان نہیں تو کچھ بھی نہیں

marfat.com

# پہلا رُکن: توحید ورسالت

## کلمہ طیبہ

کلمہ طیبہ کے دو جز ہیں، اوّل لا الہ الا اللہ کلمہ توحید ہے اور دوسرا محمد رسول اللہ (ﷺ) کلمہ رسالت ہے۔ دونوں جز ملکر کلمہ طیبہ یا کلمہ اسلام کہلاتے ہیں یہی وہ کلمہ مبارک ہے کہ غیر مسلم کو مسلمان ہونے کیلئے اور مسلمان کو اپنا اسلام ظاہر کرتے وقت اس کلمہ مبارکہ کا زبان سے ادا کرنا ضروری ہے لہٰذا مسلمانوں کو چاہیے کہ اس کے پورے پورے معنٰی سمجھ لیں اور اسے اچھی طرح اپنے دل میں محفوظ کرلیں۔

### کلمۂ توحید: لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ

پہلے کلمہ توحید کو سمجھ لینا ضروری ہے چونکہ تمام ایمانیات میں سب سے مقدم خدا تعالٰی کی توحید پر ایمان لانا ضروری ہے توحید کا ترجمہ ہے اللہ تعالٰی کو ایک ماننا ایک جاننا اور ایک یقین کرنا۔

## توحید کی دو صورتیں

۱۔ توحید بہ اعتبار وجوب وجود

۲۔ توحید بہ اعتبار معبودیت

کلمہ جلالت "اللہ" یہ توحید پر دلالت کرتا ہے اسلیے کہ اللہ اس ذات مقدس کا نام ہے جو واجب الوجود ہے اور تمام اچھی صفتوں سے متصف ہے اللہ اس ذات کا نام ہے جسمیں تمام صفات کمال جمع ہیں اور وہ خود ہے۔ اسی لیے اسے خدا کہتے ہیں۔

marfat.com

اللہ تعالیٰ ایک ہے اسکے سوا کوئی اور اللہ یعنی معبود برحق مستحق عبادت نہیں اور نہ کوئی اسکی ذات اور صفات اور اسماء اور افعال اور احکام میں شریک ہے اللہ تعالیٰ واجب الوجود ہے یعنی اسکا وجود ضروری ہے۔ اللہ تعالیٰ ہمیشہ سے ہے اور ہمیشہ رہے گا کبھی فنا نہ ہوگا اللہ تعالیٰ میں تمام خوبیاں اور صفاتِ کاملہ جمع ہیں اور وہ ہر عیب اور نقصان کی چیز سے بلکہ ہر اس بات سے جسمیں نہ کمال ہو نہ نقصان پاک ہے اسمیں ایسی باتیں ہونا محال ہے جیسے دغا۔ فریب۔ جھوٹ۔ ظلم۔ جہل۔ بیحیائی بری اور عیب کی باتیں وغیرہ اللہ تعالیٰ کے تمام نام صفتیں ہمیشہ سے ہیں پیدا کی ہوئی اور نئی نہیں ہیں اور نہ ان کے لئے ابتدا و انتہا ہے جو کوئی انہیں پیدا کی ہوئی اور نئی ہوئی بتادے بے دین گمراہ ہے۔

یہ تمام باتیں کہ واجب الوجود ہمیشہ سے ہو ہمیشہ رہے تمام صفات کمالیہ سے متصف ہو۔ اسکا وجود اور اسکی صفتیں کسی کی دی ہوئی نہ ہوں ایک کے سوا دوسرے میں پایا جانا محال ہے۔ اسلیے ثابت ہوا کہ یہ تمام باتیں صرف ایک ہی ذات میں پائی جاسکتی ہیں نہ کہ دو میں یعنی وہ ایک ہے اور اسی کو اللہ کہتے ہیں۔

یہ توحید بمعنی وجوب وجود ہے جو صرف کلمہ جلالت (اللہ) سے معلوم ہوئی۔ اسی واسطے اس کلمہ میں اللہ لایا گیا نہ الرحمٰن الرحیم المالک وغیرہ تا کہ توحید وجوب وجود بھی اسی کلمہ سے معلوم ہو جائے۔

## شرک

اس توحید کے مقابلہ میں شرک یہ ہے کہ اللہ تعالیٰ کے سوا کسی چیز کو واجب الوجود اور اس کی صفتوں کو قدیم ماننا اسی کو شرک فی وجوب الوجود کہتے ہیں۔

marfat.com

## توحید بہ اعتبار ایمان معبودیت

مسلمانوں کو جو ایمان رکھنا چاہیے وہ یہ ہے کہ اللہ تعالیٰ اور اُس کی صفتوں کے سوا کسی کے وجود یا اسکی صفتوں کو خدا کا پیدا کیا ہوا اور خدا کا عطا کیا ہوا سمجھے اسلیئے کہ خداوند تعالیٰ نے ہی عالم کے زرہ زرہ کو پیدا کیا ہے اور جو جن صفتوں کے لائق تھا اسکو وہ صفتیں عطا فرمائیں خدا کی بخشی ہوئی صفتوں میں ایمان ہی نبوت و رسالت ہے صدیقیت و شہادت ہے صلاح و ولایت حیات و علم ہی قدرت و تصرف ہے مشیت و ارادہ ہے سمع و بصر ہی تکلم اور اسکی حقانیت و صداقت ہے دولت و امارت ہی حکومت و سلطنت ہی عجیب و غریب چیزوں کی ایجاد و صنعت، عظمت و شوکت ہی وغیرہ وغیرہ۔

فرشتوں میں انسانوں میں جنات میں ان صفتوں کے ظہور موجود ہیں اور انکی یہ صفتیں عطائی ہیں خدا کی بخشی ہوئی ہیں۔ خداوند تعالیٰ نے اپنے بندوں میں سے جس کو جس صفت کیلئے مناسب جانا وہ صفت عطا فرمائی۔ جس قدر صفتوں کے لائق جانا اس قدر دیں جب ایسی ذات جو واجب الوجود ہو اور تمام صفاتِ کمالیہ سے متصف ہو اور اس کی ذات اور اسکی صفات کسی کی عطا کی ہوئی نہ ہو صرف ایک ہی ہو تو وہی ایک مستحق عبادت ہے اور لائق پرستش ہے۔ اس کو توحید معبودیت کہتے ہیں اور اسی توحید کے لئے یہ کلمہ لا الہ الا اللہ نازل فرمایا گیا۔

## شرک

اس کے مقابلے میں شرک یہ ہے کہ اللہ تعالیٰ کے سوا کسی چیز کو معبود سمجھنا، مستحق عبادت جاننا اس کو شرک فی العبادات کہتے ہیں۔

marfat.com

# ایمان

اللہ تعالیٰ نے اپنے بندوں میں سے خاص خاص بندوں کو عظمت و بزرگی عطاء فرمائی ہے اور ان کی تعظیم و تکریم بجالانے کا حکم فرمایا ہے جس کیلئے جو طریقہ تعظیم و تکریم کا بتایا اس طریقہ سے معظم ایمان ہے۔

## عبادت اور تعظیم

آیئے یہاں پر عبادت اور تعظیم کا فرق بھی ذکر کرتے چلیں چونکہ بہت سے حضرات اس فرق کو نہ سمجھنے کی وجہ سے غلطی کر جاتے ہیں اور بہت سی چیزوں کو بلاوجہ شرک کہہ کر مسلمانوں کو مشرک بنانا شروع کر دیتے ہیں۔ بلکہ شیطان اس وجہ سے مردود بارگاہ الٰہی ہوا کہ اس نے عبادت اور تعظیم میں فرق نہ سمجھا اور حکم خدا کے برخلاف کیا۔

## عبادت

عبادت کے معنٰی ہیں کسی کو معبود سمجھتے ہوئے اس کی تعظیم بجالانا اور اس کے سامنے اپنی عاجزی و خشوع و خضوع کو پیش کرنا یہ خدا کے سوا دوسرے کے لیے شرک ہے۔

## تعظیم

کسی کی صرف تعظیم بجالانا اور اس کو معبود نہ سمجھنا۔ یہ مطلق تعظیم جائز ہے۔ بلکہ کہیں کہیں فرض یا واجب ہے۔ یہ نہ تو عبادت ہے اور نہ شرک اس واسطے کلمۂ توحید میں لفظ ''الہ'' لایا گیا۔ جو معبود کے معنی میں ہے اور لفظ معظم لاکر نفی نہ فرمائی کہ۔ لا معظمہ الا اللہ اللہ کے سوا کوئی قابل تعظیم نہیں۔ تاکہ معلوم ہو جائے کہ معبود سمجھ کر غیر خدا کی تعظیم بجالانا شرک ہے۔ کسی کو صرف معظم (تعظیم کے لائق) سمجھنا

marfat.com

اوراس کی تعظیم وتکریم کرنے کا اللہ نے اظہار فرمایا بلکہ حکم دیا۔

حضور اکرم صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے لیے فرمایا کہ:۔

وَعَزَّرُوْهُ وَنَصَرُوْهُ

ترجمہ:۔اور اسکی تعظیم کریں اور اسکی مدد کریں۔

نیز فرمایا:۔ وَتُعَزِّرُوْهُ وَتُوَقِّرُوْهُ

ترجمہ:۔رسول ﷺ کی تعظیم وتوقیر بجالاؤ۔

حضرات ملائکہ کرام علیہم الصلوٰۃ والسلام کے متعلق ارشاد الٰہی ہے۔

عِبَادٌ مُّكْرَمُوْنَ

ترجمہ:۔عظمت والے بندے ہیں۔

مسلمانوں کے لیے فرمان الٰہی ہے۔

اِنَّ اَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقٰكُمْ

ترجمہ:۔بیشک اللہ کے یہاں تم میں زیادہ عزت والا وہ ہے جو تم میں زیادہ پرہیز گار ہے۔شعائر اسلام کے لیے خدا تعالیٰ فرماتا ہے۔

وَمَنْ يُّعَظِّمْ شَعَآئِرَ اللّٰهِ

ترجمہ:۔اور جو اللہ کی نشانوں کی تعظیم کرے۔

وَمَنْ يُّعَظِّمْ حُرُمٰتِ اللّٰهِ

ترجمہ:۔اور جو اللہ کی حرمتوں کی تعظیم کرے۔

آقا کریم علیہ الصلوٰۃ والسلام فرماتے ہیں۔

منْ لم یوقر کبیرنا فلیس منا (مشکوٰۃ)

marfat.com

ترجمہ:۔ جو بڑے کی تعظیم وتوقیر نہ کرے وہ ہماری جماعت سے نہیں۔

یہ تمام چیزیں غیر خدا ہیں اور مستحق تعظیم ہیں۔

قرآن کریم اور حدیث مبارکہ میں ان کے معظم ہونے کا ذکر ہے۔تو معلوم ہوا کہ عبادت اور ہے اور تعظیم اور غیر خدا کی تعظیم وتکریم جائز ہے مسلمان معظمین حضرات کو صرف معظم سمجھتے ہیں اور ان کی تعظیم بجالاتے ہیں۔

اور معبود نہیں جانتے اور نہ ہی جاننا چاہیے۔

معبود تو صرف ایک ہی ہے۔(لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ)

## افعال تعظیم

بابت سے افعال واعمال ایسے ہیں جن کو شریعت مطہرہ نے تعظیم کے لئے مقرر کیا ہے مثلاً ادب سے کھڑا ہونا ۔۲۔ ادب سے جھکنا۔۳۔ادب سے بیٹھنا۔۴۔ہاتھ باندھنا وغیرہ یہ سب تعظیم کے افعال ہیں یہ افعال کسی کیلئے بھی ادا کئے جائیں اور معبود سمجھ کر ادا کئے جائیں تب عبادت کہلائیں گے ورنہ صرف تعظیم کہلائیں گے۔

ہاں ان چیزوں میں سے بعض وہ چیزیں بھی ہیں جن کے ساتھ غیر خدا کی تعظیم بجا لانا شریعت محمدیہ میں حرام ہے جیسے کوئی تعظیم کیلئے حد رکوع تک جھکے یا سجدہ کرے۔ اگر کوئی ایسا کرے گا تو گناہ گار ہوگا اگرچہ شرک نہ ہوگا اس لئے کہ شرک بغیر معبود سمجھے نہیں ہوسکتا اور ان میں بعض چیزیں وہ ہیں۔

جن کے ساتھ غیر خدا کی تعظیم وتکریم درست ہے جیسے تعظیم کیلئے کھڑا ہونا حضور پُر نور ﷺ نے حضرت سعد رضی اللہ عنہ کیلئے کھڑے ہونے کا حکم فرمایا اور حضرت سیدہ فاطمہ رضی اللہ عنہا حضور اکرم نور مجسم ﷺ کیلئے کھڑی ہو جاتی تھیں۔(مشکوٰۃ شریف)

marfat.com

## نماز

اللہ تعالیٰ نے اپنی عبادت اور تعظیم بجالانے کے لئے کئی طریقے مقرر فرمائے ہیں نماز، روزہ، حج یہ سب خدا کی عبادتیں ہیں ان میں نماز بہت سے افعال تعظیم پر مشتمل ہے اس میں قیام بھی ہے رکوع وسجود بھی ہے قعود بھی ہے ہاتھ باندھنا بھی ہے یہ سب تعظیمیں خدا کو معبود سمجھ کر ادا کی جاتی ہیں اسی لئے نماز کو عبادت کہتے ہیں۔

محمد رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم

یہ کلمہ طیبہ کا دوسرا جز ہے اور کلمہ طیبہ جزء لاینفک ہے یعنی جب تک رسالت پر ایمان نہ ہوگا توحید پر ایمان غیر مقبول ہوگا۔

بجز حب محمد کامل ایمان ہو نہیں سکتا

محمد ﷺ اس ذات مبارکہ کا نام نامی اسم گرامی ہے جو حضرت عبداللہ رضی اللہ عنہ کے بیٹے اور حضرت مطلب کے پوتے ہیں ہمارے سید وآقا کا مقدس نام محمد ﷺ ہے۔

یہ نام قدرت الٰہیہ کی طرف سے خود آیت عظیم ہے اس اسم پاک کی ترکیب لفظی اور معنوی پر غور کیجئے۔

## صرف ونحو

یہ حَمَّدَ یُحَمِّدُ سے بنایا گیا ہے۔ ترکیب صرفی بتلا رہی ہے کہ یہ وزن تضاعف کیلئے ہے اور اس کے وزن کا صیغہ اپنی معانی پر یا ضعاف کثیرہ حاوی ہے اب مادہ حمد (ح۔م۔د) پر غور فرمایئے۔ خلاصہ یہ ہے کہ محمد حمد سے مشتق ہے اور اسم مفعول ہے اور اسم مفعول ہے وہ ذات گرامی جسکی حمد نہایت کثرت وتضاعف کے ساتھ بار بار اور متواتر کی جائے یعنی ہر آن پر زبان جس کی نعت پڑھتی جائے گویا کہ جس کا مقدس نام

آج کروڑوں اشخاص کی زبانوں پر جاری اور قلوب میں ساری ہے وہ کون ہے جس کے مقدس نام کی نوبت شابانہ مساجد کے بلند ترین میناروں سے سامعہ نواز ہے۔ وہ کون ہے جو اپنے افعال اور اپنی تعلیم میں محمود ہے وہ کون ہے؟ جس کی رفعت فرش سے عرش تک ملی ہوئی ہے؟ وہ کون ہے جس کی تعظیم کی وسعت بحر و بر پر چھائی ہوئی ہے؟ بیشک وہ محمد ﷺ ہیں اسم بھی محمد ہے اور مسمیٰ بھی محمد ہے انہیں کے مقام شفاعت کا نام مقام محمود ہے اور انہی کی امت حمادون کے لقب سے روشناس ہے اسی کی لائی ہوئی کتاب کا الحمدللہ رب العالمین سے افتتاح ہوتا ہے۔

## رسالت

کے معنی ہیں خدا کے احکام اور پیغام اس کے بندوں تک پہنچانا محمد رسول ﷺ کے معنی ہوئے محمد ﷺ خدا کے پیغام بندوں تک پہنچانے والے۔

نکتہ: کلمہ طیبہ کا پہلا جز تو اعلان مصطفےٰ علیہ التحیۃ والثناء ہے اور کلمہ کا دوسرا جز اعلان کبریا ہے گویا کہ اے محبوب! تم میری توحید کا پرچم لہراؤ اور میں تمہاری رسالت کا ڈنکا بجاتا ہوں گویا کہ۔

جناب محمد برائے الٰہی

جناب الٰہی برائے محمد

ظاہر کہ کسی انسان کو ہم اپنی طرف سے نہ رسول و نبی کہہ سکتے ہیں اور نہ مان سکتے ہیں جب تک کہ وہ نبی اپنی زبان سے اپنا نبی و رسول ہونا ظاہر نہ فرمائے اور یہ بھی ظاہر ہے کہ کسی کی بات قابل تسلیم نہیں ہو سکتی جب تک کہنے والے کی صداقت نہ معلوم ہو۔

marfat.com

اسی لئے خدا تعالیٰ نے ہر اس ذات کو جسکو نبی ورسول بنانا چاہا بچپن سے ایسی پاک اور ستھری زندگی عطا فرمائی کہ اسکی کوئی ساعت ایسی نہیں گزری جو صداقت و حقانیت، امانت و عدالت، مروت وتقویٰ اور اخلاق حسنہ خدا ترسی و بے نفسی کے خلاف ہو اسی واسطے انبیاء ورسل کو اس وقت نبی ورسول بنا کر بندوں کے سامنے پیش کیا جب زندگی کا وہ حصہ جو زمانہ شرور وفتن ہوتا ہے صداقت وحقانیت تقویٰ وصلاح وغیرہ گزر گیا ہوتا کہ قوم اس دور کا پورے طور سے مطالعہ کرے اور دعویٰ نبوت کے وقت اس فیصلہ میں اس کو کوئی الجھن نہ ہو کہ جس کی زندگی دعویٰ نبوت سے پہلے اس قدر پاک اور بے گناہ رہی ہو وہ اب دعویٰ نبوت میں غلط بیانی اور کذب کلام سے کام نہیں لے سکتا معلوم ہوا کہ دعویٰ نبوت کی صداقت وحقانیت کی سب سے بڑی دلیل اس نبی کی پاک اور بے گناہ زندگی ہے حضرت آدم علیہ السلام اور ان کے بعد سے حضور نبی کریم ﷺ تک تمام انبیاء ورسل کی زندگی ایسی ہی پاک اور ستھری گذری۔

marfat.com

# دوسرا رکن: نماز

نماز اسلام کے بنیادی ارکان میں سے ایک اہم رکن ہے اسلامی نظام العبادات میں اسکی حیثیت واہمیت کا اندازہ اس امر سے بخوبی لگایا جاسکتا ہے کہ قرآن کریم میں کم وبیش سات سو مقامات پر المیتِ صلوٰۃ کا ذکر ہوا ہے جس میں سے اسی (۸۰) مقامات پر صریح حکم وارد ہوا ہے۔

اسلام کے ارکان خمسہ میں شہادت توحید ورسالت کے بعد جس فریضے کی بجا آوری کا حکم قرآن وسنت میں بہ نص قطعی تاکید کے ساتھ آیا ہے وہ نماز ہی ہے۔

## کفر وایمان کے درمیان نماز ہی حدِ فاصل ہے

نماز وہ امتیازی عمل ہے جو ایک مومن کو کافر سے ممتاز کرتا ہے قرآن وسنت کی تعلیمات بصراحت اس عمل پر دلالت کرتی ہے کہ فریضہ نماز کی بجا آوری دین کی تعمیر اور اسکا ترک کردینا دین کی بربادی اور انہدام کا موجب ہے حضور ﷺ کے متعدد ارشادات سے یہ بات ثابت ومتحقق ہے کہ کفر وایمان کے مابین نماز ہی حد فاصل کا درجہ رکھتی ہے۔

## نماز کا لغوی مفہوم

لفظ۔ صلوٰۃ، عربی لغت میں کئی معنوں میں استعمال ہوتا ہے لیکن محاورہ عرب کی رو سے وہ معنی جو اصطلاح سے قریب تر ہے ذکر وانقیاد اور دعا وعبادت کا ہے۔

یہ بات ذہن نشین رہے کہ توحید ورسالت کی شہادت اور اسکی عملی تصدیق کا پہلا قدم نماز ہی ہے توحید ورسالت کی شہادت کا اقرار زبانی شہادت فراہم کرنے سے ہوتا

marfat.com

ہے جبکہ اسکی عملی تصدیق وتوثیق نماز کے ذریعے ہی متحقق ہوتی ہے اسطرح عمل نماز انسان کو ایمان کے اعلیٰ مدارج کی رفعتوں سے ہمکنار کرتا ہے حضور حتمی مرتبت ﷺ نے نماز کی اسی اہمیت کو بیان کرتے ہوئے ارشاد فرمایا۔

لا ایمان لِمَنْ لاصلوٰۃ له ولا صلاۃ لمن لا وضوء له

(مسند الامام الربیع، ۱:۵۴ رقم:۹۱)

جس شخص کی نماز نہیں اسکا ایمان نہیں اور اسی طرح جس شخص کا وضو نہیں اسکی نماز بھی نہیں۔

## آداب نماز

قَدْ اَفْلَحَ مَنْ تَزَکّٰی ۝ وَذَکَرَ اسْمَ رَبِّهٖ فَصَلّٰی ۝ (الاعلیٰ ۸۷:۱۴)

ترجمہ:۔وہ کامیاب ہوگیا جس نے اپنے نفس کو پاک وصاف کرلیا اور اپنے رب کا ذکر کیا اور نماز پڑھی۔

اس آیت مبارکہ مفہوم اِس امر پر دلالت کررہا ہے کہ وہ نماز جو انسان کو دنیوی و آخروی کامیابی و کامرانی سے ہمکنار کرنے کا باعث بنتی ہے اسکے لئے نفس کو تمام آلائشوں اور ہر قسم کے میل کچیل سے پاک وصاف کرلینا بنیادی شرط ہے۔

مذموم نفسانی خواہشات اور اخلاقی رزائل سے رہائی ہی انسان کو فلاح وکامیابی کی راہ پر گامزن کرسکتی ہے اور یہی نماز کے روحانی معراج کی طرف پہلا قدم ہے۔

## پاکیزگی، طہارت

نماز کا سب سے پہلا ادب پاکیزگی وطہارت ہے جو اس بات کا متقاضی ہے کہ حالت نماز میں داخل ہونے سے پہلے جسم جگہ اور لباس اچھی طرح سے پاک وصاف ہوں کیونکہ اسکے بغیر نماز کی ادائیگی کے شرعی تقاضے پورے نہیں کیے جاسکتے۔

marfat.com

# بیت الخلاء جانے کے آداب

(۱) جب تو قضائے حاجت کے لیے بیت الخلاء جانے کا ارادہ کرے تو پہلے بایاں پاؤں اندر رکھے۔

(۲) اور نکلتے وقت دایاں پاؤں باہر رکھے۔

(۳) اور اپنے ساتھ کوئی ایسی چیز نہ لے جا جس پر اللہ تعالیٰ یا رسول اللہ ﷺ کا نام ہو۔

(۴) ننگے سر اور ننگے پاؤں بیت الخلاء میں نہ جا۔

(۵) اور بیت الخلاء میں داخل ہونے سے پہلے یہ پڑھ۔

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِکَ مِنَ الْخُبُثِ وَالْخَبَائِثِ

(۶) اور باہر نکلتے وقت یہ پڑھ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الَّذِیْ اَذْھَبَ عَنِّی الْاَذٰی وَعَافَانِی

(۷) نیز مسنون ہے کہ قضائے حاجت سے پہلے ڈھیلوں کا شمار کرے (یعنی حسب ضرورت تین یا پانچ یا سات عدد طاق ہونا چاہیے)

(۸) اور قضائے حاجت کی جگہ پانی سے استنجا نہ کرتا کہ چھینٹے پڑنے سے محفوظ رہے لیکن اگر۔ لیٹرین۔ واش روم ٹائلٹ وغیرہ میں قضائے حاجت کی جائے تو پانی سے استنجا کر سکتے ہیں کہ چھینٹے پڑنے کا اندیشہ نہیں ہوتا۔

(۹) اور خوب کھانس کر تین مرتبہ پیشاب سے استبرا کر کہ کھانسنے سے پیشاب کی نالی میں کوئی قطرہ رُکا ہو تو خارج ہو جائے۔

(۱۰) اور بایاں ہاتھ ڈھک کے نیچے پھیر لے

(۱۱) اور اگر تو جنگل میں ہو تو لوگوں کی آنکھوں سے دور چلا جا اور اگر پھر بھی ستر کی

marfat.com

جگہ نہ ملے تو پردہ کر لے اور اپنی شرمگاہ کو بیٹھنے کی جگہ میں بیٹھنے سے پہلے نہ کھول۔

(۱۲) پاخانہ پیشاب کرتے وقت کعبہ سورج یا چاند کی طرف منہ کر کے نہ بیٹھا جائے۔

(۱۳) اور جہاں لوگ بیٹھا کرتے ہوں سایہ دار درخت کے نیچے پیشاب نہ کرکہ اس سے لوگوں کو ایذا پہنچے گی۔

(۱۴) ٹھہرے ہوئے پانی میں پھل دار درخت کے نیچے اور کسی جانور کے بل میں پیشاب نہ کر سخت زمین پر اور ہوا کے رخ پر پیشاب نہ کرنا کہ چھینٹیں نہ پڑیں۔

کہ حضور نبی کریم ﷺ کا ارشاد ہے۔

اِنَّ عَامَّةَ عَذَابَ الْقَبْرِ مِنْهُ

ترجمہ:۔ یعنی قبر کا عذاب اسی وجہ سے ہوتا ہے۔

(۱۵) اور بائیں پاؤں پر بوجھ ڈال کر بیٹھ اور کھڑا ہو کر پیشاب نہ کر بلا عذر کھڑے ہو کر پیشاب کرنا منع ہے ڈھیلوں اور پانی دونوں سے استنجاء کرنا چاہیے۔ پہلے ڈھیلوں سے استنجاء کر کے پھر پانی سے اچھی طرح دھو کر صاف کرنا چاہیے اور اگر دونوں میں سے ایک پر اکتفا کرنا چاہیے تو پانی سے استنجا افضل ہے۔

(۱۶) استنجا بائیں ہاتھ سے کرنا چاہیے استنجا سے فارغ ہو کر یہ دعا پڑھنی چاہیے۔

اَللّٰهُمَّ طَهِّرْ قَلْبِیْ مِنَ النِّفَاقِ وَحَصِّنْ فَرْجِیْ مِنَ الْفَوَاحِشِ

ترجمہ:۔ یا اللہ میرے دل کو نفاق سے پاک کر دے اور میرے شرمگاہ کو بُرے کاموں سے بچا۔

marfat.com

(۱۷)استنجا کرنے کے بعد ہاتھوں کو زمین یا دیوار سے مل کر پانی سے دھونا چاہیں یہ اس صورت میں جب کہ کچی زمین یا کچی دیوار ہو اور پاک صابن وغیرہ میسر نہ ہو۔

## حدیث مبارکہ

عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ (رضی اللہ عنہ) قال قال رسول اللہ ﷺ مَنِ اسْتَجْمَرَ فَلْیُوْتِرْ مَنْ فَعَلَ فَقَدْ اَحْسَنَ وَمَنْ لَّا فَلَا حَرَجَ (ابوداؤد ص:۶۔ج:۱)

ترجمہ:۔ حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ کہتے ہیں کہ آنحضرت ﷺ نے فرمایا کہ جو شخص استنجاء کرتا ہے تو اسکو چاہیے کہ طاق مرتبہ کرے جس نے ایسا کیا تو اُس نے بہت اچھا کیا تو جس نے ایسا نہ کیا تو اسمیں بھی کوئی حرج نہیں۔

عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رضی اللہ عنہ اَنَّ النَّبِیَّ ﷺ قَالَ اِذَا اسْتَیْقَظَ اَحَدُکُمْ مِنْ نَوْمِهٖ فَلَا یَغْمِسْ یَدَهٗ فِی الْاِنَاءِ حَتّٰی یَغْسِلَهَا ثَلَاثًا (مسلم ص ۱۳۶۔ج:۱۔ بخاری ص:۲۸۔ج:۱)

ترجمہ:۔ حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ سے روایت ہے آنحضرت ﷺ نے فرمایا کہ جب تم میں سے کوئی شخص نیند سے بیدار ہو تو وہ اپنا ہاتھ پانی کے برتن میں نہ ڈالے جب تک کہ وہ اس کو پہلے تین بار نہ دھو لے۔

ترجمہ:۔ حضرت ابو ایوب انصاری رضی اللہ عنہ سے روایت ہے آنحضرت ﷺ نے فرمایا کہ جب تم قضائے حاجت کے لئے جاؤ تو قبلہ کی طرف نہ رخ کرو اور نہ پشت پھیرو پیشاب کے لئے اور نہ پاخانہ پھیرنے کے لئے۔ (مسلم ص:۱۳۰)

marfat.com

# وضو کے احکام

## نماز کے لئے وضو

یٰاَیُّھَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا قُمْتُمْ اِلَی الصَّلٰوۃِ فَاغْسِلُوْا وُجُوْھَکُمْ وَاَیْدِیَکُمْ اِلَی الْمَرَافِقِ وَامْسَحُوْا بِرُءُوْسِکُمْ وَاَرْجُلَکُمْ اِلَی الْکَعْبَیْنِ۔ (سورۃ مائدہ۔٦)

ترجمہ:۔اے ایمان والو جب تم نماز کا ارادہ کرو تو دھوؤ اپنے چہروں کو اور دونوں ہاتھوں کو کہنیوں تک اور اپنے سروں کا مسح کرو اور دھوؤ اپنے پیروں کو ٹخنوں تک

اس آیت میں فرائض وضو کو بیان کیا گیا ہے اور بتایا گیا ہے کہ جب تم نماز پڑھنے کا ارادہ کرو تو فلاں فلاں عضو کو دھوڈالو فلاں کا مسح کرلو یعنی وضو کرلیا کرو اور حدیث شریف میں آیا ہے کہ

عن جابر رضی اللہ عنہ قال قال رسول اللہ ﷺ مفتاح الجنۃ الصلوٰۃ ومفتاح الصلوٰۃ الطھور رواہ احمد (مشکوٰۃ:۱۔ص:۳۹)

ترجمہ:۔حضرت جابر رضی اللہ عنہ سے مروی ہے کہ رسول اللہ ﷺ نے ارشاد فرمایا کہ جنت کی کنجی نماز ہے اور نماز کی کنجی وضو ہے۔

اور دوسری روایت میں ہے۔

لاتقبل الصلوٰۃ بغیر طھور (مسلم ج:۱۔ص:۱۱۹۔عن ابن عمر)

ترجمہ:۔کوئی نماز بغیر وضو کے قبول نہیں کی جاتی۔

اور ایک اور روایت میں ہے۔

marfat.com

لاتقبل صلوٰۃ من احدث حتی یتوضأ (بخاری ج:۱۔ص ۳۵ عن ابی ھریرہ)

ترجمہ:۔جسکا وضوٹوٹ گیا اسکی نماز قبول نہیں یہاں تک کہ وضو کرے۔

حضرت انس کی روایت ہے۔

کان رسول اللہ ﷺ یتوضاء لکل صلوٰۃ و کان احدنا یکفیہ الوضو مالم یحدث رواہ الدارمی (مشکوٰۃ۔ج:۱۔ص:۴۷)

ترجمہ:۔رسول اللہ ﷺ ہر نماز کے لئے وضو کرتے تھے اور ہمارے لئے ایک وضو اس وقت تک کافی ہے کہ جب تک حدث نہ ہو (یعنی وضو توڑنے والی کوئی چیز نہ پائی جائے)

## اچھی طرح وضو کرنا

وضو بھی اچھی طرح کرنا چاہیے فرائض و سنن اور مستحبات کی رعایت کے ساتھ تا کہ وہ اجر و ثواب ملے جسکا احادیث کریمہ میں وعدہ ہے اور اس عذاب سے بچیں جو اچھی طرح وضو نہ کرنے کے نتیجے میں ہوگا۔

عن عبداللہ بن عمر رضی اللہ عنھما وقال رجعنا مع رسول اللہ ﷺ من المکۃ الی المدینۃ حتی اذا کنا بماء بالطریق تعجل قوم عند العصر فتوضا واوھم عجال فانتھینا الیھم واعقابھم تلوح لم یمسھا الماء فقال رسول اللہ ﷺ ویل اللاعقاب من النار احسنوا الوضوء (مسلم ج:۱۔ص:۱۴۵)

ترجمہ:۔عبداللہ بن عمر رضی اللہ عنہ سے مروی ہے کہ ہم رسول اللہ ﷺ کے ساتھ مکہ سے مدینہ کی طرف لوٹے یہاں تک کہ جب راستے میں پانی پر سے گزر ہوا تو کچھ لوگوں نے جلدی کی عصر کے وقت پس انہوں نے وضو کیا اور وہ جلد باز لوگ تھے جب ہم وہاں پہنچے تو دیکھا کہ انکی ایڑیا خشک رہ گئی ہیں رسول اللہ ﷺ نے ارشاد فرمایا

marfat.com

ہلاکت ہو ایڑیوں کے لئے جہنم سے اچھی طرح وضو کیا کرو۔

یہ تو اچھی طرح وضو نہ کرنے کا عذاب تھا لیکن جو لوگ وضو قاعدہ کے مطابق کرتے ہیں اور جلد بازی میں کہیں تر کہیں خشک نہیں چھوڑتے فرائض سنن اور مستحبات پر بھی عمل کرتے ہیں انکا بیان احادیث کریمہ میں یوں بیان کیا گیا ہے۔

من توضا فاحسن الوضوء خَرَجت خطایا ہ من جسدہ حتی تخرج من تحت اظفارہ (مسلم ص:۱۴۵۔ج:۱ عن عثمان)

ترجمہ:۔ جس نے وضو کیا پس اُس نے اچھی طرح وضو کیا اسکی خطائیں اسکے بدن سے نکل جاتی ہیں یہاں تک کہ اسکے ناخن کے نیچے سے بھی۔

## وضو کے فرائض

جیسا کے اوپر بتایا گیا ہے آیت کریمہ۔ يَاأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا قُمْتُمْ إِلَى الصَّلَاةِ ۔ میں فرائض وضو کا تذکرہ ہے اس میں ارکان وضو میں سے درج ذیل صرف چار چیزوں کا تذکرہ ہے۔

پہلا:۔ چہرے کا دھونا، لمبائی میں اسکی حد پیشانی کی ابتدائے سطح سے لے کر ٹھوڑی کے نیچے تک ہے اور چوڑائی میں اسکی حد وہ جگہ ہے جو دونوں کانوں کی لو کے درمیان ہے۔

**دوسرا**:۔ ہاتھوں کو کہنیوں سمیت دھونا۔

**تیسرا**:۔ سر کے چوتھے حصے کا مسح کرنا۔

**چوتھا**:۔ پاؤں کو ٹخنوں سمیت دھونا۔

اس وضو کا سبب یہ ہے جو چیز کسی کام کا باعث بنتی ہے وہ اسکا سبب کہلاتا ہے مثلاً

marfat.com

بیمار کی بیماری اسکی تیمارداری کا باعث ہے لہٰذا یہی اسکا سبب ہے وضو کا باعث بھی نماز پڑھنا یا دوسرے امور ہے جو اس کے بغیر جائز نہیں۔ لہٰذا وہ وضو کا سبب پس جو کام اسکے بغیر جائز نہیں اسکا کرنا جائز ہو جائے یہ اسکا دینوی حکم ہے اور اسکا اخروی حکم آخرت میں ثواب کا حصول ہے اسکے واجب ہونے کی شرط (۱) سمجھ کا پایا جانا (۲) بالغ ہونا (۳) مسلمان ہونا پاگل بچے اور غیر مسلم پر چونکہ نماز فرض نہیں اس لئے ان پر وضو بھی فرض نہیں۔

(۴) کافی پانی کے استعمال پر قادر ہونا

(۵) حدث کا پایا جانا۔ حدث کی دو صورتیں ہیں۔

(۱) جنبی ہونا (۲) بے وضو ہونا پہلے کو حدث اکبر اور دوسرے کو حدث اصغر کہتے۔ حدث اکبر کی صورت میں غسل فرض ہے اور حدث اصغر کی صورت میں وضو فرض ہوگا اگر حدث نہ ہو تو وضو فرض نہ ہوگا البتہ محض ثواب حاصل کرنے کی نیت سے کیا جا سکتا ہے۔

(۶) حیض اور (۷) نفاس کا نہ ہونا (۸) وقت کا تنگ ہونا ہے حیض وہ خون ہے جو تندرست عورت کو ہر ماہ کم از کم تین دن اور زیادہ سے زیادہ دس دن آتا ہے اسے ماہواری بھی کہتے ہیں نفاس کا خون بچے کی پیدائش کے بعد آتا ہے چونکہ حیض نفاس کی حالت میں طہارت حاصل نہیں ہو سکتی لہٰذا انکی موجودگی میں وضو واجب نہ ہوگا۔

وضو کے صحیح ہونے کی تین شرائط ہیں۔

(۱) اعضاء وضو کا پانی پر پہنچ جانا۔ دھونے سے مراد یہ ہے کہ پانی اعضاء پر اسطرح گزارہ جائے کہ قطرے نیچے گریں محض تر ہاتھ پھیرنا کفایت نہیں کرتا۔

(۲) جو چیز وضو کے خلاف ہے مثلاً حیض نفاس اور حدث وغیرہ کا ختم ہو جانا۔ یعنی

marfat.com

جب وضو کر رہا ہو اس وقت پیشاب کے قطرات نہ آ رہے ہوں یا ہوا خارج نہ ہو رہی ہو البتہ معذور کے لئے جائز ہے۔

(۳) اور جو چیز جسم تک پانی کے پہنچنے میں رکاوٹ بنتی ہے اسکا دور کرنا مثلاً موم اور چربی اور پانی کا جسم تک پہنچنا ضروری ہے جس چیز پر چربی یا موم لگی ہو تو پانی ان چیزوں کے اوپر سے گزر جاتا ہے اور جسم تک نہیں پہنچتا لہٰذا پہلے چربی وغیرہ کو دور کیا جائے اسطرح عورت ناخنوں پر ناخن پالش لگاتی ہے اسکی وجہ سے بھی پانی نہیں پہنچتا اسطرح بے وضو نماز پڑھی جاتی ہے جو ادا نہیں ہوتی مسلمان بہنوں کو اس بات کا خیال رکھنا چاہیے البتہ مہندی لگی ہو تو کوئی حرج نہیں۔

## فرائضِ وضو کی تکمیل

جن اقوال پر فتویٰ دیا جاتا ہے ان میں سب سے زیادہ صحیح قول کے مطابق گھنی داڑھی کے ظاہر کو دھونا واجب ہے گھنی داڑھی جسکے نیچے چہرے کا چمڑہ نظر نہیں آتا چہرے کے قائم مقام قرار پاتی ہے لہٰذا اسکا دھونا چہرے کا دھونا ہی قرار پائے گا اور پتلی داڑھی کی جلد تک پانی پہنچانا ضروری ہے پتلی داڑھی کے نیچے چہرے کی جلد نظر آتی ہے اور اس صورت میں چہرے کا دھونا بھی مشکل نہیں لہٰذا براہ راست چہرے کا دھونا فرض ہوگا اور بالوں تک پانی پہچانا ضروری نہیں جو چہرے کے دائرے سے لٹکے ہوئے ہوں چونکہ چہرے سے لٹکے ہوئے بال نہ اصل چہرہ ہے اور نہ اسکے قائم مقام۔ لہٰذا انکا دھونا فرض نہیں ہے اور ہونٹوں کے ملنے کے وقت جو جگہ چھپ جاتی ہے اس تک پانی پہچانا بھی ضروری نہیں عام حالت میں ہونٹوں کے ملنے سے جو حصہ باہر رہتا ہے وہ وجہ (چہرہ) کہلائے گا اور اسکا دھونا ضروری ہوگا لیکن جو حصہ

marfat.com

چھپ جاتا ہے وہ خم یعنی منہ کا حصہ ہے اور منہ کا دھونا فرض نہیں لہٰذا ہونٹوں کے اس حصے کو دھونا بھی فرض نہ ہوگا۔ اگر انگلیاں مل جائیں یا ناخن لمبے ہو کر پوروں کو ڈھانپ لیں یا ان میں ایسی چیز ہے جو پانی کے پہنچنے سے مانع ہے مثلاً گوندھا ہوا آٹا تو اسکے نیچے کا حصہ دھونا واجب ہے کیونکہ انگلیوں کے درمیان کا حصہ خشک رہنے کا خدشہ ہے ناخن لمبے ہوں تو انکے نیچے پانی نہ پہنچنے کی وجہ سے جگہ خشک رہے گی اسطرح گوندھا ہوا آٹا ناخنوں کے نیچے ہو تو پانی نہیں پہنچ سکتا لہٰذا اِن تمام صورتوں میں جب تک احتیاط کے ساتھ جسم تک پانی نہ پہنچایا جائے وضو نہ ہوگا۔ (میل کچیل مچھر وغیرہ کی بیٹ پانی کے پہنچنے کو نہیں روکتی) آجکل ناخن بڑھانا فیشن بن چکا ہے بالخصوص عورتوں میں یہ بات عام ہو چکی ہے حالانکہ اسلام نے ناخن تراشنے کا حکم دیا ہے۔

حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ سے مروی ہے کہ حضور نبی اکرم ﷺ نے فرمایا:۔

پانچ باتیں فطرت سے ہیں زیر ناف بال صاف کرنا ختنہ کرنا۔ مونچھیں کٹوانا۔ بغلوں کے بال صاف کرنا اور ناخن ترشوانا۔

(جامع ترمذی۔ ج:۲۔ باب ماجہ فی تقلیم الاظفار۔ ص:۱۱۸)

لہٰذا ناخن بڑھانا اور نہ ترشوانا فطرت انسانی کے بھی خلاف ہے اسلامی تعلیمات کے بھی منافی ہے اس سے کھانا بھی مکروہ ہوتا ہے اور وضو نہ ہونے کی وجہ سے نماز بھی خراب ہوتی ہے اسلیے مسلمان بہنوں کو اس بُری رسم سے بچنا چاہیے میل کچیل انسان کے جسم سے پیدا ہوتی ہے لہٰذا جسم کا حصہ ہونے کی وجہ سے اسکے نیچے پانی بہانا ضروری نہ ہوگا اور مچھر وغیرہ کی بیٹ ایسی چیز ہے جسکے نیچے پانی جسم تک پہنچ سکتا تنگ انگوٹھی کو

marfat.com

حرکت دینا واجب ہے اگر پاؤں کے زخموں کو دھونا تکلیف دیتا ہو تو اس دوائی پر سے پانی گزارنا جائز ہے جو زخم میں لگائی ہے۔ چونکہ اسلام کسی انسان کو اسکی طاقت سے زیادہ تکلیف نہیں دیتا لہٰذا ضرورت کے پیش نظر زخمی پاؤں کی دوائی کے اوپر سے پانی بہالینا کافی ہوگا سر منڈانے کے بعد بالوں کی جگہ دوبارہ مسح نہ کیا جائے اور نہ اسے دھویا جائے ناخن اور مونچھوں کو کاٹنے کے بعد بھی دوبارہ دھونے کی ضرورت نہیں چونکہ وضو کرنے سے فرض ادا ہو گیا اب بال۔ مونچھیں یا ناخن کاٹنے سے حدث واپس نہیں لوٹتا لہٰذا بال کٹوانے یا ناخن ترشوانے کے بعد دوبارہ مسح کرنے یا دھونے کی ضرورت نہ ہوگی۔ البتہ ایسا کرنا اچھا ہے۔

## وضو کی سنتیں:۔ وضو میں اٹھارہ (۱۸) چیزیں سنت ہیں۔

سنت کا لغوی معنی راستہ ہے اور اصطلاح شرع میں رسول اکرم ﷺ کا فعل مبارک سنت کہلاتا ہے اگر آپ نے کوئی کام ہمیشہ کیا اور کبھی کبھار چھوڑا تو سنت موکدہ ہے اور جسے ہمیشہ نہیں کیا وہ سنت غیر موکدہ ہے اسے مستحب مندوب اور ادب بھی کہا جاتا ہے۔ (طحطاوی علی المراقی)

(۱) دونوں ہاتھوں کو کلائیوں تک دھونا چونکہ دونوں ہاتھ وضو کرنے کے لئے بطور آلہ استعمال ہوتے ہیں اسلیے پہلے انہیں دھولیا جائے تا کہ باقی اعضاء پاک ہاتھوں کے ساتھ دھوئے جائیں۔ بالخصوص جب نیند سے بیدار ہو کیونکہ نبی اکرم ﷺ نے فرمایا جب تم میں سے نیند سے کوئی بیدار ہو تو ہاتھوں کو دھونے سے پہلے برتن میں نہ ڈالے اگر برتن ایسا ہے جسمیں ہاتھ ڈال کر پانی نکالنا پڑتا ہے تو کسی چھوٹے برتن سے پانی لے کر ہاتھ دھوئے اور اگر چھوٹا برتن نہ ہو اور برتن کو ٹیڑھا بھی نہ کیا جا سکے تو بائیں ہاتھ

marfat.com

کی انگلیوں کو ملا کر پانی لے اور دائیں ہاتھ کو دھو کر برتن میں ڈالے۔

(۲) ابتدا میں بسم اللہ پڑھنا۔

(۳) شروع میں مسواک کرنا۔ احناف کے نزدیک مسواک وضو کی سنت ہے نماز کی نہیں یعنی جب وضو کرتے تو مسواک کرے ایسے وضو کے ساتھ جو نماز پڑھی جائے گی اسکا ثواب ستر گناہ زیادہ ملے گا اگر ایک ہی وضو سے پانچ نمازیں پڑھی جائیں تو ہر نماز کا ثواب ستر گناہ زیادہ ہوگا اگر مسواک نہ ہو تو انگلی سے دانتوں کو صاف کیا جائے عورتیں مسواک کی جگہ گوند (شکوا) استعمال کریں۔

کیونکہ انکے مسوڑھے نازک ہوتے ہیں مسواک کو برداشت نہیں کر سکتے۔

مسواک کرنے کا طریقہ اور دیگر ضروری باتوں کے لئے بہار شریعت حصہ اوّل یا رکن دین کا پہلا حصہ دیکھے۔

(۴) تین بار کلی کرنا اگر ایک چلو (پانی) کے ساتھ ہو۔

(۵) تین چلوؤں کے ساتھ ناک میں پانی چڑھانا۔

(۶) غیر روزے دار کا اچھی طرح کلی کرنا اور ناک میں پانی چڑھانا۔

(۷) ایک چلو کے ساتھ نیچے کی طرف سے گھنی داڑھی کا خلال کرنا۔

(۸) انگلیوں کا خلال کرنا۔

(۹) (اعضاء کو) تین تین بار دھونا۔

(۱۰) ایک بار سارے سر کا مسح کرنا۔

(۱۱) کانوں کا مسح کرنا اگرچہ سر کے پانی کے ساتھ ہو۔

(۱۲) (اعضاء کو) ملنا

marfat.com

(۱۳) پے در پے ہونا۔ پے در پے کا مطلب یہ ہے کہ پہلے عضو کے خشک ہونے سے پہلے پہلے دوسرے عضو کو دھولے۔

(۱۴) نیت کرنا۔

(۱۵) قرآن پاک کی تصریح کے مطابق ترتیب سے وضو کرنا۔

قرآن پاک کی تصریح کے مطابق ترتیب یہ ہے کہ چار فرائض میں سے پہلے چہرہ دھوئے پھر بازو اسکے بعد سر کا مسح کرے اور پھر پاؤں دھوئے۔

(۱۶) دائیں طرف سے اور انگلیوں کے سروں سے شروع کرنا۔

(۱۷) سر کے اگلے حصے سے شروع کرنا۔

(۱۸) گردن کا مسح کرنا نہ گلے کا اور آخری چار باتیں مستحب ہیں۔

## مستحباتِ وضو

وضو میں چودہ چیزیں مستحب ہیں، مستحب کا حکم یہ ہے کہ کریں گے تو ثواب ملے اور نہ کریں تو عذاب نہ ہوگا۔

(۱) بلند جگہ پر بیٹھنا۔

(۲) قبلہ رخ ہونا۔

(۳) دوسرے آدمی سے مدد نہ لینا۔

(۴) دنیوی گفتگو نہ کرنا۔

(۵) دل کی نیت اور زبان کے فعل کو جمع کرنا۔ دل میں بھی وضو کا ارادہ ہو اور زبان سے بھی کہے کہ میں وضو کرتا ہوں تا کہ میرے لئے نماز پڑھنا جائز ہو جائے۔

(۶) سنت سے ثابت دعا مانگنا، سنت سے ثابت دعائیں یہ ہیں۔

marfat.com

# وضو کرتے وقت کی دعائیں

کلی کرتے وقت کی دعا۔ بِاسْمِ اللهِ اَللّٰهُمَّ اَعِنِّیْ عَلٰی تِلَاوَةِ الْقُرْآنِ وَذِکْرِكَ وَشُکْرِكَ وَحُسْنِ عِبَادَتِكَ

ترجمہ:۔ اللہ کے نام سے یا اللہ۔ تلاوت قرآن پاک۔ اپنے ذکر شکر اور اچھی طرح عبادت پر میری مدد فرما۔

ناک میں پانی ڈالتے وقت کی دُعا۔

بِاسْمِ اللهِ اَللّٰهُمَّ اَرِحْنِی رَائِحَةَ الْجَنَّةِ وَلَا تُرِحْنِی رَائِحَةَ النَّار

ترجمہ:۔ اللہ کے نام سے یا اللہ مجھے جنت کی خوشبو سنگھا اور جہنم کی بو نہ سنگھا۔

چہرہ دھوتے وقت کی دُعا۔

بِسْمِ اللهِ اَللّٰهُمَّ بَیِّضْ وَجْهِیْ یَوْمَ تَبْیَضُّ وُجُوْهٌ وَتَسْوَدُّ وُجُوْهٌ

ترجمہ:۔ اللہ کے نام سے۔ یا اللہ۔ اس دن میرا چہرہ سفید رکھنا جس دن بعض چہرے سفید ہوں گے اور کچھ چہرے سیاہ۔

دایاں بازو دھوتے وقت کی دُعا۔

اَللّٰهُمَّ اَعْطِنِیْ کِتَابِیْ بِیَمِیْنِیْ وَحَاسِبْنِیْ حِسَابًا یَّسِیْرًا

ترجمہ:۔ یا اللہ میرا نامہ اعمال میرے دائیں ہاتھ میں دینا اور میرا حساب آسان کرنا۔

بایاں بازو دھوتے وقت۔

اَللّٰهُمَّ لَاتُعْطِنِیْ کِتَابِیْ بِشِمَالِیْ وَلَامِنْ وَّرَاءِ ظَهْرِیْ۔

ترجمہ:۔ یا اللہ۔ میرا نامہ اعمال بائیں ہاتھ اور پیٹھ کے پیچھے نہ دینا۔

marfat.com

سر کا مسح کرتے وقت کی دُعا۔

اَللّٰھُمَّ اَظِلَّنِی تَحْتَ ظِلِّ عَرْشِكَ وَیَوْمَ لَاظِلَّ اِلَّاظِلُّ عَرْشِكَ

ترجمہ:۔یا اللہ اُس دن مجھے اپنے عرش کے سامنے رکھنا جس دن تیرے عرش کے سائے کے سوا کوئی سایہ نہ ہوگا۔

کانوں کا مسح کرتے وقت کی دُعا۔

اَللّٰھُمَّ اجْعَلْنِی مِنَ الَّذِیْنَ یَسْتَمِعُوْنَ الْقَوْلَ فَیَتَّبِعُوْنَ اَحْسَنَہٗ

ترجمہ:۔یا اللہ مجھے ان لوگوں میں سے کردے جو تیری بات کو غور سے سنتے ہیں اور انکی اچھی باتوں کی پیروی کرتے ہیں۔

گردن کا مسح کرتے وقت کی دُعا

اَللّٰھُمَّ اَعْتِقْ رَقَبَتِیْ مِنَ النَّارِ

ترجمہ:۔یا اللہ میری گردن کو جہنم کی آگ سے آزاد رکھنا۔

دایاں پاؤں دھوتے وقت کی دُعا؟

اَللّٰھُمَّ ثَبِّتْ قَدَمِیْ عَلَی الصِّرَاطِ یَوْمَ تَزِلُّ الْاَقْدَامُ

ترجمہ:۔یا اللہ اُس دن مجھے پل صراط پر ثابت قدم رکھنا جب (کچھ لوگوں کے) قدم پھسلیں گے۔

بایاں پاؤں دھوتے وقت کی دعا؟

اَللّٰھُمَّ اجْعَلْ ذَنْبِیْ مَغْفُوْرًا وَّسَعْیِیْ مَشْکُوْرًا وَّتِجَارَتِیْ لَنْ تَبُوْرًا۔

ترجمہ:۔یا اللہ میرے گناہ بخش دے میری کوشش قبول فرما اور میری تجارت میں نقصان نہ ہو۔

marfat.com

(۷) ہر عضو کو دھوتے وقت بِسْمِ اللّٰہِ پڑھنا۔

(۸) سب سے چھوٹی انگلی کو کانوں میں ڈالنا۔

(۹) کشادہ انگوٹھی کو حرکت دینا۔

(۱۰) دائیں ہاتھ سے کلی کرنا اور ناک میں پانی ڈالنا۔

(۱۱) ناک بائیں ہاتھ سے جھاڑنا۔

(۱۲) غیر معذور کا وقت کے داخل ہونے سے پہلے وضو کرنا۔

(۱۳) وضو کے بعد کلمہ شہادت پڑھنا۔

(۱۴) وضو کا بچا ہوا پانی کھڑے ہو کر پینا اور عام طور پر کھڑے ہو کر پانی پینا مکروہ ہے لیکن وضو کا بچا ہوا پانی اور آپ زم زم کا پانی نبی اکرم ﷺ نے کھڑے ہو کر نوش فرمایا لہٰذا کھڑے ہو کر پینا۔

سنت ہے اور پانی پیتے وقت یہ دعا مانگنی چاہیے۔

اَللّٰھُمَّ اجْعَلْنِیْ مِنَ التَّوَّابِیْنَ وَاجْعَلْنِیْ مِنَ الْمُتَطَھِّرِیْنَ۔

ترجمہ:۔ یا اللہ! مجھے بہت زیادہ توبہ کرنے والوں اور خوب پاک ہونے والوں میں سے بنا دے۔

## مکروہاتِ وضو

وضو کرنیوالے کے لئے چھ چیزیں مکروہ ہیں۔

(۱) ضرورت سے زیادہ پانی خرچ کرنا۔

(۲) پانی (ضرورت سے) کم استعمال کرنا۔

(۳) پانی چہرے پر (زور زور سے) مارنا۔

(۴) دنیوی گفتگو کرنا۔

marfat.com

(۵) بغیر عذر کے دوسرے سے مدد لینا۔

(۶) تین بار نئے پانی سے (سر کا) مسح کرنا۔

## وضو کی اقسام

وضو کی تین قسمیں ہیں۔

(۱) فرض۔ بے وضو جب نماز پڑھنے کا ارادہ کرے تو اس پر وضو فرض ہے چاہے نفلی نماز ہو، نماز جنازہ کے لئے سجدہ تلاوت کے لئے اور قرآن پاک کو ہاتھ لگانے کے لئے چاہے ایک ہی آیت ہو (وضو کرنا فرض ہے)

(۲) واجب..... کعبۃ اللہ کا طواف کرنے کے لئے وضو واجب ہے۔

(۳) مستحب..... (۱) باوضو سونا (۲) نیند سے بیدار ہونے پر (۳) ہمیشہ باوضو رہنے کیلئے (۴) وضو پر وضو کرنا (۵) غیبت (۶) جھوٹ (۷) چغلی (۸) ہر قسم کے گناہ (۹) برے اشعار کہنے (۱۰) نماز سے باہر قہقہے لگانا (۱۱) میت کو غسل دینے اور (۱۲) اسے اٹھانے کے بعد (۱۳) ہر نماز کے وقت کے لئے (۱۴) غسل جنابت سے پہلے (۱۵) جنبی آدمی کے لئے کھانے پینے سونے اور اجماع کا ارادہ کرتے وقت (۱۶) غصے کے وقت (۱۷) قرآن اور (۱۸) حدیث پڑھنے کے لئے (۱۹) حدیث بیان کرنے کے لئے (۲۰) علم سیکھنے کے لئے (۲۱) اذان دینے کے لئے (۲۲) تکبیر کہنے کے لئے (۲۳) خطبہ دینے کے لئے (۲۴) نبی اکرم ﷺ کی زیارت کے لئے (۲۵) عرفات میں ٹھہرنے کے لئے (۲۶) صفا اور مروہ کے درمیان دوڑ لگانے کے لئے (۲۷) اونٹ کا بھنا ہوا گوشت کھانے کے بعد (۲۸) علما کے اختلاف سے نکلنے کے لئے مثلاً اگر کوئی شخص کسی عورت کو ہاتھ لگائے۔ ان صورتوں میں وضو کرنا مستحب ہے۔

marfat.com

# جن چیزوں سے وضوٹوٹ جاتا ہے

بارہ(12)چیزیں وضوکوتوڑ دیتی ہیں۔

(۱) جو کچھ دوراستوں میں سے نکلے سوائے اگلے راستے سے نکلنے والی ہوا کے صحیح قول کے مطابق (۲) بچے کی پیدائش بھی وضوکوتوڑ دیتی ہے اگر چہ خون نظر نہ آئے۔

(۳) دوراستوں کے علاوہ کسی جگہ بہنے والے نجاست کا نکلنا مثلاً خون اور پیپ

(۴) کھاتے پیتے ہوئے خون یا صفرا کی قے جبکہ منہ بھر کر قے آئے اور وہ (منہ بھرنا) یہ ہے کہ تکلیف کے بغیر اس پر منہ بند نہ کیا جاسکے (اسکو روکا نہ جاسکے یہ زیادہ صحیح قول کے مطابق ہے اگر متفرق قے کا سبب ایک ہو تو اسے جمع کیا جائے (۵) تھوک پر غالب آنے والا یا اس کے برابر خون (۶) نیند جس میں مقعد کو زمین پر قرار حاصل نہ ہو (۷) سونے والے کی سرین کا جاگنے سے پہلے اُٹھ جانا اگر چہ وہ نہ گرے ظاہر مذہب کے مطابق (۸) بیہوشی (۹) جنون (۱۰) نشہ (۱۱) بالغ آدمی کا جاگتے ہوئے رکوع وسجود والی نماز میں زور زور سے ہنسنا اگر چہ اس نے (قہقہ کے ساتھ) نماز سے باہر آنے کا ارادہ کیا ہو۔

(۱۲) منتشر آلہ تناسل کا (عورت یا مرد کی) شرمگاہ کو کسی پردے کے بغیر چھونا۔

# جن چیزوں سے وضو نہیں ٹوٹتا

دس چیزوں سے وضو نہیں ٹوٹتا:۔

(۱) خون (یا پیپ) کا ظاہر ہونا جو اپنی جگہ سے جاری نہیں ہوا۔

(۲) خون جاری ہوئے بغیر (جسم سے) گوشت کا گرنا جیسے عرق سونی جیسے

marfat.com

(فارسی میں) رشتہ کہتے ہیں۔

(۳) زخم، کان ناک سے کیڑے کا نکلنا۔

(۴) آلہ تناسل کو ہاتھ لگانا۔

(۵) عورت کو ہاتھ لگانا۔

(۶) قے جو منہ بھر کر نہ آئے۔

(۷) بلغم کی قے اگرچہ زیادہ ہو۔

(۸) سوئے ہوئے آدمی کا جھک جانا کے زمین سے مقعد کے اٹھ جانے کا (محض) احتمال ہو (یقین نہ ہو)

(۹) ایسے آدمی کی نیند جس کی مقعد زمین سے لگی ہوئی ہو اگرچہ اس نے ایسی چیز سے ٹیک لگا رکھی ہو کہ اگر اسے ہٹایا جائے تو گر پڑے۔ ان دونوں صورتوں میں ظاہر مذہب یہی ہے۔

(۱۰) نمازی کا رکوع و سجود کی حالت میں سو جانا جب کہ یہ دونوں (رکوع سجود) سنت کے مطابق ہوں۔

## معذور کون ہیں؟

ایسا شخص جسکو ہر وقت پیشاب کا قطرہ آتا رہتا ہو یا رخ خارج ہوتی رہتی ہے کہ ایک لمحے کے لئے بھی آرام نہ ہو یا کسی زخم سے ہر وقت خون بہتا رہتا ہے تو وہ شخص معذور ہوگا اسکے لئے ہر وقتی نماز کے لئے وضو ضروری ہوگا۔ (نورالایضاح)

marfat.com

# فضیلت وضو احادیث مبارکہ کی روشنی میں

عَنْ أَبِی هُرَیْرَةَ رضی الله عنه قَالَ: إِنِّی سَمِعْتُ النَّبِیَّ ﷺ یَقُوْلُ: إِنَّ أُمَّتِی یُدْعَوْنَ یَوْمَ الْقِیَامَةِ غُرًّا مُحَجَّلِیْنَ مِنْ آثَارِ الْوُضُوْءِ فَمَنِ اسْتَطَاعَ مِنْکُمْ أَنْ یُطِیْلَ غُرَّتَهٗ فَلْیَفْعَلْ۔ مُتَّفَقٌ عَلَیْهِ۔

''حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ بیان کرتے ہیں کہ میں نے حضور نبی اکرم ﷺ کو فرماتے ہوئے سنا قیامت کے روز میرے اُمتی اعضائے وضو کی چمک کے باعث سفید چہرے اور سفید ٹانگوں والے (پنج کلیان) کہہ کر بلائے جائیں گے۔ جو تم میں سے اپنی چمک کو بڑھانے کی طاقت رکھتا ہے اسے بڑھانی چاہیے''

(أخرجہ البخاری فی الصحیح، کتاب: الوضوء، باب: فضل الوضوء، ۱/۲۵، الرقم)

عن أبی هریرة رضی الله عنه ان رسول الله ﷺ أتی المقبرة فقال: السلام علیکم دار قوم مؤمنین و إنّا ان شاء اللّٰهُ بکُمْ لاحقون وددت أنا قد رأینا اخوانا قالوا: أولسنا اخوانک یا رسول اللّٰهِ؟ قال: أنتم أصحابی، واخواننا الذین لم یأتوا بعد فقالوا: کیف تعرف من لم یأت بعد من أمتک یا رسول الله؟ فقال: أرأیت لو أن رجلاً له خیل غر محجلة بین ظهری خیل دهم بهم ألا یعرف خیله؟ قالوا: بلی یارسول الله قال: فإنهم یأتون غرًّا محجلین من الوضوء وانا فرطهم علی الحوض (رواہ مسلم)

''حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ ﷺ قبرستان (جنت البقیع) تشریف لے گئے اور فرمایا: السلام علیکم اے مؤمنو! ہم بھی ان شاء اللہ تمہارے پاس آنے والے ہیں میری خواہش ہے کہ ہم اپنے (دینی) بھائیوں کو

marfat.com

دیکھیں، صحابہ کرام رضی اللہ عنہ نے عرض کیا: یا رسول اللہ ﷺ! کیا ہم آپ کے (دینی) بھائی نہیں ہیں؟ آپ ﷺ نے فرمایا: تم میرے صحابہ ہو اور ہمارے (دینی) بھائی وہ لوگ ہیں جو ابھی تک پیدا نہیں ہوئے (بعد کے زمانوں میں پیدا ہوں گے) صحابہ کرام رضی اللہ عنہ نے عرض کیا: یا رسول اللہ ﷺ! آپ اپنی امت کے ان لوگوں کو کیسے پہچان لیں گے جو ابھی تک پیدا ہی نہیں ہوئے؟ آپ ﷺ نے فرمایا: یہ بتلاؤ کہ کسی شخص کے ایسے گھوڑے جو سفید چہرے اور سفید ٹانگوں والے (بے کلیان) ہوں، سیاہ گھوڑوں میں مل جائیں تو کیا وہ اپنے گھوڑوں کو ان میں سے شناخت نہیں کر سکے گا، صحابہ نے عرض کیا: کیوں نہیں! یا رسول اللہ ﷺ! آپ ﷺ نے فرمایا: میری اُمت جس وقت میرے حضور آئے گی تو ان کے چہرے اور ہاتھ پاؤں آثار وضو سے سفید اور چمکدار ہوں گے اور میں ان کے استقبال کیلئے پہلے سے حوض پر موجود ہوں گا"۔ اس حدیث کو امام مسلم نے روایت کیا ہے۔

عن أبی أمامة الباهلی رضی الله عنه قال: سمعت رسول الله ﷺ یقول: من أوی إلی فراشه طاهرًا یذکر الله حتی یُدرکه النعاس لم یتقلب ساعة من اللیل سأل الله شیئًا من خیر الدنیا والآخرة الا أعطاه إیاهُ

رواه الترمذی وأبو داود والنسائیُّ وقال أبُوْ عِیْسَی: هٰذَا حَدِیْثٌ حَسَنٌ

"حضرت ابو اُمامہ باہلی رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ حضور نبی اکرم ﷺ نے فرمایا: جو شخص باوضو ہو کر اپنے بستر پر لیٹے اور نیند آنے تک ذکر الٰہی میں مشغول رہے وہ رات کی جس گھڑی میں اللہ تعالیٰ سے دنیا و آخرت کی بھلائی مانگے اللہ تعالیٰ اسے عطا فرمائے گا۔"

marfat.com

عَنْ ثَوْبَانَ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ اِسْتَقِيْمُوْا وَلَنْ تُحْصُوْا وَاعْلَمُوْا اَنَّ خَيْرَ اَعْمَالِكُمُ الصَّلَاةُ وَلَا يُحَافِظُ عَلَى الْوُضُوْءِ اِلَّا مُؤْمِنٌ (رواہ ابن ماجہ)

حضرت ثوبان رضی اللہ عنہ کا بیان ہے کہ حضور نبی اکرم ﷺ نے ارشاد فرمایا: دین پر قائم رہو اگر چہ تم اس کا احاطہ نہیں کر سکتے اور یہ بات جان لو کہ تمہارے تمام اعمال میں سب سے افضل عمل نماز ہے اور مومن کے سوا کوئی وضو کی پابندی نہیں کرتا"۔ اس حدیث کو امام ابن ماجہ نے روایت کیا ہے۔

عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ عَمْرٍ وَكَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ اِسْتَقِيْمُوْا وَلَنْ تُحْصُوْا وَاعْلَمُوْا اَنَّ مِنْ اَفْضَلِ اَعْمَالِكُمُ الصَّلَاةَ وَلَا يُحَافِظُ عَلَى الْوُضُوْءِ اِلَّا مُؤْمِنٌ

حضور ﷺ نے ارشاد فرمایا:۔

دین پر استقامت اختیار کرو اور مجھے معلوم ہے کہ تم اس کا حق نہیں ادا کر سکو گے لیکن سن لو!

تمہارے اعمال میں سب سے افضل صلاۃ ہے اور وضو پر سوائے مومن کے کوئی محافظت و پیشگی نہیں کرتا۔ (سنن ابن ماجہ)

عن علی ن ابن ابی طالب کرم اللہ وجہہ الکریم ان رسول اللہ ﷺ قال: اسباغ الوضوء فی المکارہ واعمال الاقدام الی المساجد وانتظار الصلاۃ بعد الصلاۃ یغسل الخطایا غسلا:۔ (الترغیب والترھیب)

حضرت علی بن ابی طالب کرم اللہ وجہ الکریم سے روایت ہے۔ کہ حضور ﷺ نے ارشاد فرمایا: نفس پر شاق گزرنے والے لمحات میں وضو مکمل کرنا مسجدوں کی طرف پیدل چل کر جانا اور صلاۃ کے بعد دوسری صلاۃ کا انتظار یہ امور گناہوں کو بالکل دھو دیتا ہے۔

marfat.com

انسانی دل پر گناہوں کی سیاہی اور ظلمت اپنا اثر دکھاتی ہے گناہ ایمان والے کے دل سے ایمان کے نور کو آہستہ آہستہ کم کر دیتے ہیں۔

لیکن وہ لمحات جو نفس پر گراں گزریں ان میں خوشدلی سے وضو کرنا گناہوں کی سیاہی اور ظلمت کو دھو دیتا ہے پھر ایسا وقت بھی آتا ہے کہ انسان کا دل نور ایمانی سے مثل آفتاب جگمگاتا ہے اور منبع انوار بن جاتا ہے۔

عَنْ عمرو بن عبسة قال: قال رسول الله ﷺ ان العبد اذا توضاء فغسل یدیه خرت خطایاه من یدیه فاذا غسل وجهه خرت خطایا من وجهه فاذا غسل ذراعیه ومسح براسه خرت خطایا من ذراعیه وراسه فاذا غسل رجلیه خرت خطایا من رجلیه (سنن ابن ماجہ (۴۲۹) ۵۲۱، کتب التربیۃ العربی الریاض)

ترجمہ:۔ حضرت عمر بن عبسہ رضی اللہ عنہ بیان فرماتے ہیں کہ حضور رسول اللہ ﷺ نے ارشاد فرمایا: بندہ جب وضو کرتا ہے پس جب اپنا ہاتھ دھوتا ہے تو اسکے ہاتھوں سے اسکے گناہ نیچے گر جاتے ہیں۔

جب وہ چہرہ دھوتا ہے تو اسکے چہرے سے اسکے گناہ گر جاتے ہیں جب وہ اپنے دونوں بازو دھوتا ہے اور اپنے سر کا مسح کرتا ہے تو اسکے دونوں بازوں اور اسکے سر سے اسکے گناہ گر جاتے ہیں جب وہ اپنے پاؤں دھوتا ہے تو اسکے پاؤں سے اسکے گناہ گر جاتے ہیں۔

اللہ تعالیٰ کی کریمی پر قربان جائیں۔

بندہ عبادت کی نیت سے وضو کرتا ہے۔

بندہ ہاتھوں کے ظاہر تو صاف کرتا ہے اللہ اسکے ہاتھوں کو گناہوں سے بھی پاک کر دیتا ہے بندہ اپنے چہرے کو دھوتا ہے اللہ تعالیٰ اسکے چہرے کو گناہوں کے داغوں

سے بھی پاک کر دیتا ہے بندہ اپنے بازو دھوتا ہے اپنے سر کا مسح کرتا ہے کریم اللہ اسکے بازوؤں سے اور اسکے سر سے گناہوں کا بوجھ گرا دیتا ہے بندہ عبادت کی نیت سے اپنے پاؤں دھو کر اللہ کی رحمت کو اپنی طرف یوں متوجہ کرتا ہے کہ اللہ کی رحمت اسکے پاؤں سے گناہوں کی بیڑیاں اٹھا لیتی ہے۔

## گناہ جھڑنے کی حکایت

حضرت علامہ عبدالوہاب شعرانی قدس سرہ النورانی فرماتے ہیں ایک مرتبہ سیدنا امام اعظم ابوحنیفہ رضی اللہ عنہ جامع مسجد کوفہ کے وضو خانہ میں تشریف لے گئے تو ایک نوجوان کو وضو کرتے ہوئے دیکھا اس سے وضو (میں استعمال شدہ پانی) کے قطرے ٹپک رہے تھے آپ رضی اللہ عنہ نے ارشاد فرمایا: اے بیٹے: ماں باپ کی نافرمانی سے توبہ کر لے اُس نے فوراً عرض کی ''میں نے توبہ کی'' ایک اور شخص کے وضو (میں استعمال شدہ پانی) کے قطرے ٹپکتے دیکھے آپ رحمۃ اللہ علیہ نے اُس شخص سے ارشاد فرمایا اے میرے بھائی تو زنا سے توبہ کر لے اُس نے عرض کی میں نے توبہ کی ایک اور شخص کے وضو کے قطرات ٹپکتے دیکھے تو اسے فرمایا ''شراب نوشی اور گانے باجے سننے سے توبہ کر لے۔ اُس نے عرض کی ''میں نے توبہ کی''۔ سیدنا امام اعظم ابوحنیفہ رضی اللہ عنہ پر کشف کے باعث چونکہ لوگوں کے عیوب ظاہر ہو جاتے تھے۔ لہٰذا آپ نے بارگاہِ خداوندی میں اس کشف کے ختم ہو جانے کی دعا مانگی اللہ نے دعا قبول فرمالی جس سے آپکو وضو کرنے والوں کے گناہ نظر آنا بند ہو گئے۔

**نوٹ:** یہی واقعہ حضرت داتا گنج بخش رحمۃ اللہ علیہ نے کشف المحجوب میں بھی تحریر فرمایا ہے۔

marfat.com

## باوضوسونے کی فضیلت

حدیث پاک میں ہے کہ باوضوسونے والا روزہ رکھ کر عبادت کرنے والے کی طرح ہے۔

## باوضومرنے والا شہید ہے

مدینے کے تاجدار ﷺ نے حضرت سیدنا انس رضی اللہ عنہ سے فرمایا "بیٹا" اگر تم ہمیشہ باوضو رہنے کی استطاعت رکھو تو ایسا ہی کرو کیونکہ ملک الموت جس بندے کی روح حالت وضو میں قبض کرتا ہے اُس کیلئے شہادت لکھ دی جاتی ہے۔

## جنت کے آٹھوں دروازے کھل جاتے ہیں

حدیث پاک میں ہے جس نے اچھی طرح وضو کیا اور پھر آسمان کی طرف نگاہ اُٹھائی اور کلمہ شہادت پڑھا اُس کے لئے جنت کے آٹھوں دروازے کھول دیئے جاتے ہیں۔ جس سے چاہے اندر داخل ہو (از صحیح مسلم، ج:۱۔ص:۱۲۲)

## مسواک کے بارے میں تین احادیث مبارکہ

(۱) جب سرکار مدینہ ﷺ اپنے مبارک گھر میں داخل ہوتے تو سب سے پہلے مسواک کرتے۔ (صحیح مسلم شریف ج:۱۔ص ۱۲۸)

(۲) جب سرکار مدینہ ﷺ نیند سے بیدار ہوتے تو مسواک کرتے۔

(ابوداؤد، ج:۱۔ص ۳۶)

(۳) تم مسواک کو لازم پکڑ لو کہ یہ منہ کو پاک کرنے والی اور رب تعالیٰ کو راضی کرنے والی ہے۔ (مسند امام احمد، ج:۲۔ص:۴۳۸ حدیث نمبر ۵۸۶۹)

marfat.com

# غسل کا بیان

غسل کا لغوی معنی تو ہے انسان کا اپنے بدن پر پانی بہانا اور اسکو ملنا لیکن شرع میں غسل کا معنٰی مخصوص وجہ کی بنا پر پورے جسم پر پاک پانی بہانا ہے۔

قرآن مجید میں اللہ تعالیٰ کا ارشاد ہے۔

وَاِنْ كُنْتُمْ جُنُبًا فَاطَّهَّرُوْا (المائدہ۔۵۔۶)

ترجمہ:۔ اور اگر تمہیں نہانے کی حاجت ہو تو (نہا کر) خوب صاف ستھرے ہو جائیں اس آیت کریمہ میں غسل کی اہمیت کو بخوبی سمجھا جا سکتا ہے۔

## غسل کرنے کا طریقہ

غسل کرنے کا مسنون طریقہ درج ذیل ہے۔

غسل کرنیوالا سب سے پہلے دونوں ہاتھوں کو گٹوں تک دھوئے پھر استنجا کرے اور اگر نجاست الگ جگہ پر لگی ہو تو پہلے اسے صاف کرے پھر وضو کرے اور وضو کے بعد تین مرتبہ پہلے سر پر پھر تین مرتبہ داہنے کندھے پر اور تین مرتبہ بائیں کندھے پر پانی ڈالے اور پھر کم از کم ایک مرتبہ سارے جسم پر پانی بہائے اور ملے اور کسی سے کلام نہ کرے۔

**نوٹ:۔** ایک مرتبہ پورے جسم پر پانی بہانا فرض اور تین مرتبہ سنت ہے۔

## غسل کے فرائض

غسل کے فرائض حسب ذیل ہیں۔

(۱) غرغرہ کرنا اسطرح کہ پانی حلق کی جڑ تک پہنچ جائے لیکن روزے کی حالت میں مبالغہ نہ کیا جائے۔

(۲) ناک کی نرم ہڈی تک پانی پہنچانا۔

marfat.com

(۳) سارے بدن پر پانی بہانا کہ کوئی جگہ خشک نہ رہ جائے اگر بغیر کسی عذر شرعی کے ایک بال بھی خشک رہ گیا تو غسل نہیں ہوگا اگر بال جڑے (گوندھے) ہوں تو انکو کھول کر جڑوں تک پانی پہنچانا ضروری ہے۔

## غسل کی سنتیں

غسل کی سنتیں درج ذیل ہیں۔

(۱) تسمیہ سے آغاز کرنا (اگر کپڑے اتارے ہوں اور ننگا ہو تو دل میں ہی پڑھے زبان سے نہ کہے)

(۲) پانی کی نیت کرے۔

(۳) دونوں ہاتھوں کو پہنچوں تک دھونا۔

(۴) اگر نجاست لگی ہو تو اسکو دور کرنا۔

(۵) شرم گاہ کا دھونا اگرچہ اسمیں نجاست نہ ہو۔

(۶) غسل سے پہلے وضو کرنا جیسے نماز کے لئے وضو کیا جاتا ہے۔

(۷) وضو میں تین مرتبہ ہر عضو کا دھونا۔

(۸) سر کا مسح کرنا لیکن پاؤں کو دھونا موخر کرے گا اگر نیچے گرنے والا پانی جمع ہوتا ہو اور اگر نہیں ہوتا بلکہ بہہ جاتا ہے تو پھر پاؤں کو بھی ساتھ ہی دھو سکتا ہے۔

(۹) پورے بدن پر پانی کا تین مرتبہ بہانا۔

(۱۰) پانی بہانے کا آغاز سر سے کرنا۔

(۱۱) کندھوں کو پہلے دائیں کندھے پر اور پھر بائیں کندھے پر پانی بہانا۔

(۱۲) جسم کو ملنا۔

(۱۳) مسلسل غسل کرنا۔

marfat.com

# جن کاموں سے غسل فرض ہوتا ہے

سات باتوں میں سے ایک کے ساتھ غسل فرض ہوتا ہے۔

1۔ منی کا جسم کے ظاہر کی طرف نکلنا جبکہ اپنے ٹھکانے سے شہوت کے ساتھ جدا ہو۔ منی کا ٹھکانہ مرد کی پیٹھ ہے وہاں سے جدا ہوتے وقت شہوت شرط ہے باہر نکلتے وقت شہوت شرط نہیں احتلام ہو یا سوچ و بچار کرنے اور عورت سے کھیلنے کی صورت میں شہوت پیدا ہوئی اور منی نکل آئی تو غسل فرض ہوگا مرد کی منی سفید اور گاڑھی ہوتی ہے اس کے نکلنے سے عضو مخصوص کی حالت انتشار ختم ہو جاتی ہے جبکہ عورت کی منی زرد رنگ کی اور پتلی ہوتی ہے۔

2۔ آلہ تناسل کے کنارے ختنہ اور اگر کٹا ہوا ہے تو اس کی مقدار زندہ آدمی کے دو راستوں میں سے ایک میں چھپ جانا مرد یا عورت سے غیر فطری عمل ناجائز و حرام ہے جو شخص اس کا مرتکب ہو اس پر غسل فرض ہوگا بلکہ دونوں پر فرض ہوگا نیز جماع کی صورت میں محض دونوں سے غسل فرض ہو جاتا ہے انزال شرط نہیں۔

3۔ مردے یا جانور کے ساتھ وطی کرنا۔

یہ عمل بھی ناجائز ہے تاہم اگر کوئی شخص درندگی کا ثبوت دیتے ہوئے یہ حرکت کرے تو انزال کی صورت میں غسل فرض ہوگا۔

4۔ سونے (سے بیدار ہونے) کے بعد پتلے پانی کا پانا جبکہ سونے سے پہلے آلہ تناسل منتشر نہ ہو۔

چونکہ نیند سکون و آرام کی حالت ہوتی ہے جس میں شہوت پیدا ہوتی ہے لہٰذا یہ منی

marfat.com

ہوگی اور اس کا پتلا پن کسی بیماری وغیرہ کی وجہ سے ہوسکتا ہے بنابریں غسل ضروری ہوگا کیونکہ عبادات کے معاملے میں احتیاط کی ضرورت ہے البتہ سونے سے پہلے آلہ تناسل منتشر ہوتو یہ مذی ہوگی اور غسل فرض نہ ہوگا۔

5۔ نشے اور بیہوشی سے ٹھیک ہونے کے بعد رطوبت کا پانا جسے وہ منی خیال کرتا ہے۔

6۔ حیض اور نفاس سے فارغ ہونے کے بعد

اگرچہ مذکورہ بالا چیزیں اسلام لانے سے پہلے پائی جائیں یہ زیادہ صحیح قول کے مطابق ہے میت کو غسل دینا (زندوں پر) فرض کفایہ ہے۔

## دس چیزوں سے غسل فرض نہیں ہوتا

(۱) مذی میم کے فتح اور ذال کے سکون یا کسرہ کے ساتھ (مذی، مذی) سفید پتلا پانی ہوتا ہے جو شہوت کے وقت نکلتا ہے لیکن شہوت کے ساتھ اور اچھل کود کر نہیں نکلتا بعض اوقات اس کے نکلنے کا احساس تک نہیں ہوتا مردوں کی نسبت عورتوں میں مذی زیادہ ہوتی ہے اور اسے مذی کہتے ہیں۔

(۲) ودی، ودی سفید رنگ کا لیس دار مادہ ہوتا ہے جو پیشاب کے بعد نکلتا ہے۔

(۳) رطوبت کے بغیر احتلام، احتلام حلم سے بنا ہے جس کا معنٰی خواب ہے۔ اصطلاح میں احتلام سے مراد خواب میں جماع کا دیکھنا ہے جس کے ساتھ انزال بھی ہوتا ہے۔ مردوں اور عورتوں دونوں کو احتلام ہوتا ہے اور چونکہ یہ شیطانی اثر ہے لہٰذا انبیاء کرام علیہم السلام اس سے محفوظ و معصوم ہوتے ہیں۔ اگر کسی شخص کو احتلام زیادہ ہو لیکن رطوبت نہ پائے تو اس پر غسل فرض نہ ہوگا۔

(۴) بچے کی پیدائش جس کے بعد خون نہیں دیکھا گیا۔ یہ صحیح مذہب کے مطابق ہے۔

marfat.com

حضرت امام ابوحنیفہ رحمہ اللہ کے نزدیک اس صورت میں احتیاطاً غسل کرنا چاہیے۔

(۵) آلہ تناسل کو ایسے کپڑے کے ساتھ (شرمگاہ میں) داخل کرنا جو حصول لذت سے مانع ہے۔ احتیاط یہی ہے کہ اس صورت میں بھی غسل کیا جائے۔

(۶) پچکاری کرانا۔ چونکہ پچکاری شہوت کو پورا کرنے کے لیے نہیں ہوتی بلکہ فضلات کو پاخانے کے راستے سے نکالنے یا دوائی وغیرہ داخل کرنے کے لیے ہوتی ہے لہٰذا اس صورت میں غسل فرض نہ ہوگا۔

(۷) انگلی یا اس کی مثل پنسل (وغیرہ) کو دو راستوں میں سے ایک میں داخل کرنا۔

(۸) جانور یا مردہ سے وطی کرنا، شہوت کی کمی کے باعث غسل فرض نہیں ہوتا۔

(۹) کنواری لڑکی سے جس کا پردہ بکارت ابھی زائل نہیں ہوا جماع کرنا بشرطیکہ انزال نہ ہو۔ عورت کا پردۂ بکارت مرد و عورت کی شرمگاہوں کے ملنے (مباشرت فاحشہ) میں رکاوٹ بنتا ہے اور جب تک دونوں شرمگاہیں آپس میں نہ ملیں غسل فرض نہیں ہوتا لہٰذا اس صورت میں غسل اس وقت تک فرض نہ ہوگا جب تک انزال نہ ہو۔

## آداب غسل

غسل کے آداب وہی ہیں جو وضو کے ہیں جن کا ذکر مستحبات وضو میں گزر چکا ہے ہاں غسل کرتے وقت قبلہ شریف کی طرف منہ نہیں کرے گا کیونکہ غالب گمان ہے کہ وہ ستر ہوگا اور جو چیز وضو میں مکروہ ہے وہی غسل میں بھی مکروہ ہے۔

## اقسام غسل

وضو کی طرح غسل کی بھی تین قسمیں ہیں فرض۔ مسنون۔ مستحب

marfat.com

# فرض غسل

مندرجہ ذیل صورت میں انسان پر غسل کرنا فرض ہو جاتا ہے۔

(۱) شہوت کے ساتھ منی کا مقام منی پر سے مل جانا۔

(۲) سونے میں احتلام ہونا۔

(۳) عورت سے مرد کا مباشرت کرنا اگر چہ انزال نہ ہوگا۔

(۴) حشفہ کی کٹی ہوئی مقدار کا زندہ آدمی کے اندر چھپ جانا۔

(۵) جانور یا میت کے ساتھ وطی کرنا بشرطیکہ انزال ہو جائے۔

(۶) عورت کا حیض سے فارغ ہونا۔

(۷) بچہ پیدا ہونے کے بعد آنے والے خون کے بند ہو جانے کے بعد عورت پر غسل کرنا فرض ہے۔

# مسنون غسل

درج ذیل امور کے لئے غسل کرنا سنت ہے۔

(۱) جمعہ کے روز نماز جمعہ کے لئے۔

(۲) دونوں عیدوں (عید الفطر و عید الاضحیٰ) کی نماز کے لئے۔

(۳) احرام باندھتے وقت اور حاجیوں کے لئے میدان عرفات میں زوال کے بعد

# مستحب غسل

تیرہ (13) مقامات پر غسل کرنا مستحب ہے جو ذیل میں درج ہیں۔

(۱) کافر کا اسلام قبول کرنے کے بعد۔

marfat.com

(۲) شب برات کے روز

(۳) بیت اللہ شریف کی زیارت کے لئے

(۴) روضہ اقدس صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی حاضری کے لئے۔

(۵) حاجیوں کو مزدلفہ میں ٹھہرنے کے لئے۔

(٦) دخول مکہ اور مدینہ النبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے لئے۔

(۷) طواف زیارت کے لئے۔

(۸) نماز کسوف کے لئے۔

(۹) نماز استسقاء (بارش کا طلب کرنا) کے لئے۔

(۱۰) ہر خوف سے نجات حاصل کرنے کے بعد۔

(۱۱) شدید تاریکی کے کافور ہونے کے بعد۔

(۱۲) روحانی مجالس مثلاً میلاد شریف وغیرہ میں شرکت کے لئے۔

(۱۳) کسی بھی نیک کام کا آغاز کرنے سے پہلے بھی غسل کرنا مستحب ہے۔

## تنبیہ

(۱) جنبی کو چاہیے کہ جس قدر جلد ممکن ہو غسل کر کے طہارت حاصل کرے اسلیے کہ جب تک جنابت والا گھر میں رہے گا رحمت کے فرشتے نہیں اتریں گے روزے کے دنوں میں اگر جنبی ہو تو چاہیے کہ وہ سحری کھانے سے پہلے غسل کرے تا کہ روزے کے تمام اوقات جنابت سے خالی ہوں اور اگر وقت کم ہو تو غسل کرنے سے سحری کا وقت ختم ہو جائے گا تو پھر وہ وضو کر کے کھانا کھالے اور بعد میں غسل کرے۔

marfat.com

(۲) جنبی کے لئے اس حالت میں درج ذیل کام کرنا حرام ہیں۔

(i) مسجد میں داخل ہونا (ii) بیت اللہ کا طواف

(iii) قرآن مجید کو ہاتھ لگانا خواہ ایک ہی آیت ہو البتہ جنبی نے بغیر غسل کیے کوئی دُعا یا درود شریف زبانی پڑھ لیا تو اس میں کوئی حرج نہیں لیکن وضو اور کلی کرنا بہتر ہے۔

## تیمم کا بیان

قرآن مجید میں اللہ تعالیٰ ارشاد فرماتا ہے۔

فَلَمْ تَجِدُوْا مَآءً فَتَيَمَّمُوْا صَعِيْدًا طَيِّبًا فَامْسَحُوْا بِوُجُوْهِكُمْ وَاَيْدِيْكُمْ مِّنْهُ

(النساء، ۴:۴۳)

جب تم پانی نہ پاؤ تو پاک مٹی سے تیمم کرو اور اس مٹی سے اپنے مونہوں اور ہاتھوں کا مسح کرو۔

جب تم کو پانی نہ ملے یا پانی تو موجود ہو لیکن آدمی کسی بیماری کی وجہ سے پانی استعمال کرنے پر قادر نہ ہو یا پانی استعمال تو کر سکتا ہے لیکن بیماری کے بڑھنے کا خطرہ ہو تو ان سب صورتوں میں اس کو شرعاً اس بات کی اجازت ہے کہ وہ غسل اور وضو کی جگہ تیمم کرے۔

حدث اصغر یا حدث اکبر دونوں صورتوں میں تیمم کا ایک ہی طریقہ ہے فرق صرف نیت کا ہے۔

یوں کہ غسل کی حاجت کی صورت میں غسل اور وضو کی ضرورت کی صورت میں تیمم کو وضو کے قائم مقام کرنے کی نیت کرے گا۔

marfat.com

## تیمم کرنے کا طریقہ

تیمم کرنے والے کے لیے ضروری ہے کہ وہ تیمم کرنے سے پہلے پاکی حاصل کرنے کی نیت کرے اور درج ذیل طریقے کے مطابق تیمم کرے۔

پہلے دونوں ہاتھ پاک مٹی یا ایسی چیز جو مٹی کی جنس سے ہو اس پر مار کر منہ پر پھیرے اس کے بعد دوبارہ دونوں ہاتھ مٹی پر مار کر کہنیوں سمیت دونوں ہاتھوں پر پھیرے۔

## طہارت کا طریقہ

ہاتھوں کو اس طرح پھیرے کہ پہلے بائیں ہاتھ کی چاروں انگلیاں دائیں ہاتھ کی انگلیوں کے سروں کے نیچے رکھ کر کھینچتا ہوا کہنی تک لے جائے کہ دائیں ہاتھ کے نیچے کی جانب ہاتھ پھر جائے۔ پھر بائیں ہاتھ کی شہادت کی انگلی انگوٹھا اور ہتھیلی دائیں ہاتھ کے اوپر کی طرف کہنی سے انگلیوں تک کھینچتا ہوا لائے اور بائیں ہاتھ کے انگوٹھے کے اندر کی جانب کو دائیں ہاتھ کے انگوٹھے کی پشت پر پھیرے پھر اسی طرح دائیں ہاتھ کو بائیں ہاتھ پر پھیرے انگلیوں کا خلال کرے۔

## تیمم کے فرائض (تین ہیں)

(۱) نیت کرنا (بغیر نیت کے تیمم درست نہ ہوگا)

(۲) دونوں ہاتھ پاک مٹی پر مار کر منہ پر پھیرنا۔

(۳) دونوں ہاتھ مٹی پر مار کر کہنیوں سمیت دونوں ہاتھوں پر پھیرنا۔

marfat.com

# تیمم کی سنتیں

(۱)تسمیہ پڑھنا۔

(۲)ہاتھوں کو زمین پر مارنا۔

(۳)انگلیاں کھلی رکھنا۔

(۴)داڑھی کا خلال کرنا۔

(۵)انگلیوں کا خلال کرنا۔

(۶) مسلسل تیمم کرنا۔

(۷)ترتیب یعنی پہلے منہ اور پھر ہاتھوں کا مسح کرنا۔

(۸)مٹی پر دونوں ہاتھوں کو رکھ کر پہلے آگے اور پھر پیچھے کی طرف حرکت دینا۔

(۹)ایک ہاتھ کی جڑ کو دوسرے ہاتھ کے انگوٹھے کی جڑ پر مارنا (مٹی جھاڑنے کیلئے)

## تنبیہ

انگوٹھی، چھلہ، چوڑیاں وغیرہ پہنے ہونے کی صورت میں ان کو حرکت دے کر ان کے نیچے ہاتھ پھیرنا ضروری ہے بصورت دیگر پاکی حاصل نہیں ہوگی۔

# کن چیزوں سے تیمم کرنا جائز ہے

پاک زمین، مٹی، ریت، سیمنٹ، پتھر، چونا (اور ان سے بنی ہوئی دیوار) مٹی کا برتن جس پر روغن نہ ہو پکی اینٹ، گیرو، ملتانی (کاچھی) وغیرہ جو چیزیں مٹی کی جنس سے ہوں ان پر تیمم کرنا جائز ہے۔

نیز وہ پاک کپڑا جس پر اتنا غبار ہو کہ اگر اس پر ہاتھ مارا جائے تو اڑتا ہوا نظر آئے، ایسے کپڑے پر بھی تیمم کرنا جائز ہے۔

marfat.com

## تیمم کے بارے میں ایک اہم اصول

تیمم کے بارے میں ایک اصول مدنظر رہنا چاہیے کہ ہر وہ چیز جو آگ میں جل کر راکھ ہو جائے یا گل جائے یا پگھل جائے یا پھر نرم ہو جائے وہ زمین کی جنس سے نہیں ہے اس لیے ان سے تیمم جائز نہیں ہوگا۔

اس اصول کی روشنی میں درج ذیل چیزوں پر تیمم کرنا جائز نہیں ہوگا۔

لکڑی، لوھا، تانبہ، غلہ، تکیہ، کپڑا، گداوغیرہ

## موزوں پر مسح

وضو کرنے والا اگر اپنے پاؤں میں چمڑے کا موزہ پہنے ہوئے ہو تو بجائے پاؤں دھونے کے انہیں موزوں پر مسح کر سکتا ہے۔ بشرطیکہ طہارت کاملہ یعنی وضو کر کے پہنا ہوا سکے بعد جب وضو ٹوٹے تو صرف ایک بار دونوں موزوں پر مسح کر لینا کافی ہوگا، پاؤں کو دھونے کی ضرورت نہ ہوگی مسح موزہ کے اوپر کے حصے میں تین انگلیوں سے خط کھینچتے ہوئے کیا جائے مقیم ایک دن ایک رات مسح کر سکتا ہے اور مسافر تین دن تین رات (ابوداؤد ج:۱،ص:۳۱۔ مسلم، ج:۱۔ص:۱۳۵)

## مؤذّن کی فضیلت احادیث مبارکہ کی روشنی میں

عن ابی هریرة (رضی الله عنه) انّ رسول الله ﷺ قال: لو یعلم الناس مافی النداء والصف الاوّل ثم لم یجدوا الا ان یستهموا علیه راستهموا متفق علیه۔

ترجمہ:۔ حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ رسول اللہ ﷺ نے فرمایا: اگر لوگ جانتے کہ اذان دینے اور پہلی صف میں کھڑے ہونے کی کیا

marfat.com

(فضیلت) ہے اور پھر قرعہ اندازی کے بغیر (یہ سعادت) حاصل نہ کر سکتے تو قرعہ اندازی کرتے یہ حدیث متفق علیہ ہے۔

عَنْ طَلْحَةَ بْنِ يَحْيَى عَنْ عَمِّهِ قَالَ:

كُنْتُ عِنْدَ مَعَاوِيَةَ بْنِ أَبِي سُفْيَانَ فَجَاءَهُ الْمُؤَذِّنُ يدعو الى الصلوةِ فقال معاويةُ سمعت رسول الله ﷺ يقول المؤذنون اطولُ الناس أعناقًا يوم القيامة رواه مسلم۔ وابن ماجه

ترجمہ:۔ طلحہ بن یحی رضی اللہ عنہ اپنے چچا سے روایت کرتے ہیں کہ انہوں نے کہا کہ میں حضرت معاویہ بن ابوسفیان رضی اللہ عنہ کے پاس تھا کہ مؤذن نے انکو نماز کے لئے بلایا۔ حضرت معاویہ رضی اللہ عنہ نے کہا کہ حضور نبی اکرم ﷺ نے فرمایا: قیامت کے دن جب مؤذن اٹھیں گے تو انکی گردنیں سب سے بلند ہوں گی۔

عَنْ أَنَسِ بن مالك رضى الله عنه قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ لَا يُرَدُّ الدُّعَاءُ بَيْنَ الْأَذَانِ وَالْإِقَامَةِ (رَوَاهُ أَبُوداوٗد)

ترجمہ:۔ حضرت انس بن مالک رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ رسول اللہ ﷺ نے فرمایا اذان اور تکبیر کے درمیان جو دعا بھی مانگی جائے مسترد نہیں ہوتی۔ اس حدیث کو امام ابوداؤد نے روایت کیا ہے۔

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رضى الله عنه قَالَ: الْمُؤَذِّنُ يُغْفَرُ لَهٗ صَدَى صَوْتِه وَيَشْهَدُ لَهٗ كُلُّ رَطْبٍ وَيَابِسٍ (رَوَاهُ وَابن مَاجَهَ وابوداؤد)

ترجمہ: حضرت ابوہریرہ رضی اللہ عنہ سے مروی ہے فرمایا حضور ﷺ نے کہ مؤذن کی آواز جہاں تک پہنچتی ہے اسکو بخش دیا جاتا ہے اور اذان دینے والے کے لئے ہر تر اور خشک چیز (اسکے ایمان کی) گواہی دیتی ہے اس حدیث کو ابن ماجہ اور ابوداؤد نے روایت کیا ہے۔

marfat.com

عَنْ ابْنِ عُمَرَ رضی الله عنه اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ قَالَ: مَنْ اَذَّنَ ثِنْتَیْ عَشَرَ سَنَةً وَجَبَتْ لَهُ الْجَنَّةُ وَکُتِبَ لَهٗ بِتَاْذِیْنِهٖ فِیْ کُلِّ یَوْمٍ سِتُّوْنَ حَسَنَةً وَلِکُلِّ اِقَامَةٍ ثَلَاثُوْنَ حَسَنَةً (رواہ ابن ماجہ)

ترجمہ:۔ حضرت عمر ابن عمر رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ حضور نبی اکرم ﷺ نے ارشاد فرمایا جو شخص بارہ سال تک اذان دے اسکے لئے بہشت واجب ہو جاتی ہے اور اسکے لئے ہر روز ہر اذان پر ساٹھ نیکیاں اور ہر تکبیر پر تیس نیکیاں لکھی جاتی ہیں۔ اس حدیث کو امام ابن ماجہ نے روایت کیا ہے۔

## اذان کا بیان

قرآن مجید میں اللہ تعالیٰ کا ارشاد ہے:۔

وَاِذَا نَادَیْتُمْ اِلَی الصَّلٰوةِ۔ (المائدہ:۵:۸۵)

ترجمہ: اور جب تم نماز کے لئے اذان دو۔

اذان کی فضیلت و اہمیت نبی اکرم ﷺ کے اس ارشاد گرامی سے بخوبی سمجھی جا سکتی ہے آپ نے فرمایا کہ اذان دینے کا جو اجر ہے اگر لوگوں کو معلوم ہو جائے تو وہ اسکے دینے کے لئے آپس میں قرعہ اندازی کریں (مسلم) نیز صحیح بخاری میں ہے کہ ہر جن، ہر انسان اور دوسری مخلوقات جو موذن کی آواز کو سنتی ہیں قیامت کے روز اسکے اذان دینے کی گواہی دیں گے۔ نیز فرمایا کہ جو شخص محض ثواب کی غرض سے سات برس تک اذان کہے اس کے لئے دوزخ سے نجات لکھ دی جاتی ہے فرض نماز کے لئے اذان کہنا سنت موکدہ ہے اگرچہ اکیلا نماز پڑھنے والا ہو یا باجماعت نماز ہو قضا ہو یا ادا ہو۔ سفر میں ہو یا حضر میں۔

marfat.com

# کیفیت اذان

اَللّٰہُ اَکْبَرُ۔ اَللّٰہُ اَکْبَرُ ..... اَللّٰہُ اَکْبَرُ۔ اَللّٰہُ اَکْبَرُ

اَشْھَدُ اَنْ لَّآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ ..... اَشْھَدُ اَنْ لَّآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ

اَشْھَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰہِ

اَشْھَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰہِ

حَیَّ عَلَی الصَّلٰوۃ ..... حَیَّ عَلَی الصَّلٰوۃ

حَیَّ عَلَی الْفَلَاح ..... حَیَّ عَلَی الْفَلَاح

اَللّٰہُ اَکْبَرُ ..... اَللّٰہُ اَکْبَرُ

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ

ترجمہ:۔ اللہ بہت بڑا ہے اللہ بہت بڑا ہے۔ اللہ بہت بڑا ہے اللہ بہت بڑا ہے میں گواہی دیتا ہوں اللہ کے سوا کوئی معبود نہیں میں گواہی دیتا ہوں اللہ کے سوا کوئی معبود نہیں۔ میں گواہی دیتا ہوں محمد ﷺ اللہ کے رسول ہیں میں گواہی دیتا ہوں محمد ﷺ اللہ کے رسول ہیں۔ آؤ نماز پڑھنے کی طرف۔ آؤ نماز پڑھنے کی طرف، آؤ فلاح کی طرف آؤ فلاح کی طرف، اللہ بہت بڑا ہے اللہ بہت بڑا ہے اللہ کے سوا کوئی معبود نہیں ۔حَیَّ عَلَی الصَّلٰوۃِ کہتے ہوئے دائیں طرف اور حَیَّ علی الفلاح کہتے ہوئے بائیں طرف اپنا منہ پھیرے۔ اگر فجر کی اذان دے رہا ہو تو حَیَّ علی الفلاح کے بعد اَلصَّلٰوۃُ خَیْرٌ مِّنَ النَّوْمِ (نماز نیند سے بہتر ہے) کے کلمات دو مرتبہ کہے۔

مسئلہ:۔ اذان کے دوران گفتگو کرنا منع ہے بلکہ اذان سننے والے کو چاہیے کہ وہ

marfat.com

مؤذن کے ساتھ ساتھ کلمات اذان کو دہرائے، جسکا اسے اذان کہنے والوں کے برابر ثواب ہوگا۔

مسئلہ:۔ عربی کے علاوہ کسی اور زبان میں اذان پڑھنا جائز نہیں ہے۔

## اقامت

اذان کے بعد جماعت کے لئے اقامت کہنا سنت ہے اقامت کے الفاظ بھی اذان ہی کی طرح ہیں البتہ اقامت (تکبیر) میں حَیَّ عَلَی الفَلَاح کے بعد قَدْقَامَتِ الصَّلٰوۃُ (تحقیق نماز کھڑی ہوگئی) کے الفاظ کا اضافہ کیا جائے گا۔

## اذان اور اقامت میں فرق

اذان اور اقامت میں درج ذیل فرق ہے۔

(۱) اذان میں کلمات ٹھہر ٹھہر کر ادا کیے جاتے ہیں۔

(۱) اقامت میں جلد از جلد کہے جائیں۔

(۲) اذان بلند آواز سے کہی جائے گی۔

(۲) اقامت اذان سے پست آواز میں کہی جائے۔

(۳) اذان میں کانوں میں انگلیاں ٹھونسی جائیں گی۔

(۳) اقامت میں کانوں میں انگلیاں نہیں ٹھونسی جائیں گی۔

(۴) اذان اونچی جگہ اور مسجد سے باہر ہونی چاہیے۔

(۴) اقامت مسجد کے اندر ہونی چاہیے۔

(۵) غلطی کی صورت میں اذان لوٹانا مستحب ہے۔

marfat.com

(۵) اقامت صرف اس صورت میں لوٹائی جائے گی کہ مکبر گفتگو یا کھانے وغیرہ میں مشغول ہو گیا ہو۔

(۶) اذان کا نماز کے ساتھ متصل ہونا ضروری نہیں۔

(۶) اقامت کا نماز کے ساتھ متصل ہونا ضروری ہے۔

(۷) اذان میں حی علی الصلوٰۃ اور حی علی الفلاح کے کلمات پر چہرہ دائیں بائیں پھیرنا سنت ہے۔

(۷) اقامت میں ان الفاظ پر چہرہ دائیں بائیں نہیں پھیرا جائے گا۔

## اذان واقامت کا جواب

اذان اور اقامت دونوں کا جواب دینا مستحب ہے بلکہ حدیث پاک میں آتا ہے کہ اذان کا جواب دینے والے کو بھی موذن کے برابر ہی ثواب ملتا ہے اسطرح موذن کے ثواب میں بھی کوئی کمی نہیں آتی۔ یہ بات ذہن نشین کر لینی چاہیے کہ جب موذن حیّ علی الفلاح کہے تو اسکے جواب میں لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ الْعَلِیِّ الْعَظِیْمِ کے کلمات کہے جائیں گے۔ نیز ان میں اَشْھَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰہِ کے مقدس کلمات سن کر دونوں انگوٹھوں کو چوم کر اپنی آنکھوں پر لگائے اور پہلی مرتبہ عشق و محبت میں ڈوب کر یوں عرض کرے صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْکَ یَارَسُوْلَ اللّٰہِ ﷺ اور دوسری مرتبہ پھر انگوٹھوں کو چوم کر آنکھوں پر لگائے اور عرض کرے قُرَّۃُ عَیْنِیْ بِکَ یَارَسُوْلَ اللّٰہ اَللّٰھُمَّ بِالسَّمْعِ وَالْبَصَرِ حدیث پاک میں آتا ہے کہ جو شخص اذان میں اسم مبارک سن کر مذکورہ عمل کرے گا قیامت کے روز حضور سرکار دو عالم ﷺ اسکی شفاعت فرمائیں گے۔

marfat.com

(نوٹ: انگوٹھوں کو چومنا بدعت نہیں بلکہ سنت آدم وصدیق (علیہ السلام ورضی اللہ عنہ) ہے علاوہ ازیں بڑے بڑے علماء امت آئمہ کبار اور محدثین کا یہ معمول رہا ہے۔

## فائدہ عظیم

بزرگان دین کا یہ آزمودہ اور مجرب نسخہ ہے کہ جو شخص سرکار دو عالم نور مجسم ﷺ کا اسم مبارک سن کر اپنے انگوٹھے چوم کر آنکھوں پر لگائے گا وہ کبھی بھی آشوب چشم میں مبتلا نہیں ہوگا۔

## اذان کے بعد دُعا

جب موذن اذان ختم کر چکے تو مؤذن اور سامع کے لیے دُعا کرنا سنت ہے حدیث پاک میں آتا ہے کہ جس شخص نے اذان کے بعد میرے لئے وسیلہ کی دعا کی اسکے لئے میری شفاعت حلال ہوگی۔ دعائے وسیلہ یہ ہے۔

اَللّٰھُمَّ رَبَّ ھٰذِہِ الدَّعْوَۃِ التَّامَّۃِ وَالصَّلٰوۃِ الْقَائِمَۃِ اٰتِ مُحَمَّدَنِ الْوَسِیْلَۃَ وَالْفَضِیْلَۃَ وَالدَّرَجَۃَ الرَّفِیْعَۃَ وَابْعَثْہُ مَقَامًا مَّحْمُوْدَ نِ الَّذِیْ وَعَدْتَّہٗ وَارْزُقْنَا شَفَاعَتَہٗ یَوْمَ الْقِیَامَۃِ اِنَّکَ لَا تُخْلِفُ الْمِیْعَادَ۔

اے اللہ! اس کامل دعوت اور اس کے نتیجہ میں قائم ہونے والی نماز کے رب! حضرت محمد ﷺ کو وسیلہ اور فضیلت اور بلند درجہ عطاء کر اور انہیں مقام محمود پر کھڑا کر جس کا تو نے ان سے وعدہ کیا اور ہم کو قیامت کے دن ان کی شفاعت سے بہرہ مند کر بے شک تو وعدہ خلافی نہیں کرتا۔

marfat.com

# پنجگانہ نمازوں کے مستحب اوقات

اس کائنات ارضی میں اسلام ہی ایک واحد مذہب ہے جس نے اپنے پیروکاروں کو سماجی زندگی بھرپور طریقے سے گزارنے کیلئے پابندی وقت کا درس دیا ہے چنانچہ اس کی جملہ عبادات کیلئے ایک وقت مقرر ہے اگر وقت مقررہ پر اس عبادت کو بجالایا جائے تو وہ "ادا" قرار پاتی ہے اور اگر وقت گزر جانے کے بعد ادا کی جائے تو اسے "قضاء" کہتے ہیں جبکہ اسکے مقابل دیگر مذاہب باطلہ میں پابندی وقت کا کوئی تصور موجود نہیں ہے اسی لئے اسلام نے اپنی سب سے عظیم الشان عبادت یعنی نماز کو بھی وقت پر ادا کرنے کا تاکیدی حکم فرمایا ہے۔

اِنَّ الصَّلٰوةَ كَانَتْ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ كِتٰبًا مَّوْقُوْتًا (النساء: ب۵)

(بے شک نماز مومنوں پر وقت مقررہ میں فرض کی گئی ہے اسی طرح حضور سرور عالم ﷺ نے بھی اپنی متعدد احادیث مبارکہ میں اس امر کی تاکید کی ہے اور بلا عذر شرعی تاخیر نماز کو ناپسند فرمایا ہے نماز اول وقت میں ادا کرنے کی تاکید کے پیش نظر ذیل میں تمام نمازوں کے مستحب اوقات کو ہم آئمہ احناف کی تحقیق کے مطابق رقم کرتے ہیں۔

## تنبیہ

ہر کس و ناکس کیلئے بطور خاص یہ بات یاد رکھنے کے لائق ہے کہ نماز کے درج ذیل اوقات گزر جانے کے بعد نماز قضاء ہو جاتی ہے۔

**فجر:۔** نماز فجر کا وقت طلوع صبح صادق سے لے کر آفتاب کی کرن چمکنے تک ہے۔ (سورج کی کرن کے چمکنے سے پہلے تک ہے)

marfat.com

**صبح صادق:۔** پچھلی رات میں صبح ہوتے وقت ایک روشنی سورج نکلنے کی جگہ سے ستون کی طرح بلند ہوتی ہے پھر یہ روشنی اوپر سے نیچے اترنے لگتی ہے اور نیچے سے شمالاً جنوباً پھیلنے لگتی ہے اور جلدی جلدی بڑھتی جاتی ہے تو جب یہ روشنی شمالاً جنوباً پھیلنے لگتی ہے تو صبح صادق شروع ہو جاتی ہے اور اس کے پھیل جانے پر فجر کی نماز کا وقت شروع ہو جاتا ہے (درمختار ردالمحتار)

**نوٹ** :۔نماز فجر اجالا کر کے پڑھنا مستحب ہے لیکن اتنی تاخیر بھی نہیں کرنی چاہیے کہ نماز کا وقت ہی ختم ہو جائے بلکہ مسنون یہ ہے کہ طلوع آفتاب سے اتنی دیر پہلے پڑھی جائے کہ اگر نماز کسی وجہ سے لوٹانی بھی پڑے تو مستحب وقت کے اندر مسنون طریقے پر لوٹائی جا سکے۔

**ظہر:۔** نماز ظہر کا وقت زوال آفتاب سے لے کر ہر چیز کے اصلی سائے کے علاوہ دوگنا سایہ ہونے تک ہے۔نماز ظہر سردیوں میں جلدی اور گرمیوں میں ٹھنڈی کر کے یعنی ذرا تاخیر کر کے پڑھنا مستحب ہے۔

**عصر:۔** نماز عصر کا وقت ہر چیز کا سایہ دوگنا ہو جانے سے لے کر غروب آفتاب کے پہلے تک رہتا ہے۔دھوپ کا رنگ زرد ہونے سے پہلے نماز عصر ادا کرنا مستحب ہے اور اس کے بعد مکروہ تحریمی ہے۔بادل چھائے ہوئے ہونے کی صورت میں نماز عصر کا جلدی ادا کرنا بہتر ہے۔ہاں اگر گھڑی ہو تو پھر وقت مقررہ پر نماز ادا کی جائے گی۔

**مغرب:۔** نماز مغرب کا وقت غروب آفتاب سے لے کر شفق احمر کے غروب ہونے تک ہے۔شفق احمر اس سرخی کو کہتے ہیں جو آفتاب کے غروب ہو جانے کے بعد

marfat.com

پھیل جاتی ہے اس سرخی کے ڈوبنے کے بعد ایک سپیدی جنوباً و شمالاً پھیلنا شروع ہو جاتی ہے نماز مغرب کا وقت اس سپیدی کے شروع ہونے سے پہلے تک ہے۔ نماز مغرب کو اول وقت میں پڑھنا مستحب اور اتنی تاخیر کرنا کہ ستارے نکل آئیں مکروہ ہے۔

**عشاء:۔** نماز عشاء کا وقت شفق احمر کے غروب ہونے سے لے کر صبح صادق کے طلوع ہونے سے پہلے تک ہے۔ نماز عشاء کو تہائی رات تک موخر کرنا مستحب، آدھی رات تک مباح اور اس کے بعد مکروہ تحریمی ہے۔ وتروں کا وقت عشاء کے بعد سے صبح صادق کے طلوع ہونے سے پہلے تک ہے۔ وتر کو آخر رات تک موخر کرنا اس شخص کیلئے جائز ہے جسکو یقین ہو کہ وہ صبح صادق سے پہلے بیدار ہو سکتا ہے بصورت دیگر رات کو عشاء کے ساتھ ہی ادا کر لینا بہتر ہے۔

## ممنوعہ اوقات

ان تین اوقات میں کوئی بھی نماز پڑھنا درست اور جائز نہیں ہے۔

(۱) طلوع آفتاب کے وقت۔

(۲) غروب آفتاب کے وقت۔

(۳) دوپہر کے وقت جب کے سورج درمیان میں ہوتا ہے۔ اِن مذکورہ اوقات میں سجدہ کرنا یا کوئی بھی نماز خواہ نماز جنازہ ہی ہو نہیں پڑھنی چاہیے۔

(۱) صبح صادق کے طلوع ہونے کے بعد فرضوں سے پہلے دو سنتوں کے علاوہ اور کوئی نماز ادا نہیں کی جا سکتی۔ نماز فجر کے ادا کرنے کے بعد سورج نکلنے کے بیس (۲۰) منٹ بعد تک کوئی بھی نماز ادا کرنا جائز نہیں ہے عصر کی نماز کے بعد سورج ڈوبنے تک

marfat.com

کوئی بھی نماز ادا کرنا جائز نہیں ہے ہاں ان اوقات میں سجدہ تلاوت اور قضاء شدہ نماز پڑھنا چاہیے تو پڑھ سکتا ہے۔

(۲) خطبہ جمعہ وعیدین کے درمیان بھی نماز پڑھنا جائز نہیں ہے۔

(۳) عیدین (عید الفطر اور عید الاضحیٰ) کے دن نماز عید سے پہلے گھر پر کوئی سنت یا نفل پڑھنا نہیں چاہیے اور نماز عید کے بعد عید گاہ میں نفل پڑھنا مکروہ ہے البتہ سجدہ تلاوت اور قضاء نماز پڑھ سکتا ہے۔

نوٹ: (i) اپنی قضاء شدہ نمازوں کا اعلانیہ پڑھنا اپنی قضاء نماز کا دوسروں کے سامنے ذکر کرنا مکروہ تحریمی ہے (ii) عصر کی نماز کے بعد جب سورج کا رنگ بدل جائے اور دھوپ پھیکی پڑ جائے تو سابقہ جنازہ اور سابقہ تلاوت کا سجدہ کرنا درست نہیں ہے اور اگر اسی وقت تلاوت کی ہو یا جنازہ اسی وقت حاضر ہوا ہو تو یہ سجدہ تلاوت اور نماز جنازہ پڑھنا درست ہے (شامی وغیرہ)

## نماز کی فضیلت آیات قرانیہ کی روشنی میں

(1) وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَارْكَعُوْا مَعَ الرّٰكِعِيْنَ ۝

اور نماز قائم رکھو اور زکوٰۃ دیا کرو اور رکوع کرنے والوں کے ساتھ (مل کر) رکوع کیا کرو۔" (بقرہ، ۲:۴۳)

(2) وَالْمُقِيْمِيْنَ الصَّلٰوةَ وَالْمُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَالْمُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ اُولٰٓئِكَ سَنُؤْتِيْهِمْ اَجْرًا عَظِيْمًا ۝

"اور وہ (کتنے اچھے ہیں کہ) نماز قائم کرنے والے (ہیں) اور زکوٰۃ دینے والے (ہیں) اور اللہ اور قیامت کے دن پر ایمان رکھنے والے (ہیں) ایسے ہی لوگوں

marfat.com

کو ہم عنقریب بڑا اجر عطا فرمائیں گے۔" (النساء،۴:۱۶۲)

(3) لَئِنْ اَقَمْتُمُ الصَّلٰوةَ وَاٰتَيْتُمُ الزَّكٰوةَ وَاٰمَنْتُمْ بِرُسُلِيْ وَعَزَّرْتُمُوْهُمْ وَاَقْرَضْتُمُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا لَّاُكَفِّرَنَّ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَلَاُدْخِلَنَّكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ۔

"اگر تم نے نماز قائم رکھی اور تم زکوٰۃ دیتے رہے اور میرے رسولوں پر (ہمیشہ) ایمان لاتے رہے اور ان (کے پیغمبرانہ مشن) کی مدد کرتے رہے اور اللہ کو (اس کے دین کی حمایت و نصرت میں مال خرچ کر کے) قرض حسن دیتے رہے تو میں تم سے تمہاری گناہوں کو ضرور مٹا دوں گا اور تمہیں یقیناً ایسی جنتوں میں داخل کر دوں گا جن کے نیچے نہریں جاری ہیں۔" (المائدہ:۱۲)

(4) اَلَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۝ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ حَقًّا لَهُمْ دَرَجٰتٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَمَغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ۝ (سورۃ انفال:۴،۸)

"(یہ) وہ لوگ ہیں جو نماز قائم رکھتے ہیں اور جو کچھ ہم نے انہیں عطا کیا ہے اس میں سے خرچ کرتے رہتے ہیں (حقیقت میں) یہی لوگ سچے مومن ہیں، ان کے لیے ان کے رب کی بارگاہ میں (بڑے) درجات ہیں اور مغفرت اور بلند درجہ رزق ہے"

(5) وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ طَرَفَيِ النَّهَارِ وَزُلَفًا مِّنَ الَّيْلِ ۭ اِنَّ الْحَسَنٰتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّاٰتِ ۭ ذٰلِكَ ذِكْرٰى لِلذّٰكِرِيْنَ ۝ (ھود،۱۱:۱۱۴)

ترجمہ:۔ اور آپ دن کے دونوں کناروں میں اور رات کے کچھ حصوں میں نماز قائم کیجئے۔ بے شک نیکیاں برائیوں کو مٹا دیتی ہیں۔ یہ نصیحت قبول کرنے والوں کے لئے نصیحت ہے۔

(6) وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ۝

(النور:۲۴:۵۶)

marfat.com

اور تم نماز (کے نظام) کو قائم رکھو اور زکوٰۃ کی ادائیگی (کا انتظام) کرتے رہو رسول اللہ ﷺ کی (مکمل) اطاعت بجالاؤ تا کہ تم پر رحم فرمایا جائے (یعنی غلبہ واقتدار، استحکام اور امن وحفاظت کی نعمتوں کو برقرار رکھا جائے)

(7) وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ ۭ اِنَّ الصَّلٰوةَ تَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَاۗءِ وَالْمُنْكَرِ

(العنکبوت، ۲۹:۴۵)

اور نماز قائم کیجئے۔ بے شک نماز بے حیائی اور برائی سے روکتی ہے۔

## نماز کی فضیلت احادیث مبارکہ کی روشنی میں

(۱) عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ (رضی الله عنه) قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَامِنْ مُسْلِمٍ يتوضأ فيحسن وضوءه ثُمَّ يقوم فَيُصَلِّي رَكْعَتَيْنِ مُقْبِلٌ عَلَيْهِمَا بِقَلْبِهٖ وَوَجْهِهٖ اِلَّا وَجَبَتْ لَهُ الْجَنَّةُ (رواه مسلم۔ واحمد۔ والطبرانی)

ترجمہ:۔ حضرت عقبہ بن عامر رضی اللہ عنہ بیان کرتے ہیں کہ حضور نبی اکرم ﷺ نے فرمایا جو مسلمان اچھی طرح وضو کرے اور پھر کھڑا ہو کر حضور قلب کے ساتھ دو رکعات نماز پڑھے اسکے لئے جنت واجب ہو جائے گی۔

اس احادیث کو امام مسلم احمد اور طبرانی نے روایت کیا ہے

(۲) عَنْ رَبِيْعَةَ بْنِ كعب الأسلمي (رضی الله عنه) قال: كنت أبيت مع رسول الله ﷺ ماتيته بوضوئه وحاجته فقال لي: سل فقلت أسألكَ مرافقتك في الجنةِ قال: اوغير ذلك ؟ قلت: هو ذاك قال: فأعني على نفسك بكثرة السجود (رواہ مسلم، والنسائی)

ترجمہ:۔ حضرت ربیعہ بن کعب (رضی اللہ عنہ) بیان کرتے ہیں کہ میں رات کو حضور نبی اکرم ﷺ کی خدمت میں رہا کرتا تھا اور آپ ﷺ کے استنجاء اور وضو کے

marfat.com

لئے پانی لاتا تھا۔ ایک مرتبہ آپ ﷺ نے مجھے فرمایا مانگ (کیا مانگتا ہے) میں نے عرض کیا میں آپ سے جنت کی رفاقت مانگتا ہوں آپ ﷺ نے فرمایا اسکے علاوہ اور کچھ؟ میں عرض کیا مجھے یہی کافی ہے آپ ﷺ نے فرمایا تو پھر زیادہ سجدے کر کے اپنے معاملے میں میری مدد کرو (اس احادیث کو امام مسلم اور نسائی نے روایت کیا ہے)

(۳) عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ (رضی الله عنه) قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ اِنَّ الله تعالی یقول: یاابن آدم تفرغ لعبادتی ملأت صدرك غنی واسد فقرك والا تفعل ملأت یدیك شغلا ولم اَسُدّ فقرك (رواه الترمذی وابن ماجه)

ترجمہ:۔ حضرت ابوھریرہ رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ حضور نبی اکرم ﷺ نے فرمایا: اللہ تعالیٰ فرماتا ہے اے ابن آدم! تو میری عبادت کے لئے فارغ تو ہو میں تیرا سینہ بے نیازی سے بھر دوں گا اور تیرا فقر و فاقہ ختم کر دوں گا اور اگر تو ایسا نہیں کرے گا تو میں تیرے ہاتھ کام کاج سے بھر دوں گا اور تیری محتاجی ختم نہیں کروں گا۔

(اس حدیث کو امام ترمذی اور ابن ماجہ نے روایت کیا ہے)

(۴) عَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصامت (رضی الله عنه) اَنَّهٗ سَمِعَ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ یَقُوْلُ: مَامِنْ عَبْدٍ یَسْجُدُ لِلّٰهِ سَجْدَةً اِلَّا کَتَبَ اللّٰهُ لَهٗ بِهَا سَیِّئَةً وَرَفَعَ لَهٗ بِهَا دَرَجَةً فَاسْتَکْثِرُوْا مِنَ السُّجُوْدِ (رواه ابن ماجه)

ترجمہ:۔ حضرت عبادہ بن صامت رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ رسول اللہ ﷺ نے فرمایا جو بندہ اللہ تعالیٰ کے لیے ایک سجدہ کرتا ہے۔ اللہ تعالیٰ اس کے لئے ایک نیکی لکھتا ہے اور ایک برائی مٹاتا ہے اور ایک درجہ بلند کرتا ہے تو تم کثرت سے سجدہ کیا کرو۔

اس احادیث کو ابن ماجہ نے روایت کیا ہے۔

marfat.com

## نماز اور صحابہ کرام رضی اللہ عنہم کے معمولات

(1)عن علی بن ابی طالب رضی الله عنه یصلی لیله ولا یهجع الایسیرا ویقبض علی لحیة ولیتململ تململ السلیم، ویبکی بکاء الحزین حتی یصبح

ترجمہ:۔ حضرت علی بن ابی طالب رضی اللہ عنہ رات بھر نماز ادا فرماتے۔ بہت تھوڑا سا ستاتے، اپنی ریش مبارک کو پکڑ لیتے اور مریض کی طرح لوٹتے اور انتہائی، غمگین آدمی کی طرح روتے حتی کہ صبح ہو جاتی۔

(2) کان عبدالله بن زبیر رضی الله عنه اذا قام فی الصلوٰة کانه عمود من الخشوع و کان یسجد ویطیل السجود حتٰی تنزل العصافیر علی ظهره لا تحسبه الاجدار حائط۔ و کان یحي الدهر کله لیله قائماً حتی یصبح ولیلة یحیها راکعًا حتی یصبح ولیلة یحیها ساجدله حتی یصبح و کان یسمی حمامة المسجد

ترجمہ:۔ حضرت عبداللہ بن زبیر رضی اللہ عنہ جب نماز میں کھڑے ہوتے تو خشوع کی وجہ سے یوں معلوم ہوتا کہ گویا ایک ستون کھڑا ہے۔ سجدہ کرتے اور طویل سجدہ کرتے حتی کہ چڑیاں دیوار سمجھ کر آپکی پشت پر بیٹھ جاتی۔ آپ ہمیشہ شب بیداری فرماتے کسی رات کو صبح تک قیام میں اور کسی رات کو رکوع میں اور کسی رات کو سجدہ میں بسر کرتے اور آپکو مسجد کا کبوتر کہا جاتا تھا۔

## نماز نہ پڑھنے کی خوفناک سزائیں

قرآن حکیم میں وعید:۔

قَالُوْا لَمْ نَكُ مِنَ الْمُصَلِّيْنَ ۝ وَلَمْ نَكُ نُطْعِمُ الْمِسْكِيْنَ ۝ وَكُنَّا نَخُوضُ مَعَ الْخَآئِضِيْنَ ۝

ترجمہ:۔ وہ کہیں گے ہم نماز پڑھنے والوں میں نہ تھے۔

marfat.com

اور ہم حاجیوں کو کھانا نہیں کھلاتے تھے۔

اور بے ہودہ مشاغل والوں کے ساتھ (ملکر) ہم بھی بے ہودہ مشغلوں میں پڑے رہتے تھے۔

سورۃ الماعون میں ارشاد ہوتا ہے۔

فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّينَ ۝ الَّذِينَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُونَ ۝

ترجمہ:۔ پس افسوس (اور خرابی) ہے ان نمازیوں کیلئے ۝

جو اپنی نماز (کی روح) سے بے خبر ہیں (یعنی انہیں محض حقوق اللہ یاد ہیں حقوق العباد بھلا بیٹھے ہیں)۔

## نماز چھوڑنے کی سزا احادیث نبویہ ﷺ کی روشنی میں

احادیث مبارکہ میں متعدد مقامات پر نماز چھوڑنے پر وعید سنائی گئی ہے حضرت جابر بن عبداللہ رضی اللہ عنہما روایت کرتے ہیں کہ حضور نبی کریم ﷺ نے فرمایا:۔

بَيْنَ الرَّجُلِ وَبَيْنَ الشِّرْكِ وَالْكُفْرِ تَرْكُ الصَّلَاةِ

ترجمہ:۔ انسان اور اس کے کفر و شرک کے درمیان نماز نہ پڑھنے کا فرق ہے

حضرت ابو درداء رضی اللہ عنہ سے مروی ہے کہ میرے محبوب نبی اکرم ﷺ نے مجھے وصیت فرمائی۔

وَلَا تَتْرُكْ صَلَاةً مَكْتُوبَةً مُتَعَمِّدًا فَمَنْ تَرَكَهَا مُتَعَمِّدًا فَقَدْ كَفَرَ وَبَرِئَتْ مِنْهُ الذِّمَّةُ

ترجمہ:۔ کوئی فرض نماز جان بوجھ کر ترک نہ کرنا پس جس نے ارادۃ نماز چھوڑی اس نے کفر کیا۔

اس سے (اللہ) بری الذمہ ہو گیا۔

marfat.com

حضرت عبداللہ بن عمرو رضی اللہ عنہ روایت کرتے ہیں ایک دن حضور نبی کریم ﷺ نے نماز کا ذکر کرتے ہوئے فرمایا۔

من حافظ علیھا کانت له نورا وبرھانا ونجاۃ یوم القیامه ومن لم یحافظ علیھا لم یکن له نورولا برھان ولا نجاۃ وکان یوم القیامۃ مع قارون وفرعون وھامان وابی بن خلف۔

ترجمہ:۔ جس نے نماز کی حفاظت کی اس کے لئے روز قیامت نور اور روشن دلیل اور نجات ہوگی اور جس نے نماز کی حفاظت نہ کی۔ اس کیلئے نہ نور ہوگا نہ دلیل اور نہ نجات اور قیامت کے دن وہ فرعون قارون ہامان اور ابی بن خلف کے ساتھ ہوگا۔

## نماز میں سستی کرنے پر پندرہ سزائیں

سیدنا شیخ عبدالقادر جیلانی علیہ الرحمۃ (۴۷۰۔۵۲۱ھ) ایک روایت نقل کرتے ہیں کہ اللہ تعالیٰ نماز میں سستی کرنے والے کو پندرہ سزائیں دے گا چھ موت سے قبل تین موت کے وقت تین قبر سے نکالے جانے کے بعد۔

## دنیوی زندگی میں سزائیں

موت سے پہلے چھ سزائیں درج ذیل ہیں۔

۱۔ ایسے شخص کو صالح نہیں کہا جاتا۔

۲۔ اس کی زندگی سے برکت اٹھالی جاتی ہے۔

۳۔ اس کی روزی سے بھی برکت اٹھالی جاتی ہے۔

۴۔ اس کی کوئی نیکی قبول نہیں کی جاتی۔

marfat.com

۵۔ اس کی دعا نہیں قبول کی جاتی۔

۶۔ نیک حضرات کی دعاؤں میں اس کیلئے حصہ نہیں ہوتا۔

## موت کے وقت سزائیں

۱۔ ایسا شخص پیاسا مرتا ہے اگر اس کے حلق میں سات دریا بھی انڈیل دیے جائیں تو وہ سیراب نہیں ہوتا۔

۲۔ بھوکا مرتا ہے۔

۳۔ دنیا کی بکریوں جتنی اور پتھروں کو اس کی گردن اور دونوں کندھوں پر لاد دیا جاتا ہے۔

## قبر کی سزائیں

۱۔ اس کی قبر تنگ کر دی جاتی ہے۔

۲۔ قبر میں گھپ اندھیرا ہوتا ہے۔

۳۔ منکر نکیر کے سوالات کے جوابات دینے میں لاجواب رہتا ہے۔

## اخروی زندگی کی سزائیں

۱۔ اس حالت میں اللہ تعالیٰ سے ملاقات کرے گا کہ وہ اس پر غضب ناک ہوگا۔

۲۔ اس کا حساب لیا جائے گا۔

۳۔ اللہ تعالیٰ کے سامنے سے واپس ہو کر سیدھا جہنم میں جائے گا یہ الگ بات ہے کہ اللہ اس کی مصلحت کی خاطر اس کو معاف کر دے۔

## اصطلاحات نماز

نماز کے بیان سے پہلے نماز کی چند اصطلاحات کا سمجھنا ضروری ہے تاکہ اگلا مضمون

marfat.com

پوری طرح ذہن نشین ہو جائے ذیل میں جملہ اصطلاحات مع تشریح درج کی جاتی ہیں۔

| اصطلاحات | تشریح |
|---|---|
| تکبیر تحریمہ | شروع نماز میں اللہ اکبر کہنا |
| ثناء | سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ الخ پڑھنا |
| تعوذ | اَعُوذُ بِاللّٰه پڑھنا |
| تسمیہ | بِسْمِ اللّٰه پڑھنا |
| فاتحہ | اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ پڑھنا |
| قیام | نماز میں ہاتھ باندھ کر کھڑا ہونا |
| رکوع | گھٹنوں پر ہاتھ رکھ کر جھکنا |
| تسبیح | رکوع میں سبحان ربی العظیم اور سجدہ میں سبحان ربی الاعلی پڑھنا |
| تسمیع | سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَهٗ کہنا |
| تحمید | رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ پڑھنا |
| قومہ | رکوع کے بعد کھڑا ہونا |
| سجدہ | زمین پر پیشانی اور ناک رکھنا |
| جلسہ | دونوں سجدوں کے درمیان بیٹھنا |
| قعدہ اولیٰ | تین یا چار رکعتوں والی نماز میں دو رکعت پڑھ کر بیٹھنا اور التحیات پڑھنا |
| قعدہ اخیرہ | نماز مکمل کرنے کے بعد التحیات کے لئے بیٹھنا |
| تشہد | التحیات پڑھنا |

marfat.com

# شرائط نماز

نماز کے صحیح ہونے کے لئے درج ذیل شرائط کا پایا جانا ضروری ہے۔

(۱) جگہ کا پاک ہونا۔

(۲) ستر عورۃ یعنی جسم کا وہ حصہ جسکا چھپانا ضروری ہے وہ مرد کے لئے ناف سے لے کر گھٹنوں تک ہے اور عورت کے لئے ہاتھ پاؤں اور چہرے کے علاوہ تمام بدن کا چھپانا ہے۔

(۳) طہارت یعنی نمازی کے بدن اور کپڑوں کا پاک ہونا۔

(۴) استقبال قبلہ یعنی منہ اور سینہ قبلہ کی طرف ہونا۔

(۵) نماز کا وقت ہونا۔

(۶) نیت کرنا دل کے پکے ارادہ کا نام نیت ہے زبان سے کہنا۔

تاکہ ظاہر و باطن میں مطابقت پیدا ہو مستحب ہے۔

**نوٹ**۔ مذکورہ چھ شرائط کا نماز میں پایا جانا ضروری ہے ورنہ نماز نہیں ہوگی۔

# ترکیب نماز مع احکام ارکان

| نمبر | ترتیب افعال | حکم | کیفیت |
|---|---|---|---|
| ۱ | نیت | فرض | ..... |
| ۲ | تکبیر تحریمہ کہنا | فرض | ..... |
| ۳ | تکبیر تحریمہ کے وقت دونوں ہاتھ اٹھانا | سنت | ..... |
| ۴ | ناف کے نیچے ہاتھ باندھنا | سنت | عورتوں کو سینے پر ہاتھ باندھنا چاہیں |

marfat.com

| | | | |
|---|---|---|---|
| ۵ | ثنا سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ الخ پڑھنا | سنت | ..... |
| ۶ | اَعُوذُ بِاللہ پڑھنا | سنت | ..... |
| ۷ | بِسْمِ اللہ پڑھنا | سنت | ..... |
| ۸ | قیام یعنی کھڑے ہونا | فرض | ..... |
| ۹ | سورہ فاتحہ پڑھنا | واجب | ..... |
| ۱۰ | فاتحہ کے بعد کوئی سورۃ پڑھنا | واجب | نیز قرآن کریم کی مطلق قرأت فرض ہے |
| ۱۱ | رکوع میں جانے کے لئے تکبیر (اللہ اکبر) کہنا | سنت | ..... |
| ۱۲ | رکوع کرنا | فرض | ..... |
| ۱۳ | رکوع میں تین دفعہ تسبیح پڑھنا | سنت | ..... |
| ۱۴ | رکوع میں گھٹنوں کو مضبوط پکڑنا | سنت | ..... |
| ۱۵ | سَمِعَ اللہُ لِمَنْ حَمِدَہٗ کہہ کر رکوع سے اٹھنا | | |
| ۱۶ | قومہ یعنی رکوع کے بعد سیدھا کھڑا ہونا | واجب | |
| ۱۷ | سجدہ میں کم از کم تین بار تسبیح پڑھنا | سنت | |
| ۱۸ | سجدہ میں جانے کے لئے تکبیر پڑھنا | سنت | |
| ۱۹ | دو سجدوں کے درمیان بقدر تسبیح بیٹھنا | واجب | |
| ۲۰ | قعدہ اولیٰ | واجب | |
| ۲۱ | دونوں قعدوں میں التحیات پڑھنا | واجب | |

marfat.com

| | | | |
|---|---|---|---|
| ۲۲ | دونوں قعدوں میں بایاں پاؤں بچھا کر بیٹھنا اور دایاں پاؤں کھڑا رکھنا | سنت | عورتیں دونوں پاؤں نکال کر سرین پر بیٹھیں |
| ۲۳ | درود شریف پڑھنا (قعدہ اخیرہ میں) | سنت | |
| ۲۴ | درود شریف کے بعد دعائیں پڑھنا | سنت | |
| ۲۵ | اپنے ارادے سے نماز ختم کرنا | واجب | |
| ۲۶ | اسلام علیکم وَرَحمۃُ اللہ کہہ کر نماز ختم کرنا | | |
| ۲۷ | سلام پھیرتے وقت دونوں طرف منہ پھرنا | سنت | |
| ۲۸ | سلام میں مقتدیوں یا فرشتوں کی نیت کرنا | سنت | |

## نماز پڑھنے کا طریقہ

نمازی کو چاہیے کہ پاک صاف ہو کر تمام تر تقاضوں کو ملحوظ خاطر رکھتے ہوئے اچھی طرح وضو کر کے مصلی پر کھڑا ہو اور پھر نماز کی نیت کرے۔ مثلاً ظہر کی نماز پڑھنے لگا ہو تو یوں کہے۔ چار رکعت نماز فرض ظہر یا سنت بندگی اللہ تعالیٰ کی منہ طرف قبلہ شریف (اگر جماعت کے ساتھ نماز میں شریک ہو رہا ہو تو پھر یوں کہے پیچھے اس امام کے) اللہ اکبر تکبیر تحریمہ کہتے ہوئے اپنے دونوں ہاتھوں کو کانوں کی لوؤں سے لگائے اور پھر ناف کے نیچے دونوں ہاتھ اس طرح باندھے کہ بایاں ہاتھ ناف کے نیچے اور دایاں ہاتھ اوپر ہو اور اسطرح پکڑے کہ دایاں ہاتھ کا انگوٹھا اور چھنگلی کے ساتھ بائیں ہاتھ کی کلائی کے اردگرد حلقہ بنائے۔ دیگر ارکان نماز کا حسب ذیل طریقے سے ادا کرے۔

marfat.com

## قیام کے فوراً بعد ثناء

سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالٰى جَدُّكَ وَلَا اِلٰهَ غَيْرُكَ

ترجمہ:۔ پاک ہے تو اے اللہ اور تو ہی حمد کے لائق ہے تیرا نام برکت والا ہے اور تیری شان بہت بلند ہے اور تیرے سوا کوئی معبود نہیں۔

اسکے بعد اگر مقتدی ہے تو خاموش کھڑا ہو جائے اور بصورت امام یا منفرد ثناء کے بعد پہلے تعوذ و تسمیہ اور پھر فاتحہ پڑھے اور اسکے ساتھ کوئی سورت وغیرہ ملائے۔

## تعوذ

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط

میں پناہ مانگتا ہوں اللہ کی شیطان مردود سے۔

## تسمیہ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اللہ کے نام سے شروع کرتا ہوں جو بڑا مہربان اور رحم کرنیوالا ہے۔

## فاتحہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ o اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ o مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ o اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ o اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ o صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ o .....آمین

ترجمہ:۔ تمام تعریفیں اللہ کے لئے ہیں جو تمام جہانوں کا پالنے والا ہے وہ رحمان اور رحیم ہے۔ قیامت کے دن کا مالک ہے۔ ہم تیری ہی عبادت کرتے ہیں اور تجھ ہی

marfat.com

سے مدد مانگتے ہیں ہمیں سیدھا راستہ دکھا۔ان لوگوں کا راستہ جس پر تو نے انعام کیا اور نہ ان لوگوں کا راستہ جن پر تیرا غضب ہوا اور نہ ہی گمراہ ہوں کا۔

فاتحہ کے بعد امام اور مقتدی دونوں آہستہ آواز سے۔امین کہیں جسکا معنٰی ہے الٰہی قبول فرما۔

اِنَّا اَعْطَیْنٰکَ الْکَوْثَرَ ۝ فَصَلِّ لِرَبِّکَ وَانْحَرْ ۝ اِنَّ شَانِئَکَ هُوَالْاَبْتَرُ ۝

ترجمہ:۔ تحقیق ہم نے آپکو کوثر عطا کیا۔ پس اپنے رب کے لئے نماز پڑھ اور قربانی کر بے شک تیرا دشمن ہی نامراد رہے گا اسکے بعد تکبیر (اللہ اکبر) کہتے ہوئے اپنے سر کو جھکا کر گھٹنوں کو مضبوطی سے پکڑے اسطرح کہ بغیر عذر شرعی کے ٹانگوں میں خم نہ ہے اور تین مرتبہ رکوع کی تسبیح پڑھے۔

## تسبیح رکوع

سُبْحَانَ رَبِّیَ الْعَظِیْمِ (پاک ہے وہ رب بڑی عظمت والا) پھر سیدھا کھڑا ہو جائے اور تسمیع پڑھے۔

## تسمیع

سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَهٗ (اللہ اسکی سن لی جس نے اسکی تعریف کی) تنہا نماز پڑھنے والا تسمیع وتحمید (وَرَبَّنَا لَکَ الْحَمْدُ) دونوں کو ملائے پھر اللہ اکبر کہتا ہوا سجدہ میں جائے۔

## سجدہ کا طریقہ

سجدہ کرنے کا مسنون طریقہ یہ ہے کہ اللہ اکبر کہہ کر پہلے دونوں گھٹنے پھر دونوں ہاتھ زمین پر رکھے پھر ناک اور پیشانی زمین پر رکھے اور خوب جمائے۔ چہرہ دونوں

marfat.com

ہاتھوں کے درمیان رکھے اس طرح کہ مرد دونوں بازوؤں کو کروٹوں سے اور پیٹ کو رانوں سے اور رانوں کو پنڈلیوں سے جدا رکھے اور اس کے پاؤں کی انگلیاں قبلہ رخ زمین پر لگی ہوئی ہوں اور کہنیاں زمین پر لگی نہ ہوں اور کم از کم تین بار یہ تسبیح پڑھے۔

تسبیح سجدہ:۔ سُبْحَانَ رَبِّیَ الْاَعْلٰی (پاک ہے میرا پروردگار بہت بلند)

جلسہ:۔ پھر اللہ اکبر کہتے ہوئے سجدے سے اس طرح اٹھے کہ پہلے پیشانی پھر ناک پھر دونوں ہاتھ زمین پر سے اُٹھائے اور دائیاں قدم کھڑا کر کے بایاں قدم بچھا کر یوں بیٹھے کہ دائیں پاؤں کی انگلیاں قبلہ رخ ہوں اور دونوں ہاتھ اپنی رانوں پر گھٹنوں نے قریب اس طرح رکھے کہ ان کی انگلیوں کا رخ بھی قبلہ کی طرف ہو اور دونوں سجدوں کے درمیان یہ دعا پڑھے۔

دعا:۔ اَللّٰھُمَّ اغْفِرْلِیْ وَارْحَمْنِیْ وَاھْدِنِیْ وَارْزُقْنِیْ وَارْفَعْنِیْ وَاجْبُرْنِی

اے مجھے بخش دے اور میرے اوپر رحم فرما اور مجھے ھدایت دے اور مجھے رزق دے اور مجھے باعزت کر اور میری شکستگی کو دور کر دے۔

یہ دعا پڑھ کر اللہ اکبر کہتا ہوا دوسرے سجدے میں چلا جائے۔ اس میں بھی تین بار تسبیح کہنے کے بعد اللہ اکبر کہہ کر کھڑا ہو جائے دوسری رکعت کو بھی پہلی کی طرح پڑھے اس میں ثناء یا تعوذ نہ پڑھے بلکہ اگر امام ہے تو آہستہ آواز میں سے بسم اللہ کہہ کر قرآت کرے اور اگر مقتدی ہے تو خاموش کھڑا ہو جائے۔

## قعدہ اولیٰ

دوسری رکعت کے دونوں سجدوں کے بعد اطمینان سے بیٹھ جائے اور یہ دعا پڑھیں

marfat.com

## تشہد

اَلتَّحِیَّاتُ لِلّٰہِ وَالصَّلَوٰتُ وَالطَّیِّبَاتُ اَلسَّلَامُ عَلَیْکَ اَیُّھَا النَّبِیُّ وَرَحْمَۃُ اللّٰہِ وَبَرَکَاتُہٗ اَلسَّلَامُ عَلَیْنَا وَعَلٰی عِبَادِاللّٰہِ الصّٰلِحِیْنَ o اَشْھَدُ اَنْ لَّا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاَشْھَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُہٗ وَرَسُوْلُہٗ۔

تمام زبانی، بدنی اور مالی عبادتیں اللہ کے لئے ہیں، سلام ہو آپ پر اے نبی ﷺ اور اللہ کی رحمت اور برکت سلام ہو ہم پر اور اللہ کے نیک بندوں پر میں گواہی دیتا ہوں کہ اللہ کے سوا کوئی عبادت کے لائق نہیں اور یہ گواہی دیتا ہوں کہ محمد ﷺ اللہ کے عبد خاص اور رسول ہیں۔

جب تشہد میں کلمہ لا پر پہنچے تو دائیں ہاتھ کی بڑی انگلی اور انگوٹھے کا حلقہ بنائے اور باقی دو انگلیوں کو ہتھیلی کے ساتھ ملائے پھر شہادت توحید دیتے ہوئے لفظ لا پر شہادت کی انگلی اٹھائے اور الا پر گرا دے اور سب انگلیاں کھول کر قبلہ کی طرف سیدھی کر دے اور اگر دو رکعتوں والی نماز ہو تو اسی تشہد کے بعد درود شریف اور دعائے ماثورہ پڑھ کر سلام پھیر دے اور اگر تین یا چار رکعت والی نماز ہے تو تشہد پڑھنے کے فوراً بعد کھڑا ہو جائے بغیر کسی تاخیر کے تیسری رکعت کے لئے اگر فرض نماز ہو تو بسم اللہ اور فاتحہ کے ساتھ کوئی سورت نہ ملائے اور طرح تیسری رکعت کو حسب قاعدہ ادا کرے پھر چوتھی رکعت کو بھی اسی طریقے سے مکمل کرے اور قعدہ اخیرہ کے لئے بیٹھ جائے۔

## قعدہ اخیرہ

قعدہ اخیرہ میں سکون اور اطمینان کے ساتھ بیٹھ کر التحیات مکمل کرنے کے بعد بارگاہ نبوی ﷺ میں نیاز مندانہ درود شریف پڑھے اور کہے۔

marfat.com

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ کَمَا صَلَّیْتَ عَلٰی اِبْرَاھِیْمَ وَعَلٰی اٰلِ اِبْرَاھِیْمَ اِنَّکَ حَمِیْدٌ مَّجِیْدٌ o اَللّٰھُمَّ بَارِکْ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ کَمَا بَارَکْتَ عَلٰی اِبْرَاھِیْمَ وَعَلٰی اٰلِ اِبْرَاھِیْمَ اِنَّکَ حَمِیْدٌ مَّجِیْدٌ (متفق علیہ)

اے محمد ﷺ پر اور آل محمد ﷺ پر رحمت نازل کر جس طرح تو نے ابراہیم علیہ السلام اور آل ابراہیم پر رحمتیں نازل کیں بے شک تو تعریف کیا گیا بزرگی والا ہے اور اے اللہ محمد ﷺ پر اور آل محمد ﷺ پر برکتیں نازل کر جس طرح تو نے ابراہیم علیہ السلام پر اور آل ابراہیم پر برکتیں نازل کیں بے شک تو تعریف کیا گیا بزرگی والا ہے۔

## دعائے ماثورہ

درود شریف کے بعد یہ دعا پڑھیں۔ رَبِّ اجْعَلْنِیْ مُقِیْمَ الصَّلٰوۃِ وَمِنْ ذُرِّیَّتِیْ رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَآءِ رَبَّنَا اغْفِرْلِیْ وَلِوَالِدَیَّ وَلِلْمُؤْمِنِیْنَ یَوْمَ یَقُوْمُ الْحِسَابُ۔

اے اللہ مجھے نماز کا پابند بنا دے اور میری اولاد کو بھی اے ہمارے رب ہماری دعا قبول فرما اے ہمارے رب مجھے بخش دے اور میرے والدین اور تمام اہل ایمان کو بخش دے اس روز جب عملوں کا حساب ہونے لگے۔

(اَللّٰھُمَّ رَبَّنَآ اٰتِنَا فِی الدُّنْیَا حَسَنَۃً وَّفِی الْاٰخِرَۃِ حَسَنَۃً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ)

(البقرہ ۲:۲۰۱)

اے ہمارے رب ہمیں دنیا اور آخرت میں بھلائی عطا کر اور ہمیں آگ کے عذاب سے محفوظ رکھ۔

## صلوۃ الوتر

نماز عشاء کے فرضوں کے بعد سنن ونوافل ادا کرنے کے بعد تین رکعت وتر

marfat.com

واجب ادا کرے نماز وتر کی نیت بھی عام نمازوں کی طرح کیجاتی ہے اور جس طرح دیگر نمازیں ادا کی جاتی ہے اس طرح وتر بھی ادا کرے گا۔ لیکن وتروں اور دیگر نمازوں میں فرق یہ ہے کہ وتروں کی نماز میں پہلی دو رکعتیں حسب قاعدہ ادا کرنے کے بعد تشہد پڑھ کر تیسری رکعت کے لئے کھڑا ہو جانے اور قیام اور فاتحہ وسورت پڑھنے کے بعد رکوع جانے سے پہلے تکبیر کہتا ہوا۔ اپنے دونوں ہاتھوں کو کانوں تک اٹھائے اور پھر ہاتھ باندھ کر دعائے قنوت پڑھے۔

## دعائے قنوت

اَللّٰھُمَّ اِنَّا نَسْتَعِیْنُکَ وَنَسْتَغْفِرُکَ وَنُؤْمِنُ بِکَ وَنَتَوَکَّلُ عَلَیْکَ وَنُثْنِیْ عَلَیْکَ الْخَیْرَ وَنَشْکُرُکَ وَلَا نَکْفُرُکَ وَنَخْلَعُ وَنَتْرُکُ مَنْ یَّفْجُرُکَ اَللّٰھُمَّ اِیَّاکَ نَعْبُدُ وَلَکَ نُصَلِّیْ وَنَسْجُدُ وَاِلَیْکَ نَسْعٰی وَنَحْفِدُ وَنَرْجُوْا رَحْمَتَکَ وَنَخْشٰی عَذَابَکَ اِنَّ عَذَابَکَ بِالْکُفَّارِ مُلْحِقٌ۔

اے اللہ ہم تجھ سے دعا مانگتے ہیں اور تجھ سے بخشش چاہتے ہیں اور تجھ پر ایمان لاتے ہیں اور تجھ پر بھروسہ کرتے ہیں اور تیری ناشکری نہیں کرتے اور تیرے نافرمانوں سے علیحدگی اختیار کرتے ہیں اے اللہ ہم تیری ہی عبادت کرتے ہیں اور تیرے لئے نماز پڑھتے ہیں اور تجھے سجدہ کرتے ہیں اور تیری طرف کوشش کرتے ہیں اور ہم حاضری دیتے ہیں۔ اور تیری رحمت کے امیدوار ہیں اور تیرے عذاب سے ڈرتے ہیں بے شک تیرا عذاب کافروں کو پہنچنے والا ہے۔

دعائے قنوت پڑھنے کے بعد رکوع کرے اور پھر حسب سابق التحیات اور دعا

marfat.com

# واجب نماز

درج ذیل چیزیں نماز میں واجب ہیں کہ اگر ان میں سے کوئی بھی عمداً یا سہواً چھوٹ جائے تو سجدہ سہو لازم ہو جاتا ہے۔ بلکہ اگر قصداً چھوڑ دیا جائے تو نماز کا لوٹانا واجب (ضروری) ہے۔

۱۔قرأت فاتحہ۔۲۔ضم سورت یعنی فاتحہ کے ساتھ کسی ایک چھوٹی سورت کا یا اس کے برابر تین آیات یا ایک بڑی آیت جو چھوٹی سورت مثلاً الکوثر یا اخلاص کے برابر ملانا۔

**نوٹ:۔** اگر مقتدی ہے تو وہ قرأت نہیں کریگا۔ بلکہ حدیث مبارکہ ہے۔قرأۃ الامام قرأۃ لہ امام کی قرأت ہی مقتدی کی قرأت ہے۔اگر منفرد نماز پڑھ رہا ہے تو پھر اس کو قرأت کے ساتھ سورت بھی ملانا ہوگی۔

**تنبیہ** ۔قرأت کرنے میں کسی خاص سورت یا آیات کو اس اعتقاد کے ساتھ خاص نہ کرے کہ اس کی قرأت کے بغیر نماز ادا ہی نہیں ہوگی۔ بلکہ قرآن مجید سے جو بھی اسے یاد ہو اور وہ اسے آسانی اور صحت کے ساتھ تلاوت کر سکتا ہو پڑھ سکتا ہے۔

۳۔وتر، سنتوں اور نوافل کی تمام رکعتوں میں فاتحہ کے ساتھ سورت کا ملانا۔

۴۔فرض نماز میں پہلی دو رکعتوں میں فاتحہ کے ساتھ سورت کا ملانا۔

۵۔سورت فاتحہ کو دوسری سورت سے مقدم کرنا۔

۶۔سجدہ میں پیشانی کے ساتھ ناک بھی زمین پر لگانا بغیر عذر کے صرف پیشانی پر یا صرف ناک پر ہی اکتفا کرنا جائز نہیں۔

۷۔کسی دوسرے رکن کی طرف منتقل ہونے سے پہلے دوسرا سجدہ کرنا اگر سہواً دوسرا سجدہ رہ گیا تو اگلی رکعت میں اس کی قضاء کرے پھر سجدہ سہو کرے تو نماز درست ہوگی۔

marfat.com

۸۔تمام ارکان کو اطمینان سے ادا کرنا۔

۹۔قعدہ اولیٰ کے لیے بیٹھنا۔

۱۰۔اس میں تشہد پڑھنا۔

۱۱۔قعدہ اخیرہ میں تشہد مع درود پڑھنا۔

۱۲۔تین یا چار رکعت والی نماز میں قعدہ اولیٰ کے بعد بغیر کسی تاخیر کے تیسری رکعت کے لئے کھڑا ہونا۔

۱۳۔نماز سے خارج ہونے کے لیے لفظ السلام کہنا علیکم ساتھ کہنا واجب نہیں ہے۔

۱۴۔وتروں کی نماز میں دعائے قنوت پڑھنا۔

۱۵۔عید الفطر اور عید الاضحیٰ میں زائد تکبیرات کا کہنا۔

۱۶۔عیدین میں دوسری رکعت کے رکوع میں جانے کے لئے تکبیر کہنا۔

۱۷۔امام کا فجر۔مغرب اور عشاء کی نماز میں بلند آواز سے قرآت کرنا اگر قضاء نماز باجماعت ادا کر رہے ہوں تو اس میں بھی قرأت بلند آواز سے کی جائے گی۔اسی طرح جمع،عیدین،رمضان المبارک میں تراویح اور وتر کی تمام رکعتوں میں بھی بلند آواز سے قرآت کرنا۔

۱۸۔ظہر عصر کی چاروں رکعتوں اور مغرب کی تیسری وعشاء کی بعد والی رکعتوں میں آہستہ آواز سے قرأت کرنا۔

۱۹۔تمام ارکان میں ترتیب قائم رکھنا۔

## نماز کی سنتیں

سنن نماز میں سے کسی سنت کے قصداً ترک کرنے یا بھولے سے رہ جانے سے اگرچہ نماز نہیں ٹوٹتی اور نہ ہی سجدہ سہو لازم آتا ہے البتہ نماز ترک سنت کی وجہ سے درجہ

marfat.com

کمال تک نہیں پہنچتی اس لیے خصوصیت کے ساتھ اس بات کا التزام کرنا چاہیے کہ نماز کے پورے آداب ملحوظ رہیں اور فرائض وواجبات اور سنن کو ٹھیک ٹھیک ادا کیا جائے نماز کی سنتیں درج ذیل ہیں۔

ا۔ تکبیر تحریمہ کے وقت دونوں ہاتھ کانوں کی لوؤں تک اٹھانا۔ عورت کندھوں تک ہاتھ اٹھائے گی۔

۲۔ تکبیر تحریمہ کے وقت انگلیوں کو ذرا کھلا رکھنا۔

۳۔ مقتدی کا امام کے ساتھ ہی تکبیر تحریمہ کہنا۔

۴۔ تحریمہ کے بعد دونوں ہاتھ زیر ناف اس طرح باندھنا کہ دائیں ہاتھ کی چھوٹی انگلی اور انگوٹھے کے ساتھ بائیں ہاتھ کی کلائی کے گرد حلقہ بن جائے۔

۵۔ ثناء تعوذ اور تسمیہ آہستہ آواز کے ساتھ پڑھنا۔

۶۔ فاتحہ کے بعد آہستہ آواز سے آمین کہنا۔

۷۔ فاتحہ سے پہلے آہستہ آواز میں ہر رکعت میں تسمیہ بسم اللہ پڑھنا۔

۸۔ فرض کی تیسری اور چوتھی رکعت میں صرف فاتحہ پڑھنا۔

۹۔ رکوع اور سجود میں تین تین مرتبہ تسبیح پڑھنا۔

۱۰۔ ایک رکن سے دوسرے رکن کی طرف منتقل ہونے کے لیے تکبیر (اللہ اکبر) کہنا۔

۱۱۔ رکوع سے اٹھنے کے لیے سَمِعَ اللّٰہ لِمَنْ حمدہ۔ کہنا اور مقتدی کا ربنا لک الحمد کہنا مسند امام اعظم میں صحابہ کرام سے ربنا لک الحمد حمدا کثیرا طیبا مبارکا فیہ پڑھنا بھی منقول ہے۔ تنہا نماز پڑھنے والا تسمیع وتحمید دونوں کہے گا۔

۱۲۔ سجدے میں جاتے وقت پہلے دونوں گھٹنے دونوں ہاتھ پھر ناک اور پھر پیشانی زمین پر رکھنا۔

marfat.com

۱۳۔ سجدے سے اٹھتے وقت اس کے برعکس کرنا۔

۱۴۔ بازو کروٹوں سے اور پیٹ رانوں سے جدا رکھنا (جماعت کی صورت میں بازو کروٹوں سے جدا نہیں ہوں گے۔

۱۵۔ کلائیاں زمین سے اونچی رکھنا اور ہاتھ پاؤں کی انگلیوں کا قبلہ ہونا۔

۱۶۔ تشہد میں اشھد ان لا اِلٰہ اِلا اللہ پر انگشت شہادت کے ساتھ اشارہ کرنا اس طرح کہ جب لفظ (لا) کہے تو انگلی کو اٹھائے اور لفظ اِلہ پر رکھ دے تمام انگلیاں کھول کر قبلہ کے رخ کرے۔

۱۷۔ قعدہ اخیرہ میں درود شریف پڑھنا۔

۱۸۔ قعدہ اخیرہ میں درود شریف کے بعد کسی دعائے مسنون کا پڑھنا۔

۱۹۔ دائیں طرف سلام پھیرنے کے بعد بائیں طرف بھی سلام پھیرنا۔

۲۰۔ پہلے دائیں اور پھر بائیں سلام پھیرنا۔

۲۱۔ جماعت کی صورت میں سلام کو بلند آواز سے کہنا۔

۲۲۔ سلام کے وقت دائیں اور بائیں والے نمازیوں اور فرشتوں کو سلام کی نیت کرنا۔

## نماز کے مستحبات

نماز میں درج ذیل چیزیں مستحب ہیں۔

۱۔ دونوں قدموں کے درمیان چار انگلیوں کے برابر فاصلہ رکھنا۔

۲۔ رکوع اور سجدہ میں تین بار سے زیادہ تسبیح پڑھنا۔

۳۔ قیام کے وقت نظر کا سجدہ گاہ اور رکوع میں دونوں پاؤں کے انگوٹھوں کے درمیان رکھنا۔

marfat.com

۴۔سجدہ میں نگاہ ناک کی نرم ہڈی پر رکھنا۔

۵۔قعدہ میں نظر کو دونوں رانوں کے درمیان یعنی گود میں رکھنا۔

۶۔سلام کے وقت نظر کو اپنے شانوں پر رکھنا۔

۷۔جمائی کو روکنا اور اگر آئے تو بائیں ہاتھ کی پشت کے ساتھ منہ کو بند کرنا۔

کھانسی یا چھینک وغیرہ سے حتی الامکان پرہیز کرنا۔

## نماز کے مکروہات

نماز کے کچھ مکروہات تحریمی ہیں اور کچھ تنزیہی پھر ان میں سے کچھ نماز کے باہر ہیں اور کچھ نماز کے اندر ہر ایک کو ذیل میں الگ الگ بیان کیا جاتا ہے۔

## نماز کے باہر کے مکروہات تحریمی

۱۔چھوٹا یا بڑا پیشاب جب کے ان کی شدید حاجت ہو تو روک کر نماز پڑھنا۔

۲۔ریح (ہوا) کے غلبے کے ساتھ نماز پڑھنا۔

۳۔اتنا باریک کپڑا پہن کر نماز پڑھنا کہ جس سے ستر نظر آئے۔

۶۔نمازی کے سامنے دائیں بائیں سر کے اوپر یا سجدہ کی جگہ پر تصویر کا ہونا۔

۵۔کہنیوں کا ننگا ہونا۔

۶۔قبر (خواہ کسی بزرگ کی بنی ہو) کا نمازی کے سامنے ہونا۔البتہ اگر درمیان میں دیوار وغیرہ ہو تو جائز ہے۔

۷۔منہ میں کوئی ایسی چیز رکھ کر نماز پڑھنا جس سے قرآت میں دقت ہو ایسی صورت میں اگر قرآت کر ہی نہ سکے تو نماز سرے سے ہی نہیں ہوگی۔

۸۔شدید بھوک کی حالت میں جبکہ کھانا بھی تیار ہو تو نماز پڑھنا مکروہ تحریمی ہے ہاں

Imamat.com

اگر وقت تنگ ہو کہ نماز کے فوت ہو جانے کا خدشہ ہو تو پہلے نماز ادا کرے پھر کھانا کھائے۔

۹۔ بالوں کا جوڑا باندھ کر نماز پڑھنا۔

مذکورہ بالا تمام باتیں مکروہ تحریمی ہیں جنکے اختیار کرنے سے نماز اگرچہ ہو جاتی ہے لیکن ایسا کرنے سے انسان گنہگار ہوتا ہے۔

## نماز کے اندر مکروہات تحریمی

(۱) کوئی سورت شروع کرنے کے بغیر ضرورت کے چھوڑ کر دوسری سورت پڑھنا۔

(۲) ایک سورت کو بلاوجہ مکرر (دوبارہ) پڑھنا ہاں اگر بفرض سہولت وجلدی ایسا کیا تو اس میں کوئی حرج نہیں۔

(۳) کسی ایک سورت کو خاص کر لینا کہ ہمیشہ وہی سورت پڑھا کرے اور کوئی سورت نہ پڑھے۔

(۴) سجدہ یا قعدہ سے اٹھتے ہوئے زمین پر ہاتھ رکھ کر اٹھنا۔

(۵) جلسہ یا قعدہ میں دونوں پاؤں کھڑے رکھ کر بیٹھنا۔

(۶) بغیر قصد کے جمائی کا آنا۔

(۷) انگڑائی لینا۔

(۸) دوسری رکعت کا پہلی رکعت سے لمبا کرنا۔

(۹) قرآنی ترتیب کے خلاف قرآت کرنا۔ اگر بغیر ارادے کے بھول کر ہو تو مکروہ تنزیہی اور ارادہ کے ساتھ ہو تو مکروہ تحریمی ہے۔

(۱۰) قصداً خوشبو کا سونگھنا۔

marfat.com

(۱۱) ہاتھ والے پنکھے کے ساتھ ہوا لینا خواہ ایک یا دو دفعہ ہو۔

(۱۲) عمل قلیل یعنی ایسا کام جو تمام کے منافی تو نہ ہو البتہ آداب نماز کے خلاف ہو۔

(۱۳) ہاتھ اور پاؤں کی انگلیوں کا رخ قبلہ کی طرف نہ ہونا۔

(۱۴) رکوع میں گھٹنوں پر انگلیاں نہ رکھنا۔

(۱۵) آنکھ بند کرنا ہاں اگر آنکھیں بند کر کے خشوع وخضوع حاصل ہوتا ہو تو اسمیں کوئی حرج نہیں۔

(۱۶) کھٹمل یا جوں وغیرہ کا مارنا۔

(۱۷) تسبیحات یا آیات کا انگلیوں پر گننا۔

(۱۸) گلی صف میں جگہ وگنجائش ہوتے ہوئے پچھلی صف میں کھڑے ہونا۔

(۱۹) کسی سوتے ہوئے کے سامنے نماز پڑھنا۔

(۲۰) سترہ ترک کرنا جبکہ نمازی کو گمان ہو کہ اسکے نماز پڑھتے ہوئے کوئی اس کے آگے سے گزر سکتا ہے۔

## نماز کو توڑنے والی چیزیں

درج ذیل چیزوں کے پائے جانے سے نماز ٹوٹ جاتی ہے اسلیے انکو مفسدات نماز کہتے ہیں۔

(۱) کسی بھی قسم کا کلام (خواہ قصداً ہو یا سہواً) کرنے سے نماز ٹوٹ جاتی ہے۔

(۲) ایسی دعا کرنا جو قرآن وسنت کے مشابہ نہ ہو۔

(۳) کسی کو سلام کی غرض سے السلام علیکم کہنا۔

marfat.com

(۴) کسی کے سلام کا جواب دینا خواہ زبان کے ساتھ ہو یا مصافحہ کے ساتھ۔

(۵) باہر سے کسی چیز کا کھانا اگرچہ قلیل تر ہو اور اگر دانتوں میں پھنسی ہوئی چیز جو چنے کے برابر ہو کو نگلے تو بھی نماز ٹوٹ جاتی ہے۔

(۶) سینہ کا قبلہ رخ سے پھر جانا۔

(۷) بغیر عذر کے قصداً کھانسنا۔

(۸) کسی تکلیف درد یا بیماری کی وجہ سے رونا ہاں اگر آیات رحمت کو پڑھتے ہوئے خوشی سے یا ایسی آیات جن میں جہنم وعذاب کا ذکر ہو پڑھ کر اللہ کے خوف سے رونا آ گیا تو اس میں کوئی حرج نہیں ہے۔

(۹) چھینک کو سن کر یَرْحَمُكَ اللّٰه کہنا۔

(۱۰) کسی کے سوال کا جواب دینا خواہ اللہ کی توحید سے متعلق ہی کیوں نہ ہو۔

(۱۱) کوئی بُری خبر سن کر اِنَا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ پڑھنا۔

(۱۲) اگر کوئی تیمم کر کے نماز پڑھ رہا تھا کہ دوران نماز اسکی مدت تیمم پوری ہو گی تو اس سے بھی نماز ٹوٹ جائے گی۔

(۱۳) حالت نماز میں حدث کا لاحق ہو جانا یعنی وضو ٹوٹ جانا۔

(۱۴) حالت نماز میں اتنا زور سے قہقہ لگانا کہ نمازی کے دانت نظر آنے لگیں اس سے نماز اور وضو دونوں ٹوٹ جاتے ہیں۔

(۱۵) تکبیر یعنی اللہ اکبر کہتے ہوئے اسم جلالت یا اکبر سے پہلے ہمزہ کو زیادہ کھینچ کر اللہ اکبر کہنے سے بھی نماز جاتی رہتی ہے۔

(۱۶) دوران نماز اللہ کا نام سن کر جل جلالہ اور حضور ﷺ کا اسم گرامی سن کر ﷺ کہنے سے بھی ٹوٹ جاتی ہے۔ اگر تعظیماً کہا تو مکروہ تحریمی اور اکیلے امام یا اکیلے مقتدی

نے بھولے سے کہا تو سجدہ سہو لازم ہو جاتا ہے۔

(۱۷) دیکھ کر قرآت کرنا۔

(۱۸) حالت نماز میں اگر کوئی سامنے تحریر لکھی ہو تو زبان سے پڑھ لینے سے بھی نماز ٹوٹ جاتی ہے۔

(۱۹) قرآت میں سخت غلطی کرنا جس سے قرآن کے معانی بدل جائیں۔

(۲۰) ایک رکن ادا کرنے کی مقدار کے برابر ستر (شرمگاہ) کا کھلا رکھنا۔

(۲۱) عورت حالت نماز میں تھی کہ بچے نے آ کر دودھ پی لیا۔

(۲۲) کوئی عجیب بات سن کر سبحان اللہ کہنا یا کوئی گرا تو سن کر بسم اللہ کہنا۔

(۲۳) عورت حالت نماز میں تھی کہ مرد نے اسکا بوسہ لے لیا یا شہوت کے ساتھ اسے چھو لیا تو نماز فاسد ہو جاتی ہے۔

ان تمام باتوں کا بطور خاص خیال رکھنا چاہیے تا کہ نماز کو اچھی طرح ادا کیا جا سکے۔

## سنت موکدہ وغیرہ میں فرق

سنت موکدہ غیر موکدہ پڑھنے میں فرق یہ ہے کہ موکدہ میں قعدہ اولیٰ میں تشہد تک پڑھنے کے بعد تکبیر کہہ کر تیسری رکعت کے لئے کھڑا ہو جائے اور بسم اللہ پڑھ کر سورہ فاتحہ اور کوئی سورت پڑھ کر حسب سابق نماز کو مکمل کرے جبکہ سنت غیر موکدہ کی صورت میں قعدہ اولیٰ میں مکمل التحیات مع درود شریف اور مکمل دعا پڑھ کر تیسری رکعت کے لئے کھڑا ہو اور اسمیں پہلی رکعت کی طرح سبحانک اللہ الخ تعوذ اور تسمیہ بھی پڑھے گا پھر اسطرح حسب سابق نماز کو مکمل کر کے اسلام پھیر لے۔

نوٹ:۔ وقت کی کمی کے باعث عصر اور عشاء کی پہلی چار سنتوں کی بجائے دو بھی ادا کی جا سکتی ہے (جوہرہ نیر)

marfat.com

عام طور پر دیکھا یہ گیا ہے کہ اگر جماعت میں وقت کم ہو تو لوگ باتوں میں مشغول ہو جاتے ہیں اور خوب دنیا کی باتیں کرتے ہیں۔ اس سے انسان کے اعمال یوں ضائع ہو جاتے ہیں۔ جیسے آگ لکڑیوں کو خاکستر کر دیتی ہے۔ اسلیے دنیوی باتوں میں مشغول ہونے سے بہتر ہے کہ انسان کو اگر دو رکعتوں کا وقت ملے تو دو ہی پڑھ لے تا کہ اعمال کو ضائع ہونے سے بچا رہے۔

## سجدہ سہو کا بیان

سہو کے معنٰی بھول جانے کے ہیں نبی اکرم ﷺ نے چاہا کہ نماز کے اندر جو چیزیں جز وی ہیں انکے لیے دو حدیں مقرر کی جاتیں۔

(۱) ایک تو وہ حد مقرر کی جائے کہ اس (نماز) میں کمی کرنے سے انسان بری الذمہ نہ ہو سکے۔

(۲) ایک تو وہ حد مقرر کی جائے کہ اگر نماز میں کوئی کمی ہو جائے تو اسکے ذریعے نماز کامل ہو سکے۔

## سہو کرنے کا طریقہ

سجدہ سہو کرنے کا طریقہ درج ذیل ہے۔

سجدہ سہو کے واجب ہو جانے کی صورت میں انسان قعدہ اخیرہ میں التحیات پڑھ کر دائیں طرف سلام پھیر لے پھر تکبیر کہتے ہوئے سجدہ میں چلا جائے اسی طرح دوسرا سجدہ کرے پھر التحیات درود شریف اور دعا پڑھ کر دونوں طرف سلام پھیر دے اور نماز ختم کر دے۔

## سجدہ سہو کب واجب ہوتا ہے؟

سجدہ سہو واجب ہونے میں درج ذیل صورتیں ہیں۔

marfat.com

(۱) کسی فرض میں اتنی تاخیر ہو جائے کہ اتنے میں انسان ایک رکن ادا کر سکے۔

(۲) کسی واجب کے چھوٹ جانے سے (بشرطیکہ بھول کر ہوا گر قصداً کسی واجب کو ترک کیا تو پھر نماز کا اعادہ کرنا ضروری ہے)۔

(۳) کسی فرض یا واجب میں تقدیم و تاخیر میں تبدیلی ہو جانا۔

(۴) کسی فرض یا واجب کو دوبارہ کر لینے سے بھی سجدہ سہو واجب ہو جاتا ہے۔

(۵) کسی واجب کی کیفیت بدل دینے سے بھی سجدہ سہو کرنا واجب ہے۔

(ردالمختار)

مذکورہ بالا صورتیں اگر بھول کر پائی جائیں تو سجدہ سہو کرنے سے نماز میں واقع ہونے والا نقصان پورا ہو جاتا ہے لیکن قصداً کی جائیں تو سجدہ سہو کرنے سے وہ نقصان پورا نہیں ہوتا بلکہ نماز کا لوٹانا ضروری ہے خواہ کوئی بھی نماز ہو (عالمگیری، مراقی)

## سجدہ سہو کے مسائل

(۱) اگر قیام میں بھولے سے الحمد کی جگہ سورت پڑھ لی یا اس کا برعکس کر لیا جائے تو سجدہ سہو کرنا ضروری ہے۔

(۲) اگر قعدہ اولیٰ بھول جائے یا غیر نفل نماز کے درمیان کے قعدہ (قعدہ اولیٰ میں التحیات کے بعد درود شریف پڑھ دے یا قعدہ اخیرہ میں کھڑا ہو جائے تو تب بھی سجدہ سہو کرنا ضروری ہوتا ہے)۔

(۳) سورت فاتحہ کی ہر آیت کا پڑھنا واجب ہے۔ اگر فاتحہ کی کوئی آیت یا حصہ آیت پڑھنا بھول گیا تو سجدہ سہو کرے (اسی طرح التحیات کا ہر لفظ بھی پڑھنا واجب ہے)۔

(۴) فرض نماز کی پہلی دو رکعتیں اور سنت و نفل نماز کی سب رکعتوں میں سورۃ ملانا واجب

ہے اگر ان میں سے کسی رکعت میں بھی سورت ملانا بھول گیا تو آخر میں سجدہ سہو کرے۔

(۵) فرض نماز کی پہلی دو رکعتوں میں سورت ملانا بھول جائے تو دوسری رکعتوں میں ملائے اور سجدہ سہو کرے اور اگر پہلی ایک رکعت میں سورت ملائی دوسری میں بھول گیا تو پچھلی ایک رکعت میں سورت ملائے اور سجدہ سہو کرے اور اگر نہ ہی پہلی رکعتوں میں ملائی اور نہ پچھلی رکعتوں میں اور آخر میں یاد آیا کہ سورت نہیں ملائی تو تب بھی سجدہ سہو کرنے سے نماز ہو جائے گی۔

(۶) اگر نماز میں ایک سجدہ بھول جائے تو جب یاد آئے اسی وقت ادا کرے پھر جس رکن سے اس سجدہ میں آیا ہے اسی کی طرف چلا جائے اور آخر میں سجدہ سہو کر لے۔

(۷) اگر کوئی شخص نماز کے کسی قعدہ میں التحیات کی جگہ الحمد اللہ رب العالمین یا کچھ اور پڑھ دے جو کم از کم تین الفاظ ہوں تو اس پر سجدہ سہو کرنا لازمی ہے۔

(۸) اگر فرض واجب اور سنت موکدہ میں پہلے قعدہ میں التحیات کے بعد بھولنے سے درود شریف کم از کم اللھم صلی علی محمد یا اس سے کچھ زیادہ پڑھ گیا تو جہاں یاد آئے کھڑا ہو جائے اور آخر میں سجدہ سہو کرے۔

(۹) وتر کی نماز میں اگر دعائے قنوت پڑھنا بھول گیا تو آخر میں سجدہ سہو کرنے سے نماز مکمل ہو جائے گی لیکن اگر دعائے قنوت بھول کر دوبارہ پڑھ لی تو اس سے سجدہ سہو واجب نہیں ہوگا۔

(۱۰) اگر کسی بھی نماز کی کسی بھی رکعت میں فاتحہ بھول گیا تو آخر میں سجدہ سہو کر کے نماز کو مکمل کرے۔

(۱۱) سورہ فاتحہ پڑھنے کے بعد کسی سورت کے ملانے کے لئے کسی سوچ میں مبتلا

ہوگیا اور اتنی دیر تک سوچ میں مبتلا رہا کہ ایک رکن ادا کرسکتا تھا تو اس سے سجدہ سہو واجب ہو جاتا ہے اسی طرح اگر ایک رکن سے دوسرے رکن کی طرف منتقل ہوتے ہوئے سوچ میں مبتلا ہوا اور ایک رکن کی مقدار کے برابر مشغول رہا تو تب بھی سجدہ سہو واجب ہے۔

(۱۲) اگر چار رکعت والی نماز میں بھولنے سے پہلی یا تیسری رکعت میں تشہد کے لیے بیٹھ گیا اور تین دفعہ سبحان اللہ کہنے کی مقدار کے برابر بیٹھا رہا یا کم از کم التحیات والصلوٰت تک بیٹھا رہا تو سجدہ سہو واجب ہے اور اگر اس سے کم وقت بیٹھا یا کم پڑھا تو سجدہ سہو واجب نہیں ہوگا۔

(۱۳) تین یا چار رکعت والی فرض یا واجب نماز میں قعدہ اولیٰ میں بیٹھا بھول گیا اور دوسری رکعت کے بعد فوراً تیسری کے لئے کھڑا ہو گیا تو اگر نیچے کا دھڑ ابھی سیدھا نہ ہوا ہو تو بیٹھ جائے اور التحیات پڑھ لے ایسی صورت میں سجدہ سہو واجب نہیں ہوگا اور اگر نیچے کا دھڑ آدھا بھی سیدھا ہو گیا تو اب نہ بیٹھے بلکہ چاروں رکعتیں پڑھ کر آخر میں بیٹھے اور سجدہ سہو کرے اگر سیدھا کھڑا ہو جانے کے بعد لائے گا اور التحیات پڑھے گا تو گنہگار ہوگا لیکن سجدہ سہو اس صورت میں بھی واجب ہوگا۔

(۱۴) اگر سنت موکدہ کے قعدہ اخیرہ کو بھول کر پانچویں رکعت کا سجدہ کرلیا پھر ایک رکعت اور ملا کے سجدہ سہو کیا تو چار رکعت سنت موکدہ صحیح ہوں گی اور زائد دو رکعتیں نفل ہو جائیں گی۔

(۱۵) اگر فرض نماز کی آخری چوتھی رکعت پر بیٹھا اور التحیات پڑھ کر کھڑا ہو گیا تو اگلی رکعت کا سجدہ کرنے سے پہلے جہاں یاد آئے بیٹھ جائے اور بغیر التحیات پڑھے فوراً

marfat.com

سلام پھیر کر سجدہ سہو کرے اور پانچویں رکعت کا سجدہ کر چکا ہے تب یاد آیا تو ایک رکعت اور ملا کر چھ کرے تو چار فرض ہو گئیں اور دو نفل اور آخر میں سجدہ سہو کرے اور اگر پانچویں رکعت پر بیٹھ کر سلام پھیر دیا اور سجدہ کر لیا تو برا کیا چار فرض تو ہو گئے لیکن ایک رکعت بیکار گئی (ردالمحتار)۔

(۱۶) اگر فجر کی سنت یا فرض اور عصر کے فرض کا قعدہ اخیرہ کر کے بھولنے سے کھڑا ہو گیا یہاں تک کہ ایک رکعت اور پڑھ لی تب یاد آیا تو فوراً بیٹھ کر سجدہ سہو کر کے نماز درست کر لے یا ایک رکعت اور ملائے چونکہ فجر کے سنت و فرض اور عصر کے فرضوں کے بعد نفل کی ممانعت ہونے کی بنا پر اس موقع پر ایک رکعت نہ ملانا بہتر ہے۔ لہٰذا مزید نہ ملائے (شامی)

(۱۷) نماز میں سجدہ سہو واجب ہو گیا تھا اور کسی نے تشہد کے جانتے ہوئے یا بھول کر ادا نہ کیا یہاں تک کہ درود شریف یا دعا پڑھ لے تو اب سلام پھیر کر سجدہ سہو کرے۔

(۱۸) سجدہ سہو واجب تھا اور کسی نے جان بوجھ کر یا بھول کر ایک طرف یا دونوں طرف سلام پھیر دیا تب بھی جب تک کوئی ایسی بات نہ ہو تو جس سے نماز جاتی رہتی ہے اس وقت تک سجدہ سہو کرنے کا اختیار رہتا ہے۔

(۱۹) مسئلہ نمبر (۱۸) کی صورت میں بغیر سلام پھیرے سجدہ سہو کرے اگر سجدہ سہو نہ کرے گا تو نماز کو لوٹانا واجب ہے۔

(۲۰) اگر تین یا چار رکعت والی نماز میں دو رکعت پڑھ کر بھولنے سے ایک طرف یا دونوں طرف سلام پھیر دیا تو جب تک کوئی ایسی بات نہ ہو جس سے نماز جاتی رہتی ہے یاد آنے پر فوراً کھڑا ہو جائے اور باقی نماز پڑھ کر آخر میں سجدہ سہو کرے۔

maarfat.com

## (تنبیہات)

(۱) اگر کسی نے بھول کر بغیر سلام پھیرے ہی سجدہ سہو کر لیا تب بھی ادا ہو جائے گا اور نماز صحیح ہوگی اگر چہ قصداً ایسا کرنا مکروہ تنزیہی ہے۔

(۲) اگر قرآت میں بھول کر مثلاً سورت بقرہ کی تلاوت کرتے ہوئے وَرُسُلِہٖ کے بعد وَالْیَوْمِ الاٰخِرِ وَالْقَدْرِ خَیْرِہٖ وَشَرِّہٖ پڑھ دیا تو سجدہ سہو واجب نہیں ہوگا کیونکہ یہ الفاظ خلاف قرآن نہیں ہیں۔

(۳) کسی سورت کو دو بار یا زیادہ مرتبہ پڑھنے سے بھی سجدہ سہو لازم نہیں ہوگا کیونکہ یہ لمبی قرات کے قائم مقام ہوگی۔

(۴) اگر نماز میں کسی جگہ غلط لفظ کو درست کر کے پڑھ لیا تو نماز ہوگی اور اس سے سجدہ سہو واجب نہیں ہوتا البتہ اس صورت میں اگر پوری فاتحہ کو لوٹائے گا تو اس سے سجدہ سہو واجب ہے۔

(۵) اگر نماز میں کئی ایسی باتیں جمع ہو گئیں کہ جن سے سجدہ سہو واجب ہوتا ہے تو ایک ہی سجدہ سہو سب کی طرف سے کافی ہوگا اسلیے کہ ایک نماز میں دو دفعہ سجدہ سہو نہیں کیا جاتا۔

(۶) سجدہ سہو کرنے کے بعد اب پھر کوئی ایسی بات ہوگی جس سے سجدہ سہو واجب ہوتا ہے تو بھی پہلا سجدہ کافی ہے اب دوبار سجدہ سہو نہ کرے۔

## شک کے مسائل

(۱) فقہاء کے نزدیک سہو اور شک دونوں برابر ہیں جس طرح سہو سے سجدہ واجب ہوتا ہے اسی طرح شک سے بھی ہوتا ہے اور شک کی سب سورتیں سجدہ واجب ہونے میں برابر ہیں۔

marfat.com

(۲) نماز پڑھتے ہوئے شک ہوا کہ وضو ٹوٹ گیا ہے یا نہیں؟ کپڑے کو نجاست لگ گئی ہے یا نہیں؟ پھر یہ کہ وضو میں سر کا مسح کیا تھا یا نہیں؟ اگر نمازی کو پہلی مرتبہ اس قسم کا شک ہوا ہے تو نئے سرے سے وضو کر کے نماز پڑھ لے اور اکثر اگر اس قسم کا شک پڑتا رہتا ہے تو اسکی پروانہ کرے اس سے وضو کرنا یا کپڑے کا دھونا لازم نہیں۔

(۳) اگر نماز میں شک ہوا کہ تین رکعتیں پڑھی ہیں یا چار رکعتیں تو ایسی صورت میں بھی اگر اس قسم کا شک اتفاق سے ہو گیا۔

اور ایسا شبہ پڑنے کی اسے عادت نہیں ہے تو پھر از سر نو نماز پڑھے اور اگر شک میں پڑنے کی عادت ہے اور ایسا شبہ پڑ جاتا ہے تو دل میں سوچ کر دیکھے تو دیکھے دل زیادہ کس طرف ہے؟ اگر زیادہ گمان تین رکعتیں پڑھنے کا ہو تو ایک اور پڑھ لے سجدہ سہو واجب نہیں ہوگا اور اگر زیادہ گمان یہی ہے کہ میں نے چار رکعت پڑھ لی ہیں تو ایک رکعت نہ پڑھے اور سجدہ سہو بھی نہ کرے اور اگر سوچنے کے بعد بھی دونوں طرف برابر خیال رہے نہ تین رکعت کی طرف زیادہ گمان جاتا ہو اور نہ چار رکعت کی طرف تو تین رکعت میں بھی بیٹھ کر التحیات پڑھ لے شاید یہی چوتھی رکعت ہو پھر کھڑا ہو کر چوتھی رکعت پڑھے اور سجدہ سہو بھی کرے اگر اس قسم اگر اس قسم کا شک پہلی یا دوسری رکعت میں ہو یا دونوں میں سے کسی رکعت کے ہونے یا نہ ہونے میں تو اس کا بھی یہی حکم ہے تمام تعداد کو اختیار کرے اور سجدہ سہو کرے۔

۴۔ نمازی کو شک ہو کہ میں نے کسی رکعت میں ایک سجدہ کیا یا دو؟ تو اگر پکا گمان کسی طرف نہیں ہے تو پھر ایک سجدہ (اسی وقت) مزید کرے اور آخر میں سجدہ سہو کرے اور وہ سجدہ قعدہ اخیر میں پوری التحیات یا اس سے زیادہ پڑھنے

marfat.com

کے بعد شک ہونے پر کرے تو اس سجدہ کے بغیر التحیات پڑھے اور ایک طرف سلام پھیر کر سجدہ سہو کرے اور درمیان نماز یا پوری التحیات پڑھنے سے پہلے شک ہوا تو پھر قاعدہ کے موافق سجدہ سہو کرے۔

۵۔اگر نماز پڑھنے کے بعد شک ہوا کہ تین رکعتیں پڑھی ہیں یا چار تو اس شک کا کچھ اعتبار نہیں ہے نماز ہوگی۔البتہ اگر ٹھیک یاد آجائے کہ تین ہی ہوئی ہیں تو پھر کھڑے ہو کر ایک رکعت اور پڑھ لے اور سجدہ سہو کرے لیکن اگر نماز سے نکلنے کے بعد اس نے گفتگو کر لی یا منہ قبلہ سے پھیر لیا اسی طرح کوئی بات ہوئی جس سے نماز ٹوٹ جاتی ہے تو پھر سے پڑھے اسی طرح التحیات پڑھ چکنے کے بعد یہ شک ہوا تو اس کا بھی یہی حکم ہے کہ جب تک ٹھیک طرح یاد نہ آئے تو اس شک کا کچھ اعتبار نہ کرے لیکن اگر کوئی احتیاط نماز پھر سے پڑھ لے تو اچھا ہے کہ دل کی کھٹک نکل جائے اور شبہ نہ رہے۔

۶۔وتر کی نماز میں شبہ ہوا کہ نہ معلوم یہ دوسری رکعت ہے یا تیسری رکعت اور کسی بات کی طرف زیادہ گمان نہیں ہے بلکہ دونوں طرف برابر درجہ کو گمان ہے تو اسی رکعت میں دعائے قنوت پڑھے اور التحیات کے بعد کھڑا ہو کر ایک رکعت اور پڑھ لے تو اسمیں بھی دعائے قنوت پڑھے اور آخر میں سجدہ سہو کرے

۷۔اگر وتر کی نماز میں شک ہوا کہ پہلی رکعت ہے یا دوسری رکعت یا تیسری رکعت تو برابر کا گمان ہونے کی صورت میں پہلی رکعت سمجھے اور سب رکعتوں میں دعائے قنوت پڑھے اور ہر رکعت میں قعدہ کرتا رہے اور آخر میں سجدہ سہو کرے نماز ہو جائے گی۔

۸۔اگر قعدہ اخیرہ میں دونوں طرف برابر کا گمان ہو کہ سجدہ سہو جو اس پر واجب

marfat.com

ہو چکا تھا کیا ہے یا نہیں ؟ تو سجدہ سہو کرے اور اگر کسی جانب زیادہ گمان ہو تو اسکے مطابق عمل کرے۔

۹۔ اگر کسی کو شک ہوا کہ نماز پڑھی ہے یا نہیں اور اس نماز کا وقت ابھی ہو تو اس پر لازم ہے کہ نماز پڑھ لے اور اگر وقت نکلنے کے بعد شک ہوا تو لازم نہیں

(عالمگیری۔ بحرالرائق ،ردالمختار وغیرہ)

## جماعت کی اہمیت

اسلام ہی وہ واحد دین فطرت ہے جس نے اپنے پیروکاروں کو اجتماعیت کا درس دیا ہے چنانچہ اسکی تمام عبادات میں اسکی واضح جھلک دیکھی جا سکتی ہے نماز جو سب سے بڑی اور اہم عبادت ہے اسکے لئے خصوصیت کے ساتھ اس بات کا حکم دیا گیا ہے

وارکعوا مع الراکعین (البقرہ ۲:۴۳)

اور رکوع کرو رکوع کرنے والوں کیساتھ۔

نبی اکرم ﷺ نے سختی سے ساتھ اسکی تاکید فرمائی ہے ایک موقع پر آپ ﷺ نے ارشاد فرمایا کہ جو لوگ اپنے گھروں میں نماز پڑھتے ہیں میرا دل چاہتا ہے کہ ان کے مکانوں کو آگ لگا دوں لیکن پھر مجھے گھر میں موجود خواتین اور بچوں کا خیال آجاتا ہے کہ وہ بے گناہ اسمیں ملوث نہ ہو جائیں بغیر عذر شرعی جماعت کے ساتھ نماز نہ پڑھنے کو منافقت کی نشانی قرار دیا گیا ہے۔

حضور ﷺ جماعت کا اس قدر التزام فرمایا کرتے تھے کہ آخری ایام میں جب آپ ﷺ کی طبع مبارک علیل تھی تو تب بھی اپنے جان نثار صحابہ کے سہارے مسجد میں تشریف لا کر باجماعت نماز ادا فرماتے تھے۔

marfat.com

حدیث مبارکہ میں آتا ہے تنہا نماز پڑھنے سے باجماعت نماز پڑھنا ستائیس مرتبے بلند ہیں اور پھر فرمایا جس نے باجماعت نماز ادا کی اس نے اپنے سینے کو عبادت سے بھرا

حضرت عثمان رضی اللہ تعالی عنہ سے مروی ہے کہ آپ ﷺ نے فرمایا کہ جس نے عشاء کی نماز باجماعت ادا کی اس نے آدھی رات تک قیام کیا اور جس نے فجر کی نماز باجماعت ادا کی اس نے ساری رات قیام کرنے کا اجر حاصل کیا۔

## ترک جماعت کے عذر

اسلام نے جہاں ترک جماعت پر درج ذیل وعیدیں فرمائی ہیں ۔وہاں پر شفقت ورحمت فرماتے ہوئے خاص حالات میں ترک جماعت کی اجازت بھی دی ہے وہ خاص حالات (عذر) یہ ہیں۔

۱۔ بقدر ستر پوشی کے لباس نہ ہونا

۲۔ راستہ میں سخت کیچڑ ہونا

۳۔ سخت بارش ہونا

۴۔ سخت سردی جس سے کسی بیماری کے پیدا ہونے یا بڑھ جانے کا اندیشہ ہو

۵۔ سخت اندھیرا کہ راستہ دکھائی نہ دے اور نہ روشنی کا سامان ہو۔

۶۔ مسجد میں جانے سے مال واسباب چوری ہونے کا خطرہ ہو۔

۷۔ دشمن کے حملہ کا خطرہ ہو۔

۸۔ کسی بیمار کی تیمارداری میں ہو کہ اگر مسجد چلا گیا تو مریض کی تکلیف بڑھ جائے گی۔

۹۔ کسی قرض خواہ کے ملنے اور اس سے تکلیف پہنچنے کا اندیشہ ہو بشرطیکہ اس وقت ادا نہ کرسکتا ہو۔

marfat.com

۱۰۔شدت کی بھوک، پیاس میں ہونا بشرطیکہ کھانا تیار اور موجود ہو

۱۱۔گاڑی وغیرہ کے نکل جانے کا خطرہ ہو

۱۲۔ایسی بیماری کہ جسکی وجہ سے چل پھر نہیں سکتا

۱۳۔پیشاب یا پاخانہ کا زور ہونا

غرض یہ کہ مذکور بالا صورتوں میں سے کسی عذر یا مجبوری کی بنا پر جماعت ترک کرنا جائز ہے۔

## قضاء نماز

بلا عذر شرعی نماز قضاء کر دینا بہت سخت گناہ ہے اس پر فرض ہے اسکی قضاء پڑھے اور سچے دل سے توبہ کرے تو یہ درست اور قابل اعتبار ہے لیکن اگر توبہ بھی کرے لیکن گناہ سے بھی باز نہ آئے تو یہ توبہ نہیں بلکہ حدیث مبارکہ میں آتا ہے کہ گناہ پر قائم رہ کر استغفار کرنیوالا اس شخص کی مانند ہے جو اپنے رب سے ٹھٹھا کرتا ہے۔

## نماز قضاء کرنے کا شرعی عذر

قصداً نماز کا قضاء کرنا سخت گناہ ہے لیکن اگر کسی کو اندیشہ ہو کہ دشمن اسکو مار دیگا تو اسکی وجہ سے وقتی نماز قضاء کر سکتا ہے بشرطیکہ وہ کسی طرح بھی نماز پڑھنے پر قادر نہ ہو لیکن اس صورت میں بھی اگر وہ چلنے کی حالت میں نماز ادا کر سکتا تھا لیکن اس نے ادا نہ کی تو وہ سخت گنہگار ہوگا۔

## قضاء نماز کا وقت

قضاء نماز کا کوئی وقت مقرر نہیں ہوتا مگر تین اوقات طلوع زوال اور غروب کے

marfat.com

علاوہ جب بھی پڑھے گا بری الذمہ ہو جائے گا۔

ادا نماز: وقت کے اندر نماز پڑھنا ادا نماز کہلاتی ہے۔

قضاء نماز: وقت گزر جانے کے بعد نماز پڑھنا قضاء نماز کہلاتی ہے۔

اعادہ کرنا: اگر کسی عمل سے کوئی خرابی پیدا ہو جائے تو اس خرابی کو دور کرنے کیلئے دوبارہ نماز پڑھنے کو اعادہ کہتے ہیں۔

نوٹ: ہر وہ عبادت جسکا ایک خاص وقت مقرر ہے اسکے اندر اس عبادت کو بجالانا ادا کہلاتا ہے اور وقت گزر جانے کے بعد ادا کرنے کو قضاء کہتے ہیں مثلاً رمضان کے روزے۔

## چند ضروری مسائل

صاحب ترتیب کی اگر کوئی نماز رہ جائے تو اسکے لئے ضروری ہے کہ پہلے وہ قضاء شدہ نماز پڑھے اور بعد میں وقتی نماز ادا کرے۔

## صاحب ترتیب

وہ خوش قسمت انسان جس نے بالغ ہونے پر نماز پڑھنا شروع کی اور اسکی کبھی پانچ نمازیں قضاء ہو گئیں اور چھٹی نماز کا وقت گزر گیا تو اب وہ صاحب ترتیب نہیں رہے گا، صاحب ترتیب کی نماز فجر رہ گئی ہے لیکن جب وہ نماز ظہر پڑھ رہا تھا کہ اسے یاد آیا کہ میری نماز فجر رہ گئی ہے تو اسکی نماز ظہر باطل ہو جائے گی لہذا پہلے وہ نماز فجر قضاء کرے بعد میں ظہر پڑھے اسی طرح اگر اسے ظہر پڑھ لینے کے بعد یاد آیا کے اسکی نماز فجر رہتی تھی اس یاد آجانے کے ساتھ ہی اسکی پڑھی ہوئی ظہر باطل ہو جائے گی وہ نئے سرے سے پہلے نماز فجر پڑھے اور اسکے بعد ظہر دوبارہ پڑھے پہلی پڑھی ہوئی نماز نفل ہو جائے گی باقی نمازوں کو بھی اس پر قیاس کیا جائے۔

marfat.com

# امامت کا بیان

شرائط امامت: کسی شخص کے امام بننے کے لئے اسمیں ذیل شرائط کا پایا جانا ضروری ہے

۱۔ مسلمان ہونا

۲۔ بالغ ہونا

۳۔ مرد ہونا

۴۔ بقدر کفائت قرات جاننے والا ہونا

۵۔ عاقل ہونا

۶۔ معذور نہ ہونا

## نماز پڑھانے کا سب سے زیادہ حقدار کون؟

امامت کا سب سے زیادہ حق دار بادشاہ اسلام ہے پھر اس کا نامزد کردہ نائب پھر صاحب خانہ۔ان تینوں میں سے کوئی بھی موجود نہ ہو تو پھر وہ آدمی جسمیں درج ذیل خصوصیات میں سے کوئی ایک بھی پائی جائے تو وہ امامت کا حقدار ہوگا۔

۱۔سب سے زیادہ مسائل نماز کو جاننے والا۔

۲۔سب سے اچھی قرات کرنے والا۔

۳۔جو شخص سب سے زیادہ حاضرین میں سے متقی صاحب ورع ہو۔

۴۔جو عمر میں بڑا ہو۔

۵۔جو اخلاق میں سب سے اچھا ہو۔

۶۔جو سب سے زیادہ ظاہری حسن رکھنے والا ہو۔

۷۔مذکورہ بالا امور میں ترجیح نہ ہوتو جونسب کے اعتبار سے اعلی ہو مثلاً اگر کوئی ان میں سے سید یا ہاشمی ہوتو وہ جماعت کرائے۔

۸۔پھر جسکی آواز خوبصورت ہو۔

۹۔پھر جسکے کپڑے سب سے زیادہ صاف ہوں۔

اگر حاضرین ہر اعتبار سے برابر ہوں تو پھر نمازیوں کو اکثریت جس پر متفق ہوجائے اسکی اقتدا میں نماز ادا کی جائے گی اگر چہ اسمیں بعض کو اختلاف ہی کیوں نہ ہو

نوٹ:۔ولدالزنا جاہل ۔فاسق مرتکب گناہ کبیرہ بدعتی کہ جسکی بدعت حد کفر کو نہ پہنچی ہو غلام اور نابینا کی امامت مکروہ ہے ہاں اگر مذکورہ لوگوں مثلاً غلام یا نابینا میں کوئی دیگر حاضرین سے اعلم بالسنہ اور متقی و پارسا ہے تو وہ ہی امامت کا حق دار ہوگا اور اس میں کوئی کراہت نہیں۔

## عورت اور مرد کی نماز میں فرق

عورت اور مرد کی ادائیگی نماز میں چند فرق ہے جسکا لحاظ رکھنا ہر مرد و عورت کے لئے اشد ضروری ہے لیکن ہمارے بہت سے لکھے پڑھے حضرات بھی ان کا خیال نہیں رکھتے اسلئے ذیل میں تمام فرق وضاحت کے ساتھ لکھے جاتے ہیں تا کہ ہر کوئی (مرد عورت) صحیح طریقے سے نماز ادا کر سکے۔

marfat.com

| مرد | عورت |
| --- | --- |
| 1۔تکبیر تحریمہ کے وقت کانوں کی لو تک ہاتھ اٹھائے۔ | 1۔تکبیر تحریمہ کے وقت ہاتھ صرف کاندھوں تک اٹھائے۔ |
| 2۔ہاتھ کھلے رکھے مگر کہنیاں نہ کھلی رہیں۔ | 2 ۔آستینوں یا دوپٹہ کے اندر سے ہاتھ باہر نہ نکالے۔ |
| 3۔دائیں ہتھیلی بائیں کلائی پر رکھے اور انگوٹھا اور چھنگلیا سے بائیں کلائی پکڑے | 3۔دائیں ہتھیلی بائیں ہاتھ کی پشت پر رکھے اور انگلیاں ملی ہوئی رکھے۔ |
| 4۔ناف کے نیچے ہاتھ باندھے اور نظر سجدہ کی جگہ رکھے۔ | 4۔سینے پر ہاتھ باندھے اور نظر سجدے کی جگہ رکھے۔ |
| 5۔رکوع میں اتنا جھکے کہ پیٹھ بالکل سیدھی رہے سر پیٹھ سے اونچا نہ ہو۔ | 5۔رکوع میں صرف اتنا جھکے کہ ہاتھ اور گھٹنوں تک پہنچ جائیں پیٹھ بالکل سیدھی نہ کرے۔ |
| 6۔ہاتھوں پر زور دے کر رکوع کرے | 6۔رکوع میں ہاتھوں پر سہارا نہ کرے |
| 7۔ رکوع میں ہاتھوں کی انگلیاں پھیلی ہوئی رکھے۔ | 7۔رکوع میں ہاتھوں کی انگلیاں ملی ہوئی رکھے۔ |
| 8۔رکوع میں گھٹنوں کو خوب سیدھا رکھے۔ | 8۔رکوع میں گھٹنوں کو جھکائے۔ |
| 9۔رکوع میں گھٹنوں کو زور سے پکڑے اور نظر دونوں قدموں کی پشت پر رکھے۔ | 9۔رکوع میں گھٹنوں پر صرف ہاتھ رکھے زور سے نہ پکڑے نظر دونوں پاؤں کی پشت پر رکھے۔ |

marfat.com

10۔رکوع میں کشادہ رہے۔

11۔سجدہ میں دونوں پاؤں کی انگلیوں پر اتنا زور دے کہ انگلیاں ٹیڑھی ہوں کہ قبلہ رخ ہوجائیں اور ہر حصہ بدن کو کشادہ رکھے۔

12۔سجدہ میں ہتھیلیاں زمین پر بچھی ہوں اور بغلیں کھلی ہوں۔

13۔قعدہ میں داہنا پاؤں کھڑا اور بایاں بچھا کر بیٹھے۔

14۔قعدہ اور جلسہ میں ہاتھوں کی انگلیاں کشادہ رکھے۔

15۔امام اگر بھول جائے تو سبحان اللہ کہے۔

16۔مرد عورت کی امامت کرسکتا ہے

17۔مرد کے لیے جماعت سنت موکدہ قریب واجب ہے۔

18۔مرد پر جمعہ وعیدین کی نماز واجب ہے۔

10۔رکوع میں سمٹی رہے۔

11۔سجدہ میں بغلیں سمٹی رکھے اور پاؤں باہر نکال کر بازو کروٹوں سے اور پیٹ ران اور ران پنڈلیوں سے اور پنڈلیاں زمین سے ملائے۔

12۔سجدہ میں دونوں ہاتھ کہنیوں تک بچھادے۔

13۔قعدہ میں دونوں پاؤں باہر نکال کر سرین پر بیٹھے۔

14۔قعدہ اور جلسہ میں ہاتھوں کی انگلیاں ملائے رکھے۔

15۔نماز پڑھتی عورت کے سامنے سے اگر کوئی گزرے یا امام کو بھولنے پر آگاہ کرنا ہو تو ہاتھ کو ہاتھ پر مارے۔

16۔عورت مرد کی امامت نہیں کرسکتی

17۔عورت کی جماعت مکروہ ہے۔

18۔عورت پر جمعہ وعیدین کی نماز واجب نہیں ہے۔

marfat.com

| | |
|---|---|
| 19۔فجر کی نماز مرد کیلئے اجالے ہونے کے بعد پڑھنا مستحب ہے۔ | 19۔عورت کیلئے فجر کی نماز اندھیرے میں پڑھنا مستحب ہے۔ |
| 20۔مرد امام صف کے آگے کھڑا ہوگا۔ | 20۔عورت اگر عورتوں کی امامت کرائے تو بیچ میں کھڑی ہوگی۔ |
| 21۔ایام تشریق میں فرد پر تکبیریں واجب ہیں۔ | 21۔عورت پر ایام تشریق کی تکبیریں واجب نہیں ہیں۔ |

## مسافر کی نماز (97 کلومیٹر)

مسافر وہ شخص ہے جو کم از کم ۹۷ میل کے سفر کے ارادے سے اپنی بستی سے باہر نکل چکا ہو اس پر واجب ہے کہ فقط فرض نماز میں قصر کرے یعنی چار رکعت والی نماز میں دو فرض پڑھے گا۔

اگر قصداً یا سہواً چار رکعتیں پڑھ لیں لیکن رکعتوں کے بعد قعدہ کیا تو فرض ادا ہوا جائیں گے اور پچھلی دو رکعتیں نفل ہو جائیں گی، مگر قعدہ (ارادہ) پڑھنے والا سخت گنہگار ہوگا اور اس پر توبہ لازم ہے اور اگر سہو (بھول کر کیا) ایسا ہو گیا تو پھر سلام میں تاخیر ہو جائے کے سب سجدہ سہو کرے اور اگر دو رکعتوں کے بعد قعدہ ہی نہیں کیا تو اسکے فرض ادا نہیں ہوں گے بلکہ سجدہ سہو کرے اسی طرح تو چاروں نفل ہو جائیں گے فرض از سر نو ادا کرے۔

اگر مسافر مقیم امام کی اقتدا میں نماز پڑھے تو چار ہی پڑھے گا اور اگر امام مسافر ہو اور مقتدی مقیم ہو تو امام دو پر سلام پھیر دے گا جبکہ مقتدی کھڑا ہو کر باقی پوری کرے گا۔

marfat.com

## مسئلہ

مسافر جب فنائے شہر (وہ مقامات جو عوامی فلاح و بہبود کے لئے آبادی سے باہر بنائے جاتے ہیں انکو فنائے شہر کہتے ہیں جو آجکل محصول چنگیاں ہیں) سے باہر نکل جائے تو اسی وقت سے قصر کرنے لگے اور جب تک سفر میں رہے اور درمیان میں کم از کم پندرہ دن ٹھہرنے کی نیت نہ کرے یا اپنی بستی (وطن اصلی) میں لوٹ آئے تب تک قصر نماز پڑھتا رہے۔

اسٹیشن اگر آبادی کے اندر ہے تو اسی بستی کے حکم میں ہے اور اگر آبادی سے باہر ہے تو بستی کے حکم میں نہیں ہے۔ لہذا ایسی صورت میں اسٹیشن پر پہنچ جانے کے بعد نماز قصر کرے گا۔

## مسئلہ

قصر نماز کے لئے نیت کرنا ضروری ہے کہ میں فلاں نماز قصر پڑھتا ہوں۔

## مسئلہ

مقیم صرف نیت سے ہو جاتا ہے جیسکہ مسافر صرف نیت سے نہیں ہوتا بلکہ جب تک سفر کیلئے نہیں نکلتا پوری نماز پڑھتا ہے اگر چہ اس نے سفر کی نیت کر لی۔

# جن پر جمعہ فرض ہے

کسی بھی مسلمان پر جمعہ فرض ہونے کیلئے ان شرائط کا پایا جانا ضروری ہے۔

مسلمان ہو مرد، بالغ، عاقل، تندرست، اور مقیم ہو

marfat.com

# ضروری مسائل

۱۔ جمعہ کے دن غسل کرنا سنت ہے اچھے کپڑے پہننا، خوشبو لگانا، مسواک کرنا اور پہلی صف میں بیٹھنا مستحب ہے

۲۔ جو چیزیں نماز میں حرام ہیں وہ خطبہ میں بھی حرام ہیں مثلاً کھانا پینا سلام وکلام وغیرہ۔ یہاں تک کہ امر المعروف کرنا البتہ خطیب امر بالمعروف کر سکتا ہے۔

۳۔ سب حاضرین پر خطبہ سننا اور خاموش رہنا فرض ہے

۴۔ خطیب صاحب نے کوئی دعائیہ کلمہ کہا تو سامعین کو ہاتھ اٹھانا اور آمین کہنا منع ہے۔

۵۔ دونوں خطبوں کے درمیان ہاتھ اٹھائے بغیر دعا کرنا جائز ہے بلکہ یہ ان مقامات میں سے ایک مقام ہے کہ جن میں دعا کے قبول ہونے کا زیادہ امکان ہوتا ہے۔

۶۔ خطبہ جمعہ عربی زبان میں ہونا سنت ہے

# جنازہ کا بیان

## نماز جنازہ کا طریقہ

جنازہ کو آگے رکھ کر امام اسکے درمیان سینہ کے مقابل کھڑا ہو جائے مقتدی پیچھے صف باندھ کر کھڑے ہوں۔ پھر یوں نیت کریں چار تکبیر نماز جنازہ فرض کفایہ ثناء واسطے اللہ تعالیٰ کے درود واسطے نبی اکرم ﷺ کے اور دعا واسطے حاضر اس میت کے منہ طرف قبلہ شریف کے پیچھے اس امام کے پھر تکبیر کہتے ہوئے دونوں ہاتھوں کو کانوں تک اٹھا کر اللہ اکبر کہتے ہوئے ناف کے نیچے باندھ لے اور سبحانك اللهم آخر تک پڑھے ہاتھ اٹھائے بغیر دوسری دفعہ پھر تیسری دفعہ اللہ اکبر کہہ کر جنازہ کی دعا پڑھے میت اگر بالغ ہو (مرد یا عورت) تو یوں دعا پڑھے۔

marfat.com

## دعائے جنازہ

اَللّٰھُمَّ اغْفِرْ لِحَیِّنَا وَمَیِّتِنَا وَ شَاھِدِنَا وَغَائِبِنَا وَصَغِیْرِنَا وَ کَبِیْرِنَا وَذَکَرِنَا وَاُنْثَانَا اَللّٰھُمَّ مَنْ اَحْیَیْتَہٗ مِنَّا فَاَحْیِہٖ عَلَی الْاِسْلَامِ وَمَنْ تَوَفَّیْتَہٗ مِنَّا فَتَوَفَّہٗ عَلَی الْاِیْمَان

ترجمہ :(اے اللہ مغفرت فرما ہمارے زندوں کیلئے اور مردوں کے لیے اور حاضر کے لیے اور غائب کے لیے اور چھوٹوں کیلئے اور بڑوں اور مردوں کیلئے اور عورتوں کیلئے اے اللہ تو ہم میں سے جسکو زندہ رکھے اس کو اسلام پر زندہ رکھ اور ہم میں سے جس کو موت دے اسکو ایمان پر موت دے (اسکا ایمان پر خاتمہ کر)

## نابالغ لڑکے کی دعا

اَللّٰھُمَّ اجْعَلْہُ لَنَا فَرَطًا وَّاجْعَلْہُ لَنَا اَجْرًا وَّذُخْرًا وَّاجْعَلْہُ لَنَا شَافِعًا وَّمُشَفَّعًا

(اے اللہ اس لڑکے کو ہمارے لئے پیش رو بنا اور اسکو ہمارے لئے افراور ذخیرہ بنا اور اسکو ہمارے لئے سفارش کرنے والا اور سفارش قبول کیا گیا بنا)

## نابالغ لڑکی دعا

اَللّٰھُمَّ اجْعَلْھَا لَنَا فَرَطًا وَّاجْعَلْھَا لَنَا اَجْرًا وَّذُخْرًا وَّاجْعَلْھَا لَنَا شَافِعَۃً وَّمُشَفَّعَۃً

(اے اللہ اس لڑکی کو ہمارے لئے پیش رو بنا اور اس کو ہمارے لئے اجر اور ذخیرہ بنا اور اسکو ہمارے لئے سفارش کرنے والی اور سفارش قبول کی گئی)

## انتباہ

جنازہ کی نماز بھی ان چیزوں سے فاسد ہو جاتی ہے جن چیزوں سے دوسری نمازیں فاسد ہو جاتی ہیں البتہ جنازہ کی نماز میں اتنی آواز سے ہنسنے سے کہ آس پاس

marfat.com

والے سن لیں وضو نہیں ٹوٹتا اگرچہ نماز ٹوٹ جاتی ہے اور عورت کے ساتھ کھڑے ہو جانے سے بھی اسمیں فساد نہیں آتا۔

مسئلہ: نماز جنازہ میں اس نیت سے تاخیر کرنا تا کہ جماعت ضائع ہو جائے مکروہ تحریمی ہے

مسئلہ: میت کو بوسہ دینا جائز ہے۔

مسئلہ: نماز جنازہ پچھلی صف میں کھڑے ہو کر پڑھنا افضل ہے برعکس عام نمازوں کے۔

## تدفین کے متعلق چند ضروری مسائل

میت کو دفن کرنا فرض کفایہ ہے اور اس کو زمین پر ہی رکھ کر اوپر چاروں طرف دیواریں کھڑی کر دینا جائز نہیں۔

مسئلہ:۔ قبر کے اندر چٹائی وغیرہ بچھانا جائز نہیں کہ اس سے مال ضائع ہو جاتا ہے

مسئلہ:۔ قبر کا وہ حصہ جہاں میت رکھی گئی ہو وہاں پختہ اینٹیں لگانا منع ہے اسلیئے کہ اینٹ آگ سے پکتی ہے۔

مسئلہ:۔ میت کو قبر میں اتارتے وقت یہ دعا پڑھی جائے (بسم اللہ وباللہ وعلی ملۃ رسول اللہ)

مسئلہ:۔ میت کو قبلہ کی روبقبلہ یعنی قبلہ کی جانب اسکا منہ کر کے لٹایا جائے۔

مسئلہ:۔ قبر کو اندر سے پختہ نہ کیا جائے باہر سے پختہ کرنے میں کوئی حرج نہیں (بہار شریعت)

مسئلہ:۔ مستحب تو یہ ہے کہ میت کو دفن کرنے کے بعد اسکے سرہانے "الم سے مفلحوں تک اور پائنتی کی طرف امن الرسول" سے آخر سورت تک پڑھا جائے۔

marfat.com

مسئلہ :۔زیارت قبور مستحب ہے ہر ہفتے میں ایک دن زیارت کرے جمعہ یا جمعرات یا ہفتہ یا پیر کے روز ہاں سب سے افضل جمعہ کا دن ہے۔

مسئلہ:۔عورت کو زیارت قبور سے روکنا اسلم یعنی زیادہ بہتر ہے (فتاوی رضویہ)

## جنازہ پڑھانیکا زیادہ حقدار کون ہے؟

نماز جنازہ پڑھانے کا زیادہ حق بادشاہ کو ہے پھر اس کا نائب پھر قاضی دراصل نماز کا حق میت کے ورثاء کو حاصل ہے لیکن امام اور بادشاہ وغیرہ کی امانت عظمی کے پیش نظر ان کو مقدم کیا گیا

اس کے بعد محلے کا امام اور پھر ولی زیادہ حق رکھتا ہے (طحطاوی علی المراقی)

اگر محلے کا امام ولی سے افضل ہو تو امام ولی پر مقدم ہے ورنہ ولی کو زیادہ حق ہوگا اور جس شخص کو آگے ہونے کا حق ہے وہ دوسرے کو اجازت دے سکتا ہے اور اگر اس کے غیر نے (اجازت کے بغیر) پڑھائی تو اس کو لوٹانے کا حق ہے اگر چاہے البتہ جن لوگوں نے اس کے غیر کے پیچھے پڑھی ہے وہ نہ لوٹائیں۔

علامہ نورالدین علی مقدسی رحمتہ اللہ فرماتے ہیں میت کا باپ اور بیٹا ہوں تو باپ کو آگے کیا جائے کیونکہ جنازہ سے مقصود دعا ہے اور بیٹے کے حق میں باپ کی دعا زیادہ قبول ہوتی ہے حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ سے مروی ہے نبی اکرم ﷺ نے فرمایا تین دعائیں (جلدی) قبول ہوتی ہیں ۔مظلوم کی دعا مسافر کی دعا اور بیٹے کے حق میں باپ کی دعا اور جس شخص کو آگے ہونیکا حق ہے وہ اس سے زیادہ حق رکھتا ہے جس کے بارے میں میت نے وصیت کی ہے کہ وہ اس کی نماز جنازہ پڑھائے اور اسی قول پر

marfat.com

فتویٰ ہے۔ کیونکہ ان کی طرف سے فرضیت ادا ہوگئی اور جنازہ بطور نفل نہیں پڑھا جاتا۔

مسئلہ:۔ زیارت قبور کے وقت گیارہ مرتبہ سورۃ اخلاص پڑھ کر مُردوں کو ثواب پہنچانے سے سب مُردوں کو برابر ثواب ملتا ہے۔

مسئلہ:۔ جنازہ قبر سے قبلہ کی جانب رکھنا مستحب ہے اور مردہ کو بھی قبلہ کیجانب سے قبر میں اتارا جائے یوں نہیں کہ قبر کی پائنتی کی طرف رکھیں اور سر کی جانب سے قبر میں لائیں۔

مسئلہ:۔ عورت کو قبر میں اتارنے والے محرم ہوں یہ نہ ہوں تو رشتہ دار اور اگر کوئی رشتہ دار بھی نہ ہو تو پھر کسی متقی پرہیزگار اجنبی کے قبر میں اتارنے میں کوئی حرج نہیں (عالمگیری)

## نفلی نمازیں

## نفلی نمازیں اور انکے فضائل

**نماز تہجد** :اس نماز کی فضیلت کا اندازہ اس حدیث پاک سے لگایا جاسکتا ہے کہ حضور نبی اکرم ﷺ نے فرمایا کہ یہ نماز اللہ تعالیٰ کے ہاں مقبول ہے نفل نمازوں میں سب سے زیادہ اسکا ثواب ہے اور پھر فرمایا تہجد کی نماز اپنے اوپر لازم کرلو اسلئے کہ یہ عادت نیکوں کی ہے جو تم سے پہلے تھے اور یہ اللہ تعالیٰ کے نزدیک کرنیوالی ہے اور گناہ سے روکنے کا ذریعہ ہے اور گناہوں کو مٹاتی ہے اور مرض مٹانے والی ہے۔

نماز تہجد کی کم از کم دو اور زیادہ سے زیادہ بارہ رکعتیں ہیں جو شخص نماز تہجد پڑھے گا اسکے چہرے پر نور اور گفتگو میں تاثیر ہوگی۔

## صلوۃ اللیل

رات کو بعد نماز عشاء سونے سے پہلے جو نوافل پڑھے جائیں انکو صلوۃ اللیل

(رات کی نماز) کہتے ہیں رات کے نوافل دن کے نوافل سے زیادہ افضل ہیں

حدیث پاک میں ہے فرضوں کے بعد افضل نماز رات کی نماز ہے اس نماز کی رکعتوں کی کوئی تعداد معین نہیں جتنی اللہ توفیق دے پڑھ لیں۔

## نماز اشراق

ترمذی شریف میں حضرت انس رضی اللہ تعالی عنہ سے مروی ہے کہ نبی اکرم ﷺ نے ارشاد فرمایا جو شخص فجر کی نماز پڑھ کر ذکر خدا میں مشغول رہا یہاں تک کہ آفتاب بلند ہو گیا تو دو رکعتیں اشراق کی پڑھنے والا عبادت گزاروں میں لکھا جاتا ہے اور چھ رکعتیں پڑھے وہ پرہیز گاروں میں لکھا جاتا ہے اور بارہ رکعتیں پڑھنے والے کا گھر جنت میں بنا دیا جاتا ہے (طبرانی)

## چاشت

اس نماز کا وقت سورج بلند ہونے سے لیکر زوال یعنی نصف النہار تک ہے اور بہتر یہ ہے کہ چوتھائی دن چڑھے پڑھی جائے (ردالمختار)

حدیث مبارکہ میں اس نماز کی بہت فضیلت آئی ہے امام ترمذیؒ حضرت ابودردا اور ابوزر سے روایت کرتے ہیں کہ نبی اکرم ﷺ نے فرمایا کہ اللہ عزوجل فرماتا ہے اے ابن آدم! شروع دن میں میرے لئے چار رکعتیں پڑھ لے آخر دن تک میں تیری کفایت فرماؤں گا طبرانی میں حضرت ابودردا سے مروی ہے کہ آپ ﷺ نے فرمایا کہ جس نے چاشت کی دو رکعتیں پڑھیں وہ غافلین میں نہیں لکھا جائیگا۔ اور جو چار پڑھے عابدین میں لکھا جائے گا، اور جو چھ پڑھے اس دن اسکی کفایت کی گئی اور جو آٹھ

marfat.com

پڑھے اللہ تعالیٰ اس کے لیے جنت میں ایک محل بنائے گا۔

ابن ماجہ میں حضرت ابوھریرہ رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ حضور ﷺ نے فرمایا جس نے چاشت کی دو رکعتوں کی محافظت کی اس کے گناہ بخش دیئے جائیں گے اگرچہ سمندر کی جھاگ کے برابر ہوں۔

مسئلہ:۔ چاشت کی کم از کم دو رکعتیں اور زیادہ بارہ رکعتیں ہیں۔

## صلوۃ التسبیح

نبی اکرم ﷺ نے حضرت عباس رضی اللہ عنہ سے فرمایا اے چچا کیا میں تم کو بخشش حاصل کرنے کا ذریعہ نہ بتاؤں۔ کیا تمہارے ساتھ احسان نہ کروں دس خصلتیں ہیں کہ جب کرو تم تو اللہ تعالیٰ تمہارے گناہ بخش دے گا، اگلا پچھلا پرانا نیا جو بھول کر کرلیا اور قصداً کیا چھوٹا بڑا پوشیدہ اور ظاہر اس کے بعد نماز تسبیح کی ترکیب تعلیم فرمائی پھر فرمایا کہ اگر تم سے ہو سکے تو ہر روز ایک بار پڑھو اور اگر روزانہ نہ پڑھ سکو تو ہر جمعہ میں ایک بار پڑھو اور اگر یہ بھی نہ ہو سکے تو ہر مہینے میں ایک بار پڑھو اور اگر یہ بھی نہ کر سکو تو سال میں اک بار پڑھو اور اگر یہ بھی نہ ہو سکے تو عمر میں ایک بار پڑھو۔

## نماز تسبیح پڑھنے کا طریقہ

پہلے نیت کر کے اللہ اکبر کہہ کر ثناء پڑھے اور پھر یہ تسبیح سبحان اللہ والحمد للہ ولا الہ الا اللہ واللہ اکبر۔ پندرہ بار، پھر تعوذ اور تسمیہ (اعوذ باللہ) بسم اللہ اور الحمد (فاتحہ) کوئی سورۃ پڑھ کر دس مرتبہ پھر یہی تسبیح پڑھیں۔ پھر رکوع میں جائے اور سبحان ربی العظیم کے بعد دس مرتبہ یہی تسبیح پڑھے پھر رکوع سے سر اٹھا کر تسمیع وتحمید کے بعد دس مرتبہ

marfat.com

یہی تسبیح پڑھے پھر سجدے میں جائے سجدے کی تسبیح کے بعد دس مرتبہ یہی تسبیح پڑھے پھر سجدے سے سر اٹھائے دونوں سجدوں کے درمیان دس مرتبہ یہی تسبیح کہے۔ پھر دوسرے سجدہ میں جائے اور تسبیح سجدہ کے بعد دس مرتبہ یہی پڑھے اس طرح پہلی رکعت مکمل کرے پھر دوسری رکعت کے لیے اٹھ کر کھڑا ہو تو پہلی مرتبہ پندرہ مرتبہ یہی تسبیح کہے باقی جن مقامات پر پہلی رکعت میں تسبیح کہی تھی کہے اور چاروں رکعتیں مکمل کرے۔ اسطرح ہر رکعت میں ۷۵ بار اور چاروں رکعتوں میں تین سو بار تسبیح پڑھی جائیگی۔

نوٹ: تسبیحات کو خیال سے پڑھے چند مرتبہ زیادہ ہو جانے میں کوئی حرج نہیں کم نہیں ہونی چاہیں

چاروں رکعتوں میں الھکم التکاثر۔ والعصر۔ قل یایھا الکافرون۔ قل ھواللہ احد۔ بالترتیب پڑھنا سنت ہے۔ ان کے علاوہ پڑھنے میں کوئی حرج نہیں

## صلوۃ اوابین

مغرب کی نماز کے بعد کم سے کم چار یا چھ یا زیادہ سے زیادہ بیس رکعتیں پڑھنا انتہائی اجر و فضیلت کا موجب ہے۔ حدیث پاک میں آتا ہے۔ کہ جو شخص مغرب کی نماز کے بعد چھ رکعتیں پڑھے اسکے سبب گناہ بخش دئے جاتے ہیں اگرچہ سمندر کی جھاگ کے برابر ہوں (طبرانی) اور جو بیس رکعتیں پڑھے اللہ تعالی اسکے لئے جنت میں ایک گھر بنا دیتا ہے (ترمذی)

## تحیۃ الوضوء

وضو کے بعد اعضاء خشک ہونے سے پہلے دو رکعت نفل پڑھنا مستحب ہے (صحیح مسلم شریف) میں ہے کہ نبی اکرم ﷺ نے ارشاد فرمایا جو شخص وضو کرے اور ظاہر

marfat.com

باطن کے ساتھ متوجہ ہو کر دو نفل پڑھے اس کیلئے جنت واجب ہو جاتی ہے۔

## مسجد کے فضائل

تحیۃ المسجد: مسجد میں داخل ہونے کیلئے دو رکعت نفل پڑھنا سنت ہے جو شخص نفل نہ پڑھ سکے وہ چار مرتبہ۔

سُبْحَانَ اللّٰہِ وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ وَلَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاللّٰہُ اَکْبَرُ ○

## آداب مسجد

یبنی آدم خذوا زینتکم عند کل مسجد و کلو واشربوا ولاتسرفوا انه لایحب المسرفین (ب۸اعراف:۶۲)

ترجمہ: اے اولاد آدم اپنے آپ کو اچھا بناؤ جب مسجد میں جاؤ کھاؤ پیو مگر حد سے نہ بڑھو۔ بیشک حد سے بڑھنے والے کو اللہ پسند نہیں کرتا۔

وعن ابی هریرة قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم من غدا الی المسجد او راح اعد الله له نزله من الجنة کلما غدا او راح

ترجمہ: حضرت ابوہریرہ رضی اللہ عنہ روایات کرتے ہیں کہ رسول اللہ ﷺ نے فرمایا جو صبح اول دن میں یا آخر دن میں مسجد میں گیا اللہ تعالیٰ اسکی مہمانی کرے گا صبح کے وقت یا آخر دن میں (یعنی جس وقت بھی وہ مسجد میں گیا ہو) (بخاری)

حضور نبی اکرم ﷺ کا ارشاد ہے مسجد میں جھاڑو دینا مسجد کو پاک صاف رکھنا مسجد کا کوڑا کرکٹ باہر پھینکنا مسجد میں خوشبو سلگانا بالخصوص جمعہ کے دن مسجد کو خوشبو میں بسانا جنت میں لے جانے والے کام ہیں (ابن ماجہ)

marfat.com

ایک اور حدیث میں ہے کہ نبی ﷺ نے یہ بھی فرمایا کہ مسجد کا کوڑا کرکٹ صاف کرنا حسین آنکھوں والی حور کا مہر ہے (طبرانی)

وعن انس قال قال رسول الله ﷺ عرضت علی اجود امتی حتی النزلة یخرجها الرجل من المسجد عرضمت علی ذنوب امتی فلم ارذنبا اعظم من سورة من القران او اية رجل ثم نسیها (ترمذی۔ابوداود)

ترجمہ:۔ حضرت انس رضی اللہ عنہ روایت کرتے ہیں کہ رسول اللہ ﷺ نے فرمایا میرے سامنے میری امت کے اعمال خیر پیش کئے گئے یہاں تک کہ اس کے بارے بھی جو کہ کوڑا یا مٹی مسجد سے کوئی نکالتا ہے اور میرے سامنے میرے امتیوں کے گناہ پیش کئے گئے لیکن اس سے بڑا گناہ میں نہیں دیکھا کہ کسی شخص نے ایک سورہ یا آیت کو یاد کر کے اس کو بھلا دیا ہو (ترمذی۔ابوداؤد)

وعن الحسن مرسلا قال قال رسول الله ﷺ یاتی علی الناس زمان یکون حدیثهم فی مساجدهم فی امر دنیاهم فلاتجالسوهم فلیس لله فیهم حاجة (بیہقی؛شعیب الایمان)

ترجمہ: حضرت حسنؓ سے مرسلاً روایت ہے کہ رسول اللہ ﷺ نے فرمایا لوگوں پر ایک زمانہ آئے گا کہ ان کی باتیں مسجدوں میں ہوں گی دنیا کے متعلق، انکے پاس نہ بیٹھو ان میں اللہ کو کچھ حاجت نہیں (بیہقی: شعیب الایمان)

ترجمہ: حضرت حسنؓ سے مرسلاً سے روایت ہے کہ رسول ﷺ نے فرمایا لوگوں پر ایک زمانہ آئیگا کہ ان کی باتیں مسجدوں میں ہوں گی دنیا کے متعلق ان کے پاس نہ بیٹھو ان میں اللہ کو کچھ حاجت نہیں (بیہقی)

marfat.com

ترجمہ: حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ تعالی عنہ سے روایت ہے کہ رسول ﷺ نے فرمایا۔ جس وقت تم دیکھو کسی شخص کو کہ وہ بیچتا ہے یا خریدتا ہے مسجد میں کہو اللہ تیری تجارت میں نفع نہ دے اور اگر تم دیکھو کہ کوئی شخص اپنی گمشدہ چیز مسجد میں تلاش کر رہا ہے کہو اللہ تعالی تجھ پر نہ لوٹائے (ترمذی شریف)

ترجمہ: حضرت معاویہ بن قرہ اپنے باپ سے روایت کرتے ہیں کہ بے شک نبی ﷺ نے ان دونوں درختوں کے کھانے سے منع کیا ہے یعنی لسن اور پیاز اور فرمایا جو شخص ان دونوں کو کھائے ہماری مسجد کے قریب نہ آئے اور فرمایا اگر تم نے ضروری طور پر ان کو کھانا ہے تو پکا کر کھاؤ (ابوداؤد)

ترجمہ: حضرت عمرو بن شعیب اپنے باپ سے وہ اپنے دادا سے روایت بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ ﷺ نے مسجد میں شعر پڑھنے خرید و فروخت کرنے اور جمعہ کے دن مسجد میں نماز سے پہلے حلقہ باندھ کر بیٹھنے سے منع فرمایا ہے (ابوداؤد)

ترجمہ: حضرت عثمان رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ رسول اللہ ﷺ نے فرمایا جو شخص اللہ کے لیے مسجد بنائے اللہ تعالی اسکا گھر جنت میں بناتا ہے (بخاری)

marfat.com

# تیسرا رُکن: زکوٰۃ

## زکوۃ کا لغوی معنی

لغوی اعتبار سے زکوۃ کا لفظ دو معنوں کا حامل ہے۔اس کا ایک معنی پاکیزگی طہارت اور پاک صاف ہونے یا کرنے کا ہے اور دوسرا معنی نشوونما اور بالیدگی کا ہے۔جس میں کسی چیز کے بڑھنے، پھلنے اور فروغ پانے کا مفہوم پایا جاتا ہے زکوۃ کے پہلے معنی کی وضاحت میں جو پاکیزگی وطہارت پر دلالت کرتا ہے قرآن حکیم کا یہ ارشاد محل غور فکر ہے۔

قدافلحَ مَن زکّٰھا وقدخابَ مَن دسّٰھا۔ (القرآن الشمس)

تحقیق جس نے تزکیہ نفس کیا وہ کامیاب ہوا۔اور جو مصیبت میں مبتلا ہو وہ خائب وخاسر ہوا۔

اس آیہ کریمہ میں دینوں واخری کامیابی کیلئے طہارت وتزکیہ نفس کا جو تصور پیش کیا گیا ہے اسے مدنظر رکھنے سے زکوۃ کا اطلاق راہ خدا میں خرچ کیے جانے والے اس مال پر ہوتا ہے جو دولت کو ہر قسم کا الائشوں سے پاک وصاف کر دیتا ہے۔

بقول اقبال:

کرتا ہے دولت کو ہر آلودگی سے پاک و صاف
منعموں کو مال و دولت کا بناتا ہے امین

زکوۃ کا دوسرا معنی نشوونما پانا ہے بڑھنا اور پھلنا ہے جیسے وہ کھیتی جو بہت بڑھ رہی ہو اور پھل پھول رہی ہو اس کے بارے میں کہا جاتا ہے۔

marfat.com

زکاء الزرع کھیتی نے نشوونما پائی۔

اس مفہوم کو پیش نظر رکھیں تو زکوۃ کے لفظ کا اطلاق اس مال پر ہوتا ہے جس کو خدا کی راہ میں خرچ کرنے سے اس میں کمی واقع نہیں ہوتی۔ بلکہ وہ خدا کا فضل اور برکت شامل ہونے کی وجہ سے بڑھتا رہتا ہے۔

## فرضیت زکوۃ کا سبب اور غرض وغایت

قرآن کریم نے متعدد مقامات پر ان عوامل کی نشاندہی فرمائی ہے جو فرضیت زکوۃ کا سبب ہے۔ اور باری تعالی اھل ایمان سے براہ راست مخاطب ہوکر یوں ارشاد فرماتے ہیں۔

یا ایھا الذین اٰمنوا انفقوا ممارزقنٰکم (القرآن البقرہ ۲)

(اے ایمان والو ہم نے جو تمہیں رزق دیا اس میں سے خرچ کرو)

دوسرے مقام پر دولت رشد وھدایت اور تقویٰ سے بہرہ یاب ایمانداروں کی علامات بیان کرتے ہوئے ارشاد فرمایا گیا۔

ھدی للمتقین الذین یومنون بالغیب ویقیمون الصلوۃ وممارزقنٰھم ینفقون (القرآن ۔البقرۃ 2,3)

قرآن متقین کیلئے ھدایت ہے جو غیب پر ایمان رکھتے نماز قائم کرتے ہیں اور ہم نے انہیں جو رزق دیا ہے اس میں سے خرچ کرتے ہیں۔ اسطرح ایک اور مقام پر روئے خطاب پھر ایمان والوں کی طرف کرتے ہوئے اللہ جل مجدہ نے ارشاد فرمایا۔

یاایھاالذین اٰمنوا انفقوا من طیبٰت ما کسبتم (القرآن، البقرہ ۲: ۲۶۷)

marfat.com

اے ایمان والو جو پاکیزہ تم کماؤ اس میں سے (اللہ کی راہ) میں خرچ کرو اس پیرایہ میں مزید تاکید کے ساتھ انفاق مال کی ضرورت پر ان الفاظ سے زور دیا گیا۔

وأنفقوا مما رزقنٰكم مِن قبل ان يأتي أحدَكُم المَوتُ

(القرآن المنافقون ۶۳، ۱۰)

ہم نے تمھیں جو رزق عطا کیا اسے اس سے پہلے کہ تمھیں موت آجائے (اللہ کی راہ میں) خرچ کرلو۔

## مسائل زکوۃ کا بیان

نماز کی طرح زکوۃ بھی اسلام کا رکن ہے نماز کی طرح اس کے بارے میں بھی سینکڑوں آیتیں اور احادیث صحیحہ آئی ہیں۔ جن میں زکوۃ ادا کرنے کی سخت تاکید آئی ہے اور نہ ادا کرنے والے پر طرح طرح کے دنیا و آخرت کے عذابوں کی وعیدیں آئی ہیں۔

مسئلہ۔ زکوۃ فرض ہے اس کا انکار کرنے والا کافر اور نہ ادا کرنے والا فاسق و جہنمی ہے اور ادا کرنے میں بلا عذر دیر کرنے والا گنہگار و مردود الشہادۃ ہے۔

(فتاوی عالمگیری)

مسئلہ۔ اللہ کے لئے مال کے حصہ کو، شریعت نے مقرر کیا ہے کسی فقیر کو مالک بنا دینا شریعت میں زکوۃ کہلاتا ہے۔

## زکوۃ فرض ہونے کی شرائط

## زکوۃ فرض ہونے کیلئے چند شرطیں ہیں

1۔ مسلمان ہونا۔ زکوۃ مسلمان پر فرض ہے کافر پر فرض نہیں

marfat.com

2۔بالغ ہونا۔زکوۃ بالغ مسلمان پر فرض ہے نابالغ زکوۃ کر فرضیت سے مستثنیٰ ہے۔

3۔عاقل ہونا۔زکوۃ عاقل، بالغ مسلمان پر فرض ہے دیوانے پر فرض نہیں۔

4۔آزاد ہونا۔یعنی لونڈی، غلام پر زکوۃ فرض نہیں

5۔مالک نصاب ہونا۔شریعت کے مقرر کردہ نصاب سے کم مال کے مالک پر زکوۃ فرض نہیں ہے۔

6۔پورے طور پر مالک ہونا۔صاحب نصاب کا مال پر قبضہ بھی ہو تب زکوۃ فرض ہے۔مثلاً کسی نے اپنا مال زمین میں دفن کر دیا اور جگہ بھول گیا۔پھر برسوں کے بعد جگہ یاد آئی، اور مال مل گیا، جس وقت مال گم ہوا تھا اس زمانہ کی زکوۃ واجب نہیں۔کیونکہ نصاب کا مالک تو تھا چونکہ اس پر قبضہ نہیں تھا اس لئے پورے طور پر مالک نہ تھا۔

7۔نصاب کا حاجت اصلیہ سے فارغ ہونا۔حاجت اصلیہ یعنی آدمی کو زندگی بسر کرنے میں جن چیزوں کی ضرورت ہوتی ہے جیسے رہنے سہنے کا مکان جاڑے گرمیوں کے کپڑے گھریلوں سامان یعنی کھانے پینے اور کھانا پکانے کے برتن چارپائیاں کرسیاں میز، چولھے، پنکھے، کام کرنے کی مشین وغیرہ اگرچہ یہ سب سامان لاکھوں روپے کے ہوں مگر ان پر زکوۃ نہیں کیونکہ یہ مال حاجت اصلیہ سے فارغ نہیں ہے۔

9۔مال نامی ہونا۔یعنی مال بڑھنے والا خواہ حقیقۃً بڑھنے والا مال ہو جیسے مال تجارت اور چراتی پر چھوڑے ہوئے جانور یا حکماً بڑھنے والا جیسے سونا چاندی کہ یہ اس لیے پیدا کئے گئے ہیں کہ ان سے چیزیں خریدی جائیں اور بیچی جائیں تاکہ نفع ہونے سے یہ بڑھتے رہیں لہذا سونا چاندی جس حال میں بھی ہوں خواہ زیورات اور برتنوں کی شکل میں ہوں یا زمین میں دفن ہوں ہر حال میں یہ مال نامی یعنی بڑھنے والا مال

ہے اوران کی زکوۃ فرض نہیں ہوگی۔ بلکہ ایک سال تک وہ نصاب ملک میں باقی رہے تو سال پورا ہونے کے بعداس کی زکوۃ نکالی جائے گی (فتاوی عالمگیری ۱: ۱۴۰-۱۶۴)

سونے کا نصاب ساڑھے سات تولے ہے اور چاندی کا نصاب ساڑھے باون تولے ہے سونا چاندی میں چالیسواں حصہ نکال کر بطور زکوۃ ادا کرنا فرض ہے۔ یہ ضروری نہیں کہ سونے کی زکوۃ میں سونا اور چاندی کی زکوۃ میں چاندی ہی دی جائے گی یہ بھی جائز ہے کہ بازار بھاؤ سے سونے چاندی کی قیمت لگا کر روپیہ زکوۃ میں دیں۔

## زیورات کی زکوۃ

حدیث شریف میں ہے کہ دو عورتیں حضور اقدس ﷺ کی خدمت مبارکہ میں حاضر ہوئیں ان کے ہاتھوں میں سونے کے کنگن تھے آپ ﷺ نے ارشاد فرمایا کہ کیا تم ان زیورات کی زکوۃ ادا کرتی ہو۔ عورتوں نے عرض کی جی نہیں

حضور ﷺ نے ارشاد فرمایا: کیا تم اسے پسند کرتی ہو کہ اللہ تعالی تمھیں آگ کے کنگن پہنائے؟

عورتوں نے عرض کیا نہیں یارسول اللہ ﷺ حضور ﷺ نے فرمایا تم ان زیورات کی زکوۃ ادا کرو (ترمذی شریف)

جن زیورات کی مالک عورت اور خواہ وہ میکے سے لائی ہو یا اس کے شوہر نے اس کو زیورات دے کر مالک بنایا ہو تو ان زیورات کی زکوۃ عورت پر فرض ہے اور جن زیورات کا مالک مرد ہو یعنی عورت کو صرف پہننے کیلئے دیا گیا ہے مالک نہیں بنایا تو ان زیورات کی زکوۃ مرد کے ذمہ ہے عورت پر نہیں (فتاوی رضویہ)

marfat.com

# سونے چاندی کی زکوۃ

۱۔اگر کسی کے پاس تھوڑی چاندی اور تھوڑا سونا ہے اور سونا اور چاندی میں بھی کوئی بقدر نصاب نہیں تو ایسی صورت میں سونے کی قیمت کی چاندی یا چاندی کی قیمت کا سونا مان کر دونوں کو ملائیں پھر اگر ملانے پر بھی بقدر نصاب نہ ہو تو زکوۃ نہیں اور اگر سونے چاندی کی قیمت چاندی ملائیں تو بقدر نصاب ہو جاتا ہے اور چاندی کی قیمت کا سونا سونے میں ملائیں تو بقدر نصاب نہیں ہوتا تو واجب ہے کہ جس صورت میں نصاب پورا ہو جاتا ہے وہ کریں (درمختار وردالمحتار)

۲۔تجارتی مال وسامان کی قیمت لگائی جائے پھر اس سے اگر سونے یا چاندی کا نصاب پورا ہو تو اس کے حساب سے زکوۃ نکالی جائے (فتاوی عالمگیری ۱:۱۶۸)

۳۔اگر کسی کے پاس سونا چاندی نہ ہو نہ مال تجارت ہو بلکہ صرف نوٹ اور روپے ہوں تو کم سے کم اتنے روپے پیسے اور نوٹ ہوں کہ بازار میں ان سے ساڑھے سات تولے سونا یا ساڑھے باون تولہ چاندی خریدی جا سکتی ہو وہ صاحب نصاب ہے اس کو نوٹ اور روپے پیسوں کی زکوۃ کل کا چالیسواں حصہ نکالنا فرض ہے۔

۴۔اگر شروع سال میں نصاب پورا تھا اور آخر سال میں بھی نصاب پورا رہا، درمیان سال میں مال گھٹ کر نصاب سے کم رہ گیا تو کمی کچھ اثر نہ کرے گی بلکہ اس کو پورے مال کی زکوۃ دینا پڑے گی۔

۵۔روپے پیسوں کی زکوۃ میں روپے پیسے ہی دینا ضروری نہیں بلکہ جتنے روپے زکوۃ کے نکلتے ہیں ان کا غلہ یا کپڑا یا کتابیں یا کوئی بھی سامان خرید کر مستحق زکوۃ کو اس کا مالک بنا دینے سے زکوۃ ادا ہو جائے گی۔

marfat.com

# عشر کا بیان

عشر بھی زکوۃ کی طرح ہے۔

ا۔ جو زمین سے پیدا ہونے والی ہر قسم کی اشیاء مثلاً گیہوں، جو، چنا، باجرہ، دھان، سرسوں وغیرہ اور ہر قسم کے اناج گنا روئی پٹ سن ہر قسم کی ترکاریاں، پھل پھول میوے سب پر واجب ہے تھوڑا ہو یا زیادہ۔

۲۔ جو پیداوار بارش یا زمین کی نمی سے ہو، اس میں دسواں حصہ واجب ہے۔ اور جو پیداوار چرخہ سے ڈول پمپنگ مشین یا ٹیوب ویل وغیرہ کے پانی سے یا خریدے ہوئے پانی سے پیدا ہو اس میں بیسواں حصہ واجب ہوتا ہے (فتاوی عالمگیری ۱، ۴، ۸)

۳۔ کھیتی کے اخراجات نکال کر عشر نہیں نکالا جائے گا، بلکہ جو کچھ پیداوار ہوئی ان سب کا عشر یا نصف عشر (دسواں یا بیسواں) دینا میں واجب ہے۔ گورنمنٹ کو جو مالگواری (لگان) دی جاتی ہے وہ بھی عشر کی رقم سے ادا نہیں کی جائے گی۔ بلکہ پوری پیداوار کا دسواں یا بیسواں حصہ خدا کی راہ میں نکالنا پڑے گا (فتاوی رضویہ)

۴۔ زمین اگر بٹائی پر دے کر کھیتی کرائی تو زمین والے اور کھیتی کرنے والے دونوں کو جتنی پیداوار ملی ہے اپنے اپنے حصہ کی پیداوار کا دسواں حصہ نکالنا واجب ہے (ردالمحتار ۲:۵۶)

## سائمہ جانوروں کی زکوۃ کا بیان

سائمہ: سائمہ جانور وہ ہے جو سال کے اکثر حصہ میں چر کر گزر بسر کرتا ہو اور اس سے مقصود صرف دودھ یا بچے لینا یا فربہ کرنا ہے۔ اگر گھر میں گھاس لا کر کھلاتے ہوں یا

marfat.com

مقصود بوجھ لادنا یا ہل چلانا وغیرہ جیسے کسی کام میں لانا یا سواری لینا ہے اگر چہ وہ چر کر گزر کرتا ہو وہ سائمہ نہیں۔ اور اس کی زکوۃ واجب نہیں اور اگر تجارت کا جانور جنگل میں چرائی پر ہے تو یہ بھی سائمہ نہیں بلکہ اس کی زکوۃ قیمت لگا کر ادا کی جائے گی کیونکہ یہ تجارت کا مال ہے۔

تین قسم کے جانوروں کی زکوۃ واجب ہے جبکہ وہ سائمہ ہوں اونٹ گائے اور بکری لہذا ان تینوں کے نصاب اور ان تینوں کی زکوۃ کی الگ الگ مقدار کا بیان اس طرح ہے۔

## اونٹ کی زکوۃ

ا۔اونٹوں کی زکوۃ کا کم از کم نصاب پانچ اونٹ ہیں۔ پانچ اونٹ سے کم ملکیت پر زکوۃ واجب نہیں اور جب پانچ یا پانچ سے زیادہ ہوں مگر پچیس تک ہر پانچ پر ایک بکری زکوۃ میں دینا واجب ہے۔ یعنی پانچ اونٹ ہوں تو ایک بکری دس اونٹ ہوں تو دو بکری پندرہ اونٹ ہوں تو تین بکریاں دینا ہوں گی۔

۲۔زکوۃ میں بکری دی جائے وہ سال بھر سے کم کی نہ ہو بکری دی یا بکرا اس کا اختیار ہے (ردالمحتار)

۳۔پچیس سے پینتیس تک اونٹ ہوں تو ایک بنت مخاض یعنی اونٹ کا مادہ بچہ جو ایک سال کا ہو چکا ہو اور دوسرے میں ہو چھتیس سے پنتالیس اونٹ ہوں تو ایک بنت لبون یعنی اونٹ کا مادہ بچہ جو دو سال کا ہو چکا ہو اور تیسرے میں ہو چھیالیس سے ساٹھ تک میں ایک حقہ یعنی اونٹنی جو تین برس کی ہو چکی ہو اور چوتھے سال میں ہو، اکسٹھ سے پچھتر تک میں ایک جذعہ یعنی چار سال کی اونٹنی جو پانچویں برس میں ہو چھہتر سے نوے

marfat.com

تک اونٹ ہوں تو دو حقہ اور ہر پانچ پر ایک بکری مثلاً ایک سو پچیس اونٹ میں دو حقہ اور ایک بکری اور ایک سو تیس اونٹ میں دو حقہ اور دو بکریاں وعلی ہذا القیاس پھر ایک سو پچاس اونٹ میں تین حقہ اور اگر اس سے زیادہ اونٹ ہوں تو ان میں ویسا ہی کریں جیسا شروع میں کیا تھا۔ یعنی ہر پانچ اونٹ پر ایک بکری اور پچیس میں بنت مخاص چھتیس میں بنت لبون، یہ ایک سو پچانوے تک کا حکم ہوگا یعنی اتنے میں تین حقہ اور ایک بنت لبون پھر ایک سو چھیانوے سے دو سو چار اونٹ تک چار حقہ اور یہ بھی اختیار ہے کہ پانچ بنت لبون دے دیں پھر دو سو اونٹ کے بعد وہی طریقہ برتیں جو ایک سو پچاس کے بعد ہے یعنی ہر پانچ میں ایک بکری پچیس میں بنت مخاص چھتیس میں بنت لبون۔ پھر دو سو چالیس سے دو سو پچاس اونٹ تک پانچ حقہ وعلی ہذا القیاس (ہدایہ وغیرہ عامہ کتب)

۴۔ اونٹ کی زکوۃ میں جس موقع پر ایک یا دو یا تین یا چار سال کا اونٹ کا بچہ دیا جاتا ہے تو ضروری ہے کہ وہ مادہ ہو نر دیں تو مادہ کی قیمت کا ہو ورنہ نر نہیں لیا جائے گا (درمختار)

## گائے کی زکوۃ

گائے کی زکوۃ کا نصاب کم از کم تیس گائے ہیں تیس سے کم گائیں ہوں تو زکوۃ واجب نہیں اور جب تیس پوری ہوں تو ان کی زکوۃ ایک تبیع یعنی سال بھر کا ایک بچھڑا یا تبیعہ یعنی سال بھر کی بچھیا ہے اور گائیں چالیس ہوں تو ایک مُسنّہ یعنی دو سال کا بچھڑا یا مُسنّہ یعنی دو سال کی بچھیا انسٹھ تک یہی حکم ہے۔ پھر ساٹھ گائیوں میں دو تبیع یا تبیعہ پھر ہر تیس تک گائیوں میں ایک تبیعہ اور ہر چالیس گائیوں میں ایک مسنہ اور اسی گائیوں

marfat.com

میں دو سنے دعلی ہذا القیاس اور جس جگہ تیس اور چالیس دونوں ہو سکتے ہوں وہاں اختیار ہے کہ تبیع زکوۃ میں یا مسنہ مثلاً ایک سو بیس گائیوں میں اختیار ہے۔ کہ چار تبیع دیں یا تین مسنے۔

بھینس گائے کے حکم میں ہے اگر کسی کے پاس گائے بھینس دونوں ہوں تو نصاب میں ملائی جائیں گی مثلاً بیس گائیں ہیں اور دس بھینسیں تو دونوں ملا کر تیس ہو گئی لہذا زکوۃ واجب ہو گئی (فتاوی عالمگیری)

گائیں بھینس کی زکوۃ میں اختیار ہے کہ نر زکوۃ میں دیا جائے یا مادہ گائیں افضل یہ ہے کہ اگر گائیں زیادہ تعداد میں ہوں تو بچھیا اور اگر بیل زیادہ تعداد میں ہوں تو بچھڑا (فتاوی عالمگیری)

## بکریوں کی زکوۃ

بکریوں کا نصاب کم از کم چالیس بکریاں ہیں چالیس سے کم بکریاں ہوں تو زکوۃ واجب نہیں اگر پوری چالیس بکریاں ہوں تو ایک بکری زکوۃ میں دینا واجب ہے اور یہی حکم ایک سو بیس بکریاں تک ہے یعنی ان میں بھی وہی ایک بکری ہے اور ایک سو اکیس میں دو اور دو سو ایک میں تین اور چار سو میں چار۔ پھر ہر سو بکریوں میں ایک بکری زکوۃ میں ادا کریں۔

اختیار ہے کہ زکوۃ میں بکری یا بکرا جو کچھ بھی ہو یہ ضروری ہے کہ وہ سال بھر سے کم کا نہ ہو (درمختار)

بھیڑ دنبہ بکری کے حکم میں ہے اگر ایک سے نصاب پورا نہ ہو تو دوسرے کو ملا کر

marfat.com

پورا کریں مثلاً بیس بکریوں اور بیس بھیڑ کو ملا کر چالیس پورا ہو گیا اور ایک بکری زکوۃ میں واجب ہوگئی اور زکوۃ میں بکری بھی دے سکتے ہیں اور بھیڑ بھی دونوں کا ایک ہی حکم ہے۔

## تجارتی سامان کی زکوۃ

تجارت کے سامان کی قیمت لگا کر ان کی زکوۃ ادا کی جائے گی۔ مال تجارت میں سال گزرنے پر جو قیمت ہے اس کا اعتبار ہے مگر شرط یہ ہے کہ شروع سال میں اس کی قیمت ساڑھے باون تولے چاندی یا ساڑھے سات تولے سونے کی مقدار کے برابر ہو تو سال گزرنے پر اس سامان تجارت کی زکوۃ چالیسواں حصہ ادا کرنا ہوگی۔ اور اگر دوکان میں مختلف قسم کے اسباب ہوں تو سب سامانوں کی قیمتوں کا مجموعہ ساڑھے باون تولے چاندی یا ساڑھے سات تولے سونے کی قیمت کی مقدار ہو یعنی جب کہ اس کے پاس یہی سامان تجارت ہو اور اگر سامان تجارت کے علاوہ اسی کے پاس سونا چاندی بھی ہو تو ان سب کو ملا کر حساب سے زکوۃ ادا کرنا واجب ہوگی (فتاوی عالمگیری)

تجارت کے سامان کی قیمت اس جگہ کی لگائی جائے گی جہاں وہ سامان موجود ہے اگر مال جنگل میں ہے تو اس جنگل کے قریب جو آبادی ہے وہاں اس کی جو قیمت ہو اس کا اعتبار کیا جائے گا (فتاوی عالمگیری)

کرایہ پر اٹھانے کیلئے دیگیں یا دوسرے برتن یا دریاں گدے یا کرسیاں میز یا پلنگ اور مسہریاں وغیرہ اسکے پاس ہوں تو اگرچہ ان سامانوں کی قیمت ہزاروں روپے ہو مگر ان سامانوں میں کوئی زکوۃ واجب نہیں یوں ہی اگر کرایہ پر اٹھانے کیلئے

marfat.com

مکان اور دکانیں ہوں تو ان مکانوں اور دوکانوں کی زکوۃ نہیں ہاں ان کے کرایوں کی جو آمدنی ہوگی اگر وہ نصاب کے برابر ہو اور اس پر ایک سال گزر جائے تو اس کی زکوۃ ادا کرنا ہوگی اسی طرح موٹریں، بسیس، ٹرک وغیرہ اگر کرایہ پر چلانے کیلئے اس کے پاس ہوں تو اگر چہ یہ لاکھوں روپے کے ہوں مگر ان پر کوئی زکوۃ نہیں ہاں البتہ ان سے جو آمدنی ہوگی اگر وہ بقدر نصاب ہو اور اس پر سال گزر جائے تو اس کی زکوۃ ادا کرنا ضروری ہوگی۔

زکوۃ میں مسکین کو روپیہ پیسہ دینا ضروری نہیں بلکہ جتنا روپیہ زکوۃ کا دینا واجب ہے اگر اس رقم کا کوئی سامان خرید کر مسکینوں کو دے دیں مثلاً سلائی مشینیں یا دستکاری کے کچھ اوزار غریب طالب علموں کو کتابیں کپڑے، کمبل، رضائیاں وغیرہ ہوں تو بھی زکوۃ ادا ہو جائے گی اور یہ روپیہ پیسہ دینے سے افضل ہے اور دینی کتابوں کو زکوۃ میں دینا تو نہایت ہی افضل ہے کہ اس میں خدا کے عائد کردہ فرض زکوۃ کی ادائیگی بھی ہو جائے گی اور مسائل دین کی اشاعت کا ثواب بھی الگ ملے گا کاش مالدار مسلمانوں کو یہ مسئلہ معلوم ہو جائے کہ دینی کتابوں کی اشاعت زکوۃ دینے کا بہترین اور افضل ترین طریقہ ہے واللہ تعالیٰ اعلم۔

## زکوۃ کا مال کن لوگوں کو دیا جائے

جن جن لوگوں کو عشر و زکوۃ کا مال دینا جائز ہے وہ یہ لوگ ہیں۔

مسکین۔ یعنی وہ شخص جس کے پاس کھانے کیلئے غلہ اور پہننے کیلئے کپڑا بھی نہ ہو۔

فقیر۔ یعنی وہ شخص جس کے پاس کچھ مال ہے مگر نصاب سے کم ہے قرضہ دار یعنی وہ

marfat.com

شخص کہ جس کے ذمہ قرض ہو اور اس کے پاس قرض سے فاضل کوئی مال بقدر نصاب نہ ہو۔

مسافر۔جس کے پاس سفر کی حالت میں مال نہ رہا ہوں اسکو بقدر ضرورت زکوۃ کا مال دینا جائز ہے۔

عامل۔یعنی جس کو بادشاہ اسلام نے زکوۃ عشر وصول کرنے کیلئے مقرر کیا ہو۔

مکاتب۔غلام تا کہ وہ مال دے کر آزاد ہو جائے۔

غریب۔مجاہد تا کہ وہ جہاد کا سامان کرے۔(فتاوی عالمگیری)

## کن لوگوں کو زکوۃ کا سامان دینا منع اور کن کو جائز ہے

جن لوگوں کو عشر وزکوۃ کا مال دینا جائز نہیں ان میں سے چند یہ ہے۔

۱۔مالدار یعنی صاحب نصاب جس پر خود زکوۃ فرض ہے۔

۲۔بنی ہاشم یعنی حضرت علی، حضرت جعفر، حضرت عقیل، حضرت عباس، حضرت حارث بن عبدالمطلب رضی اللہ تعالی عنہ کی اولاد کو زکوۃ دینا جائز نہیں۔

(فتاوی عالمگیری ۱:۱۷۷)

۳۔اپنی اصل وفرع یعنی ماں، باپ، دادی، نانی، نانا، وغیرہ اور بیٹا، بیٹی، پوتا، پوتی، نواسہ، نواسی، کو زکوۃ کا مال دینا جائز نہیں۔

۴۔شوہر اپنی عورت کو اور عورت اپنے شوہر کو زکوۃ نہیں دے سکتے۔یونہی صدقہ فطر اور کفارہ بھی ان کو نہیں دے سکتے۔

۵۔مالدار کے نابالغ بچے کو زکوۃ دے سکتے ہیں اور مالدار کی بالغ اولاد کو جب کہ وہ نہ ہو زکوۃ دی جا سکتی ہے

۶۔کسی کافر و مرتد یا بدمذہب کو زکوۃ کا مال دینا جائز نہیں (فتاوی عالمگیر ۱:۱۷۷)

marfat.com

۷۔ بہو داماد اور سوتیلی ماں یا سوتیلی باپ یا زوجہ کی اولاد جو دوسرے شوہر سے ہو یا شوہر کی اولاد جو دوسری بیوی سے ہو اور دوسرے رشتہ داروں کو زکوٰۃ دے سکتے ہیں (ردالمحتار ۲:۲۳)

۷۔ مالدار کی بیوی اگر صاحب نصاب نہیں تو اس کو زکوٰۃ دے سکتے ہیں۔

۸۔ تندرست اور طاقتور آدمی اگر مالک نصاب نہیں تو اس کو زکوٰۃ دینا جائز ہے مگر اس کیلئے سوال کرنا اور بھیک مانگنا جائز نہیں۔

۹۔ زکوٰۃ ادا کرنے میں یہ ضروری ہے کہ جسے دیں اس کو مالک بنادیں اس لیے اگر زکوٰۃ کی رقم سے کھانا پکا کر غریبوں کو بطور دعوت کے کھلا دیا تو زکوٰۃ ادا نہیں ہوئی کیونکہ یہ اباحت ہوئی تملیک نہ ہوئی۔ ہاں اگر کھانا پکا کر کھانا غریبوں کو دے دیں اس کھانے کا مالک بنادیں کہ وہ چاہیں اسے کھائیں یا کسی دوسرے کو دے دیں یا بیچ ڈالیں تو زکوٰۃ ادا ہو جائے گی کیونکہ اس میں تملیک مالک بنا دینا پایا گیا (درمختار و ردالمحتار ۲:۶۲)

۱۰۔ اگر مال زکوٰۃ سے دینی کتابیں خرید کر غریب طلباء کو ان کتابوں کو مالک بنادیں تو یقیناً زکوٰۃ ادا ہو جائے گی اور اعانت دین اور اشاعت اسلام کا اجر عظیم بھی ملے گا کاش اہل دولت اس طرف توجہ کریں کہ یہ ادائے زکوٰۃ کی بہت ہی افضل صورت ہے۔

۱۱۔ فقیر زکوٰۃ کے مال کا مالک ہو جانے کے بعد خود اپنی طرف سے اگر مسجد و مدرسہ کی عمارت میں لگا دے یا میت کے کفن دفن میں خرچ کر دے تو جائز ہے

۱۲۔ جن لوگوں کو زکوٰۃ دینا جائز ہے انہیں اور بھی کوئی صدقہ، فدیہ، نذر کفارہ وصدقہ فطر دینا جائز ہے۔ (جوہرہ)

۱۳۔ زکوٰۃ وصدقہ وغیرہ میں افضل یہ ہے کہ پہلے اپنے بہن بھائیوں کو دے پھر

ان کی اولاد کو پھر چچاؤں اور پھوپھیوں کو پھر ان کی اولاد کو پھر ماموں اور خالاؤں کو پھر ان کی اولاد کو پھر دوسرے رشتہ داروں کو پھر پڑوسیوں کو پھر اپنے پیشہ والوں کو پھر اپنے گاؤں اور شہر کے رہنے والوں کو (جوہرہ، عالمگیری)

۱۴۔ دوسرے شہروں کو زکوۃ بھیجنا مکروہ ہے لیکن اگر وہاں حاجت مند رشتہ دار ہوں تو بھیج سکتا ہے ایسے ہی دوسرے شہر میں اپنے شہر سے زیادہ حاجتمند ہوں یا طالب علموں یا عابدوں کیلئے بھیجے تو سب صورتوں میں دوسرے شہر کو زکوۃ کا مال بھیجنا بلا کراہت جائز ہے (فتاوی عالمگیری، ودرمختار)

۱۵۔ جس کے پاس آج کھانے کو ہے یا وہ تندرست ہے کہ کما سکتا ہے اسے کھانے کیلئے سوال کرنا حلال نہیں اور بغیر مانگے کوئی خود دے تو لینا جائز ہے اور کھانے کو اس کے پاس ہے مگر کپڑا نہیں تو کپڑے کیلئے سوال کر سکتا ہے یوں ہی اگر علم دین کی طلب میں یا جہاد میں مشغول ہے تو اگر چہ تندرست وقوی ہو اور کمانے پر قدرت بھی رکھتا ہو پھر اسے سوال کی اجازت ہے۔ (درمختار)

۱۶۔ مستحب یہ ہے کہ ایک شخص کو اتنا دیں کہ اس دن اس کو سوال کی حاجت نہ پڑے اور یہ اس فقیر کی حالت کے اعتبار سے مختلف ہے اس کے کھانے بال بچوں کی کثرت اور دوسری باتوں کا لحاظ کر کے دے۔ (درمختار)

۱۷۔ علم دین حاصل کرنے والے طالب علموں اور گوشہ نشین غریب علماء کو زکوۃ کا مال دینا افضل ہے کہ اس میں فرض زکوۃ کی ادائیگی بھی ہو جائے گی اور علم دین کی اعانت کا ثواب بھی ملے گا دولت مندوں کو خاص طور پر اس جہت کا دھیان رکھنا چاہیے

marfat.com

## زکوۃ کب فرض ہوئی؟

زکوۃ 2 ہجری میں روزوں سے قبل فرض ہوئی۔ (الدرالمختار)

## زکوۃ کی فرضیت کا انکار کرنا کیسا؟

زکوۃ کا فرض ہونا قرآن سے ثابت ہے اس کا انکار کرنے والا کافر ہے

(ماخوذ از الفتاوی الھندیہ)

## زکوۃ ادا کرنے فوائد (1) تکمیل ایمان کا ذریعہ

زکوۃ دینا تکمیل ایمان کا ذریعہ ہے۔ جیسا کہ حضور پاک ﷺ صاحب لولاک سیاح افلاک ﷺ نے ارشاد فرمایا: تمہارے اسلام کا پورا ہونا یہ ہے کہ تم اپنے مالوں کی زکوۃ ادا کرو۔ (کتاب الصدقات)

ایک مقام پر ارشاد فرمایا: جو اللہ اور اس کے رسول ﷺ پر ایمان رکھتا ہو اسے لازم ہے کہ اپنے مال کی زکوۃ ادا کرے۔ (المعجم الکبیر)

## (2) رحمت الٰہی عزوجل کی برسات

زکوۃ دینے والے پر رحمت الٰہی عزوجل کی چھما چھم برسات ہوتی ہے۔

سورۃ الاعراف میں ہے۔

وَرَحْمَتِیْ وَسِعَتْ كُلَّ شَیْءٍ فَسَاَكْتُبُهَا لِلَّذِیْنَ یَتَّقُوْنَ وَیُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ

(7.156)

اور میری رحمت ہر چیز کو گھیرے ہے تو عنقریب میں نعمتوں کو ان کیلئے لکھ دوں گا جو ڈرتے ہیں اور زکوۃ دیتے ہیں۔

marfat.com

## (3) تقوی و پرہیز گاری کا حصول

زکوۃ دینے سے تقوی حاصل ہوتا ہے۔قرآن پاک میں متقین کی علامت میں سے ایک علامت یہ بھی بیان کی گئی ہے چنانچہ ارشاد ہوتا ہے۔

وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ

ترجمہ:اور ہماری دی ہوئی روزی میں سے ہماری راہ میں خرچ کرتے ہیں۔

(کنزالایمان)

## (4) کامیابی کا راستہ

زکوۃ دینے والا کامیاب لوگوں کی فہرست میں شامل ہوجاتا ہے۔جیسا کہ قرآن پاک میں فلاح کو پہنچنے والوں کا ایک کام زکوۃ بھی گنوایا گیا ہے۔چنانچہ ارشاد ہوتا ہے

قَدْ اَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ (۱)الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ صَلَاتِهِمْ خٰشِعُوْنَ (۲)وَالَّذِيْنَ هُمْ عَنِ اللَّغْوِ مُعْرِضُوْنَ o (۳) (118المومنون 1تا3)

ترجمہ:۔بیشک مراد کو پہنچے ایمان والے جو اپنی نماز میں گڑگڑاتے ہیں اور وہ جو کسی بیہودہ بات کی طرف التفات نہیں کرتے اور وہ کہ زکوۃ دینے کا کام کرتے ہیں (کنزالایمان)

## (5) نصرت الٰہی عزوجل کا مستحق

اللہ تعالی زکوۃ ادا کرنیوالے کی مدد فرماتا ہے چنانچہ ارشاد ہوتا ہے

وینصرن الله من ینصره o ان الله لقوی عزیز o الذین ان مکنهم فی الارض اقاموالصلوة واتوالزکوة وامروا بالمعروف ونهواعن المنکروالله عاقبة الامور۔ (الحج)

marfat.com

ترجمہ: اور بیشک اللہ ضرور مدد فرمائے گا اس کی جو اس کے دین کی مدد کرے گا بیشک ضرور اللہ قدرت والا غالب ہے وہ لوگ کہ اگر ہم انہیں زمین میں قابو دیں تو نماز یادرکھیں اور زکوۃ دیں اور بھلائی کا حکم کریں اور برائی سے روکیں اور اللہ ہی کے لیے سب کاموں کا انجام (کنزالایمان)

انمایعمر مسجداللہ من امن باالله والیوم الاخر واقام الصلوۃ واتی الزکوۃ ولم یخش الااللّٰہ فعسی اولٰئِکَ ان یکونوا من المھتدین (التوبہ 18)

ترجمہ:۔ اللہ تعالی کی مسجدیں وہی (لوگ) آباد کرتے ہیں جو اللہ تعالی اور قیامت پر ایمان لاتے ہیں اور نماز قائم کرتے ہیں اور زکوۃ دیتے ہیں اور اللہ تعالی کے سوا کسی سے نہیں ڈرتے تو قریب ہے کہ یہ لوگ ہدایت والوں میں ہوں۔

## مسلمان بھائیوں کے دل میں خوشی داخل کرنے کا ثواب

زکوۃ کی ادائیگی سے غریب مسلمان بھائیوں کی ضرورت پوری ہو جاتی ہے اور ان کے دل میں خوشی داخل ہوتی ہے۔

## اسلامی بھائی چارے کا بہترین اظہار

زکوۃ دینے کا عمل اخوت اسلامی کی بہترین تعمیر ہے کہ ایک غنی مسلمان اپنے غریب اسلامی بھائی کو زکوۃ دے کر معاشرے میں سر اٹھا کر جینے کا حوصلہ مہیا کرتا ہے نیز غریب اسلامی بھائی کا دل کینہ وحسد کی شکارگاہ بننے سے محفوظ رہتا ہے کیونکہ وہ جانتا ہے کہ اس کے غنی اسلامی بھائی کے مال میں اس کا بھی حق ہے چنانچہ وہ اپنے بھائی کے جان مال اور اولاد میں برکت کیلئے دعا گو رہتا ہے نبی پاک صاحب

لولاک صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا۔ بیشک مومن کے لیے مومن مثل عمارت کے ہے بعض کو تقویت پہنچاتا ہے (صحیح بخاری)

## فرمان مصطفیٰ صلی اللہ علیہ وسلم کا مصداق

زکوٰۃ مسلمانوں کے درمیان بھائی چارہ مضبوط بنانے میں بہت اہم کردار ادا کرتی ہے۔ جس سے اسلامی معاشرے میں اجتماعیت کو فروغ ملتا ہے اور امداد باہمی کی بنیاد پر مسلمان اپنے پیارے آقا مدینے والے مصطفیٰ صلی اللہ علیہ وسلم کے اس فرمان عظیم کا مصداق بن جاتے ہیں مسلمانوں کو آپس میں دوستی اور رحمت اور شفقت کی مثال جسم کی طرح ہے، جب جسم کا کوئی عضو بیمار ہوتا ہے تو بخار اور بے خوابی میں سارا جسم اس کا شریک ہوتا ہے (صحیح مسلم شریف)

## مال پاک ہو جاتا ہے

زکوۃ دینے سے مال پاک ہو جاتا ہے جیسا کہ حضرت انس بن مالک رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی ہے کہ شہنشاہ مدینہ، قرار قلب وسینہ، صاحب معطر پسینہ، باعث نزول سکینہ، فیض گنجینہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا ''اپنے مال کی زکوۃ نکالو کہ وہ پاک کرنے والی ہے۔ تمھارے اعمال کو پاک کر دے گی'' (مسند احمد بن حنبل)

## مال میں برکت

زکوۃ دینے والے کا مال کم نہیں ہوتا ہے بلکہ دنیا آخرت میں بڑھتا ہے اللہ تعالیٰ ارشاد فرماتا ہے۔

وما انفقتم من شی فھو یخلفه وھو خیر الرازقین O

ترجمہ: ''اور جو چیز تم اللہ تعالیٰ کی راہ میں خرچ کرو وہ اس کے بدلے اور دے گا اور وہ سب سے بہتر رزق دینے والا''۔ (کنز الایمان)

marfat.com

## حفاظت مال کا سبب

زکوۃ دینا حفاظت مال کا سبب ہے جیسا کہ حضور پاک صاحب لولاک سیاح افلاک ﷺ نے فرمایا "اپنے مالوں کو زکوۃ دے کر مضبوط قلعوں میں کرلو اپنے بیماروں کا علاج خیرات سے کرو" (ابی داؤد)

## حاجت روائی

اللہ تعالی زکوۃ دینے والوں کی حاجت روائی فرمائے گا جیسا کہ نبی مکرم نور مجسم رسول اکرم شہنشاہ بنی آدم ﷺ نے فرمایا جو کسی بندے کی حاجت روائی کرے اللہ تعالی دین و دنیا میں اس کی حاجت روائی کرے گا۔ (صحیح مسلم)

ایک اور مقام پر ارشاد فرمایا جو کسی مسلمان کو دنیاوی تکلیف سے رہائی دے تو اللہ تعالی اس سے قیامت کے دن کی مصیبت دور فرمائے گا۔ (ترمذی شریف)

## دعائیں ملتی ہیں

زکوۃ ادا کرنے سے غریبوں کی دعائیں ملتی ہیں جس سے رحمت خداوندی اور مدد الہی عزوجل حاصل ہوتی ہے جیسا کہ شہنشاہ مدینہ قرار قلب وسینہ، صاحب معطر پسینہ، باعث نزول سکینہ فیض گنجینہ ﷺ نے ارشاد فرمایا تم کو اللہ تعالی کی مدد اور رزق ضعیفوں کی برکت اور ان کی دعاؤں کے سبب پہنچتا ہے (صحیح البخاری)

## مال کی بربادی

زکوۃ ادا نہ کرنا مال کی بربادی کا سبب ہے جیسا کہ نور کے پیکر تمام نبیوں کے سرور جہاں کے تاجور سلطان بحر و بر ﷺ فرماتے ہیں۔ خشکی و تری میں جو مال ضائع ہوا ہے

marfat.com

وہ زکوۃ نہ دینے کی وجہ سے تلف ہوا ہے (مجمع الزوائد، کتاب الزکوۃ، باب فرض الزکوۃ)

ایک اور مقام پر ارشاد فرمایا:: جب لوگ زکوۃ کی ادائیگی چھوڑ دیتے ہیں تو اللہ عزوجل بارش کو روک دیتا ہے اگر زمین پر چوپائے موجود نہ ہوں تو آسمان سے پانی کا ایک قطرہ بھی نہ گرتا (سنن ابن ماجہ)

## آیت قرآنی

ترجمہ: اور جوڑ کر رکھتے ہیں سونا اور چاندی اور اسے اللہ کی راہ میں خرچ نہیں کرتے انہیں خوشخبری سناؤ دردناک عذاب کی جس دن وہ تپایا جائے گا جہنم کی آگ میں پھر اس سے داغیں گے ان کی پیشانیاں اور کروٹیں اور پیٹھیں پر ہے جو تم اپنے لئے جوڑ کر رکھا تھا اب چکھو مزہ اس جوڑنے کا (پ۱۰ التوبہ:۳۵،۳)

## عذاب جہنم

ایک مقام پر نبی کریم روف الرحیم ﷺ نے فرمایا زکوۃ نہ دینے والا قیامت کے دن دوزخ میں ہوگا (مجمع الزوائد، کتاب الزکوۃ)

## زکوۃ کی اقسام

زکوۃ کی بنیادی طور پر 2 قسمیں ہیں

۱۔ مال کی زکوۃ۔

۲۔ افراد کی زکوۃ (یعنی صدقہ فطر) مال کی زکوۃ مزید دو قسمیں ہیں۔

۱۔ سونے چاندی کی زکوۃ۔

۲۔ مال تجارت اور مویشیوں، زراعت اور پھلوں کی زکوۃ۔ (عشر)

(ماخوذ از بدائع الصنائع فی ترتیب شرائع، کتاب الزکوۃ)

maarfat.com

## نصاب کا مالک

مالک نصاب ہونے سے مراد یہ ہے کہ اس شخص کے پاس ساڑھے سات تولے سونا یا ساڑھے باون تولے چاندی یا اتنی مالیت کی رقم یا اتنی مالیت کا مال تجارت یا اتنی مالیت کا حاجات اصلیہ یعنی ضروریات زندگی سے زائد سامان ہو (بہار شریعت)

## مالک نصاب ہونے سے پہلے زکوٰۃ دے دی تو

اگر پہلے زکوۃ دے دی پھر مالک نصاب ہوا تو ایسی صورت میں دیا گیا مال زکوۃ میں شمار نہیں ہوگا بلکہ اس کی زکوۃ الگ سے دینا ہوگی۔ (الفتاوی الھندیہ)

## مال حرام پر زکوۃ

جسکا مال حرام ہو اس پر زکوۃ فرض نہیں ہوگی کیونکہ وہ اس مال کا مالک ہی نہیں ہے درمختار میں ہے اگر کل مال حرام ہو تو اس پر زکوۃ نہیں ہے (الدار المختار)

اعلیٰ حضرت امام اہلسنت مولینا الشاہ امام احمد رضا خان صاحب فرماتے ہیں چالیسواں حصہ دینے سے وہ مال کیسے پاک ہوسکتا ہے جس کے باقی انتالیس حصے بھی ناپاک ہیں (فتاوی رضویہ)

## مال حرام سے نجات کا طریقہ

حرام مال کی دو صورتیں ہیں۔

1۔ ایک وہ حرام مال جو چوری، رشوت غصب اور انہی جیسے دیگر ذرائع سے ملا ہو اس کو حاصل کرنے والا اس کا اصلاً یعنی بالکل مالک ہی نہیں بنتا اور اس مال کے لیے شرعاً فرض ہے کہ جس کا ہے اسی کو لوٹا دیا جائے وہ نہ رہا ہو تو وارثوں کو دے اور ان کا

marfat.com

بھی پتا نہ چلے تو بلانیت ثواب فقیر پر خیرات کردے۔

2۔دوسرا حرام مال جس میں قبضہ کر لینے سے ملک خبیث حاصل ہو جاتی ہے۔ اور یہ وہ مال ہے جو کسی عقد فاسد کے ذریعہ حاصل ہوا ہو جیسے سود یا داڑھی مونڈنے یا خصی کرنے کی اجرت وغیرہ۔اس کا بھی وہی حکم ہے مگر فرق یہ ہے اس کو مالک یا اسکے ورثا کو لوٹانا فرض نہیں اولا فقیر کو بھی بلانیت ثواب خیرات میں دے سکتا ہے البتہ افضل یہی ہے کہ مالک یا ورثا کو لوٹا دے۔(فتاوی رضویہ)

## مال نامی کا مطلب

مال نامی کے معنی ہے بڑھنے والا مال خواہ حقیقۃ بڑھے حکما ،اس کی 3 صورتیں ہیں۔(1)یہ بڑھنا تجارت سے ہوگا یا۔(2)افزائش نسل کیلئے جانوروں کو جنگل میں چھوڑ دینے سے ہوگا یا۔(3)وہ مال خلقی (یعنی پیدائشی)طور پر نامی ہوگا جیسے سونا چاندی وغیرہ۔(الفتاوی الھندیہ)

## حاجت اصلیہ کسے کہتے ہیں؟

حاجت اصلیہ (یعنی ضروریات زندگی) سے مراد وہ چیزیں ہیں جن کی عموماً انسان کو ضرورت ہوتی ہے۔اور ان کے بغیر گزر اوقات میں شدید تنگی ودشواری محسوس ہوتی ہے جیسے رہنے کا گھر، پہننے کے کپڑے، سواری، علم دین سے متعلق کتابیں اور پیشے سے متعلق اوزار وغیرہ۔(الھدایۃ، کتاب الزکوۃ، ج ا ص ۹۴)

## سال کب مکمل ہوگا؟

جس تاریخ اور وقت پر آدمی صاحب نصاب رہے وہی تاریخ اور وقت جب آئیگا اسی منٹ سال مکمل ہوگا(فتاوی رضویہ)

marfat.com

## قمری مہینوں کا اعتبار ہوگا یا شمس کا؟

سال گزرنے میں قمری (یعنی چاند کے) مہینوں کا اعتبار ہوگا۔ شمسی مہینوں کا اعتبار حرام ہے (فتاوی رضویہ)

زکوۃ کی فرضیت کتاب وسنت سے ثابت ہے اللہ عزوجل قرآن پاک میں ارشاد فرماتا ہے۔

**واقیموا الصلوۃ واتوا الزکوۃ**

ترجمہ کنزالایمان: اور نماز قائم رکھو اور زکوۃ دو

**خذمن اموالھم صدقۃً تطھرِ ھم وتزکیھم بھا (توبہ)**

ترجمہ کنزالایمان: اے محبوب ان کے مال میں سے زکوۃ حاصل کرو جس سے تم انھیں ستھرا اور پاکیزہ کردو۔

حضرت سیدنا عبداللہ ابن عمر رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ شہنشاہ مدینہ قرار قلب وسینہ، صاحب معطر پسینہ، باعث نزول سکینہ، فیض گنجینہ صلی اللہ علیہ وسلم نے ارشاد فرمایا۔

مجھے اللہ عزوجل نے اس پر مامور کیا ہے کہ میں لوگوں سے اس وقت تک لڑوں جب تک وہ یہ گواہی نہ دیں کہ اللہ عزوجل کے سوا کوئی سچا معبود نہیں اور محمد صلی اللہ علیہ وسلم خدا کے سچے رسول ہیں ٹھیک طرح نماز ادا کریں، زکوۃ دیں پس اگر ایسا کرلیں تو مجھ سے ان کے مال اور جانیں محفوظ ہوجائیں گیں سوائے اس سزا کے جو اسلام نے (کسی حد تک سلسلہ میں) ان پر لازم کردی ہو۔ (صحیح بخاری)

نبی کریم روف رحیم صلی اللہ علیہ وسلم نے جب حضرت سیدنا معاذ رضی اللہ عنہ کو جب یمن کی طرف بھیجا تو فرمایا ان کو بتاؤ کہ اللہ عزوجل نے ان کے مالوں میں زکوۃ فرض کی ہے۔ زکوۃ مال داروں سے لے کر فقراء کو دی جائے (سنن ترمذی)

marfat.com

حضرت سیدنا ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ فرماتے ہیں۔

جب رسول ﷺ کا وصال ظاہری ہو گیا اور حضرت سیدنا ابو بکر صدیق رضی اللہ عنہ خلیفہ بنے اور کچھ قبائل عرب مرتد ہو گئے (زکوۃ کی فرضیت سے انکار کر بیٹھے) تو حضرت سیدنا عمر رضی اللہ عنہ نے کہا آپ لوگوں سے کیسے معاملہ کریں گے جب کہ رسول ﷺ نے ارشاد فرمایا "میں لوگوں سے جہاد کرنے پر مامور ہوں جب تک وہ لا الہ الا اللہ نہ پڑھیں۔ جس نے لا الہ اللہ اقرار کر لیا اس نے اپنے جان اور اپنا مال مجھ سے محفوظ کر لیا۔

مگر یہ کہ کسی کا حق بنتا ہو اور وہ اللہ عزوجل کے ذمہ ہے۔

(یعنی یہ لوگ تو لا الہ اللہ کہنے والے ہیں ان پر کیسے جہاد کیا جائے گا)

حضرت سیدنا ابو بکر رضی اللہ تعالی عنہ نے کہا "اللہ عزوجل کی قسم میں اس شخص جہاد کروں گا جو نماز اور زکوۃ میں فرق کرے گا (کہ نماز کو فرض مانے اور زکوۃ کی فرضیت سے انکار کرے) اور زکوۃ مال کا حق ہے لہذا اگر انہوں نے (واجب الاداء) ایک رسی بھی دو کی جو وہ رسول ﷺ کے دور میں دیا کرتے تھے تو میں ان سے جنگ کروں گا"۔

حضرت عمر فاروق رضی اللہ تعالی عنہ فرماتے ہیں "واللہ! میں نے دیکھا کہ اللہ تعالی نے حضرت ابو بکر صدیق رضی اللہ تعالی عنہ کا سینہ کھول دیا ہے۔ اس وقت میں نے بھی پہچان لیا کہ وہی حق ہے" (صحیح البخاری)

امیر المومنین فاروق اعظم رضی اللہ تعالی عنہ کا بحث کرنا اس وجہ سے تھا۔ کہ ان کے علم میں پہلے یہ بات نہ تھی کہ وہ فرضیت کے منکر ہیں یہ خیال تھا کہ زکوۃ دیتے نہیں اس کی وجہ سے گنہگار ہوئے، کافر تو نہ ہوئے کہ ان پر جہاد قائم کیا جائے،، مگر جب معلوم ہو گیا تو فرماتے ہیں میں نے پہچان لیا کہ وہی حق ہے۔ جو (سیدنا) صدیق رضی اللہ تعالی عنہ نے سمجھا اور کیا (بہار شریعت)

marfat.com

# چوتھا رُکن: حج

## شعائر اللہ کی تعظیم اور حج

شعائر اللہ کی تعظیم تکریم فریضہ حج میں اساسی اہمیت کی حامل ہیں ارشاد ربانی ہے۔

**ذلك ومن يعظم شعائر الله فانهامن تقوى القلوب** (القرآن الحج 22,32)

یہی (حکم) ہے اور جو شخص اللہ کی نشانیوں کی تعظیم کرتا ہے تو یہ (تعظیم) دلوں کے تقوی میں سے ہے۔

شعائر اللہ کی تعظیم وتکریم اور ان کا ادب اللہ کی نظر میں اتنا مقام رکھتا ہے کہ اسے دلوں کے تقوی سے تعبیر کیا جارہا ہے۔

باری الٰہ کے نزدیک پہاڑ پتھر اور قربانی کے جانوروں کی حیثیت عام چیزوں جیسی ہے۔

لیکن خدا کے محبوب ومقبول بندوں سے نسبت ہونے کی بناء پر ان کی تعظیم وادب اتنی بڑی عبادت بن گیا جو دلوں کے تقوی کا موجب ہے ارشاد فرمایا گیا۔

(ذلك ومن يعظم حرمت الله فهوخيرله عندربه) القرآن الحج 22,30

یہی حکم ہے اور جو شخص اللہ کی بارگاہ سے عزت یافتہ چیزوں کی تعظیم کرتا ہے تو وہ اس کے رب کے ہاں اس کے لیے بہترین ہے۔

پس جو شخص شعائر اللہ کا احترام اور تعظیم بجالاتا ہے اس کا یہ فعل مندرجہ بالا فرمودہ خداوندی کے مطابق اللہ کے ہاں بہتر قرار دیا گیا ہے۔

marfat.com

# ابرہیم علیہ السلام کے امتحان وآزمائش کے بصیرت افروز واقعات پہلا امتحان

حضرت ابراہیم علیہ اسلام قافلہ عشاق کے سرخیل اور سردار ہیں ۔جدا الانبیا ہونے کے ناطے قرآن حکیم نے خصوصیت کے ساتھ ان کی داستان عشق ومحبت ،امتحان وآزمائش کے واقعات اور غروری کی بھڑکائی آگ میں بے خطر کود جانے کا قصہ جس کے بارے میں روایات ہیں کہ اللہ کے بھیجے ہوئے فرشتے ان کی خدمت میں حاضر ہوئے کہ اگر وہ چاہیں تو آتش نمرود کو پر مار کر اس پر الٹادیں لیکن اس پیکر تسلیم رضا نے امتحان عشق سے گریز پائی کہ راہ اختیار نہ کی انجام سے بے پراہ ہوکر( بے خطر آگ میں کود پڑا آتش نمرود میں عشق)

کی داستان کا جلی عنوان تاریخ کے صفحات پر چھوڑ گئے ،عشق کے اس امتحان میں کامیابی کا تذکرہ جو

یانار کونی بردًاوسلاماعلی ابراھیم

ہم نے فرمایا اے آگ تو ابراہیم پر ٹھنڈی اور سراپا سلامتی ہو جا (القرآن الانبیا ۶۹۔۷۱) کے الفاظ میں قرآن حکیم نے بیان کی وہ آج بھی زبان زد خاص وعام ہے۔

## دوسرا امتحان

سیدنا ابراہیم علیہ اسلام کا دوسرا امتحان عشق اس وقت لیا گیا جب بیٹا ابھی شیر خوار تھا حکم ہوا اپنی محبوب زوجہ حضرت ھاجرہ اور بیٹے کو لے کر دونوں کو صحرا اور بے آباد ویران میں لے جا کر چھوڑ آؤ جس کا ذکر قرآن حکیم نے ان الفاظ میں کیا ہے۔

marfat.com

انی اسکنت من ذریتی بواد غیر ذی زرع عند بیتک المحرم

(القرآن ابراہیم 14,37)

بے شک میں نے اپنی اولاد (اسماعیل) کو مکہ کی بے آب وگیاہ وادی میں تیرے خیریت والے گھر کے پاس چھوڑ دیا ہے۔

یہ اس وقت کی بات ہے جب ابھی کعبہ کی تعمیر عمل میں نہ آئی تھی لیکن چشم افلاک اس بات کا نظارہ کر رہی تھی کہ یہ مقام جہاں حضرت ابراہیم علیہ اسلام اپنی اہلیہ اور لخت جگر کو چھوڑ کر جا رہے ہیں خانہ خدا کے طور پر منتخب کر لیا گیا ہے پھر مشیت خداوندی کی تکمیل خانہ کعبہ کی از سر نو کی صورت میں جریدہ عالم پر نقش دوام کا درجہ اختیار کر گئی قرآن حکیم نے اس عظیم اور یادگار واقعے کو ان لافانی الفاظ میں ہمیشہ کے لیے اسلامی تاریخ میں محفوظ کر دیا ہے۔

واذیرفع ابراھیم القواعد من البیت واسمعیل (القرآن البقرہ 127)

اور (یاد کرو) جب ابراہیم اور اسماعیل خانہ کعبہ کی بنیادیں اٹھا رہے تھے کیا دیدنی منظر تھا! باپ راج اور بیٹا مزدور کی حیثیت سے کعبہ کی بنیادیں اٹھا رہے تھے جب وہ گھر تعمیر ہو چکا تو بارگاہ خداوندی کی طرف سے عام اعلان کر دیا گیا کہ یہ گھر جو میرے دو عاشقوں نے اپنے خون پسینے کی محنت سے تعمیر کیا ہے، میرا اپنا گھر ہے یہ مقبول و محبوب بندے جن پر میرے عشق و محبت میں جتنے بھی امتحان آئے سب میں کامیاب اور سرخرو نکلے ہیں اب ان کو جزا دینے کا وقت آن پہنچا ہے چنانچہ حضرت ابراہیم علیہ سلام کے دل کی گہرائیوں میں نکلی ہوئی دعا اجابت کے مقام پر پہنچی اور حضرت اسماعیل علیہ اسلام کی نسل سے نبی آخر الزماں حضرت محمد مصطفیٰ ﷺ کا ظہور ہوا اور حضور نبی اکرم ﷺ نے اپنے جد امجد کی یادگاروں کو شریعت محمدیہ ﷺ کا جزو لاینفک بنا کر حج کے ارکان و مناسک کی صورت میں ابد تک جاری و ساری کر دیا۔

marfat.com

# تیسرا امتحان

حضرت ابرہیم علیہ اسلام کے تیسرے امتحان کا مرحلہ اس وقت آیا جب ان کے بڑھاپے کی اکلوتی اولاد فرزند حضرت اسماعیل علیہ اسلام جو ناز و نعیم کی آغوش میں پلے بڑھے ان کے بارے میں حکم ہوا کہ اسے میرے نام پر قربان کرو قرآن حکیم میں باپ بیٹے کے درمیان جو مکالمہ مذکور ہے وہ قربانی کی تاریخ فقید المثال اور شاہکار باب ہے ارشاد ہوتا ہے۔

قال یا بنی انی اری فی المنام انی اذبحك فانظر ماذا تری قال یابت افعل ماتومر ستجدنی ان شاء الله من الصٰبرین (القرآن الصفت 102.37)

حضرت ابراہیم نے فرمایا اے میرے بیٹے میں خواب میں دیکھتا ہوں کہ میں تمکو ذبح کر رہا ہوں پس تم بھی غور کرلو کہ تمہارا کیا خیال ہے۔اسماعیل نے بلا تردد

عرض کیا اے باپ پھر دیر کیا ہے جو کچھ آپ کو حکم ہوا کر ڈالیئے جہاں تک میرا تعلق ہے۔آپ ان شاء اللہ مجھے صبر کرنے والوں میں پائیں گے عشق کے امتحان میں باپ اور بیٹے نے جو دونوں ایک ہی ذات کے عاشق اور قتیل تھے بلا تامل اپنے آپ کو پیش کر دیا، باپ چھری ہاتھ میں لئے حلقوم پسر کی طرف بڑھا اور بیٹا خود سپردگی کے عالم میں اللہ کی رضا پر قربان ہونے کیلئے بہ دل و جان آمادہ و تیار ہو گیا، شیطان نے لاکھ بہکانے اور ورغلانے کے جتن کیئے لیکن ان کے پائے استقلال میں ذرہ بھر لغزش نہ آئی باپ نے بیٹے کی گردن پر تسلیم و رضا کی چھری چلا دی اور چشم فلک نے زیر آسمان وہ عجیب و غریب منظر دیکھا جس کی نظیر تاریخ عالم پیش کرنے سے قاصر ہے۔

marfat.com

حضرت اسماعیل علیہ اسلام کے راہ خدا میں قربان ہونے کا جذبہ قربان کی تاریخ میں اپنی مثال آپ ہے۔ بقول اقبال:

یہ فیضان نظر تھا یا کہ کتب کی کرامت تھی
سکھائے کس نے اسماعیل کو آداب فرزندی

حضرت ابراہیم علیہ اسلام کی یہ یادگار قربانی بارگاہ ایزدی میں یوں شرف قبولیت پاگئی کہ اس ذبح عظیم کی یاد کو رہتی دنیا تک علامتی طور پر قربانی کی صورت میں زندہ جاوید کردیا گیا۔ حضرت ابراہیم اور حضرت اسماعیل علیہ اسلام نے راہ خدا میں جس طرح تسلیم ورضا گردن خم کردی اسکا ذکر قرآن مجید نے ان الفاظ میں کیا۔

فلما اسلما وتله للجبين۔ وناديناه ان يا ابراهيم ۔ قدصدقت الرءيا انا كذلك نجزى المحسنين۔ (الصفت، 105.103.37)

پھر جب دونوں نے (اللہ کا) حکم مان لیا اور (ابراہیم نے) ان کو ماتھے کے بل لٹایا اور ہم نے ان کو ندا دی کہ اے ابراہیم (کیا خوب) تم نے اپنے خواب کو سچا کر دکھایا ہم نیکوکاروں کو یوں ہی بدلہ دیتے ہیں۔

اس امتحان عظیم میں کامیابی کا مژدہ جان فزاء قرآن حکیم نے ان الفاظ کے ساتھ اپنے محبوب بندے سیدنا ابراہیم علیہ اسلام کو سنایا۔

وفديناه بذبح عظيم وتركنا عليه في الاخرين (الصفت: ۱۰۷۔۱۰۸)

اور ہم نے ایک عظیم قربانی کو ان کا فدیہ (بنا) دیا اور ہم نے ان کے آنے کے بعد آنے والوں میں ان (کے ذکر خیر) کو (یوں) باقی رکھا)

اللہ رب العزت کو اپنے ان خاص بندوں کی ادا اتنی پسند آئی کہ اس واقعہ کو ذبح

عظیم قرار دیکر ہر سال اس کی یاد کی تجدید کا حکم امت مصطفوی ﷺ کے لیے شریعت مطہرہ کا حصہ بنا دیا جس کا اتباع تا قیامت سنت ابراہیمی کے طور پر واجب قرار پایا

## مناسک حج اور ان کی حقیقت

ہمارے ذہنوں میں عبادت کا جو تصور ہے۔حج اس سے یکسر مختلف ہے دوسری عبادت مخصوص تسبیحات، نوافل اور وظائف واوراد پر مشتمل ہوتی ہیں لیکن جب ہم حج کے لئے حرم کعبہ میں داخل ہوتے ہیں تو ہم پر یہ حقیقت آشکار ہو جاتی ہے کہ یہ تو عبادت کے مروجہ روایتی تصور اور ضابطہ عمل سے کوئی لگاؤ نہیں رکھتا داخل حرم ہونے سے قبل حاجی اپنا روزمرہ کا لباس اتار کر دو کملی ان سلی چادریں اوڑھ لیتا ہے اور دیوانہ وار ایک عمارت کے گرد چکر لگانے لگتا ہے اس کے بال اور ناخن بڑھے ہوئے ہیں لیکن انہیں ترشوانے کی اجازت نہیں وہ اپنے گرد و پیش سے بے نیاز اور دوسروں کے مال سے بیگانہ رب کعبہ کی یاد میں مگن رہتا ہے۔

۹ ذی الحج آتا ہے وہ بے اختیار بعجلت تمام میدان عرفات کی طرف افتاں وخیزاں دوڑنے لگتا ہے مٹھی میں کنکریاں پکڑے ہوئے وہ ایک گوشے میں پتھر کے ایک ایستادہ ستونوں کو شیطان سمجھ کر مارتا ہے عرفات میں پہنچتا ہے تو ظہر اور عصر کی نمازیں ایک ساتھ ادا کرتا ہے مزدلفہ میں نماز مغرب کا ہنگام آپہنچا ہے تو نماز نہیں پڑھتا بلکہ عشاء کی نماز کے ساتھ ملا کر پڑھتا ہے صفا اور مروہ دو پہاڑیوں کے درمیان تیز تیز دوڑتا ہے۔

## شہر مکہ کی عظمت کا سبب

بادی النظر میں روئے زمین پر آبد خشت وہنگ سے بنے ہوئے دوسرے شہروں کی طرح مکہ کی حیثیت بھی ایک شہر کی ہے اسے سرکار دو جہاں ﷺ کی جائے ولادت

اور مولد ہونے کی وجہ سے دنیا کے دوسرے شہروں پر فضیلت حاصل ہوگئی اسی بے مثال نسبت کی بناء پر رب ذوالجلال نے ارشاد فرمایا۔

لا اقسم بھذا البلد ○ وانت حل بھذا البلد ○

ترجمہ: میں اس شہر (مکہ) قسم کھاتا ہوں (اے حبیب مکرم) اسلئے کہ آپ اس شہر میں تشریف فرما ہیں۔ (القرآن البلد ۹۰۰، ۱، ۲)

ارشاد ربانی کا مفہوم یہ ہے۔ کہ اس شہر بے مثال کی قسم اس لئے نہیں کھاتا کہ اس میں میرا گھر بیت اللہ موجود ہے۔

بلکہ یہ اس لیے لائق قسم ہوگیا ہے۔ کہ اس کی گلیوں کوچوں اور خاک کے ذروں کو تیرے مقدس قدموں نے چھوا ہے جس کی وجہ سے یہ شہر رشک مہ وانجم بن گیا ہے۔

لا اقسم کے الفاظ ذو معنی ہیں اگر لا کا کلمہ نافیہ مان لیا جائے تو عربی لغت کے قاعدے سے اس کا مفہوم یہ ہوگا کہ یہ کیسے ممکن ہے کہ میں اس شہر کی قسم نہ کھاؤں جب کہ محبوب تو اس میں مقیم ہے کہ اور اس کے گلی کوچوں کو تیرے پاک قدموں کی نسبت ہے اس کی عظمت و برکت تو ہے ہی قسم کھانے کے قابل۔

لا اقسم کا دوسرا مفہوم یوں ہوگا کہ میں اس شہر کی قسم نہیں کھاتا اور مجھے کیا پڑی ہے کہ میں اس کی قسم کھاؤں کہ یہ شہر اپنی عزت و بزرگی کے اعتبار سے فی نفسہ کوئی قسم نہیں؟ مگر صرف اس لئے قسم کھائی جارہی ہے کہ اسے تیرے جائے ولادت کا شرف حاصل ہوگیا اور تنہا یہ نسبت یہ نسبت میری نظر میں اتنی بڑی ہے کہ باقی سب نسبتیں اس کے مقابلے میں ہیچ ہیں۔

آنحضور ﷺ نے اپنے زمانے کو سب زمانوں سے بہترین قرار دیا اور پھر اس

کے بعد اس زمانے کو جو اس سے متصل ہے جس طرح مکان کو فضیلت اس کے مکین سے ملتی ہے اس طرح زمانی اعتبار سے وہ ساعتیں جنہیں حضور ﷺ کا قرب نصیب ہو گیا۔ سب زمانوں پر شرف وفضیلت کی حقدار وسزا اور ٹھہریں اسی نسبت سے صحابہ کرام رضی اللہ عنہ کو وہ شرف صحابیت عطا ہو گیا کہ بعد کے زمانوں میں آنے والے اس کے گرد کو بھی نہیں پہنچ سکتے۔

## مسائل حج وعمرہ

حج کے متعلق یہ امر محتاج بیان نہیں رہا کہ جس طرح نماز روزہ زکوۃ فرض اور ارکان دین ہیں اس طرح حج بھی ایک رکن اور صاحب استطاعت پر فرض ہے دوسرے ارکان اسلام کے مقابلے میں حج ہی ایک ایسا رکن ہے جس کا ساری زندگی میں صرف ایک دفعہ ادا کر لینا شریعت نے فرض کیا ہے۔ ورنہ دیگر ارکان مثلاً نماز پنجگانہ ہر دن مختلف اوقات میں فرض ہے روزہ زکوۃ سال کے بعد فرض ہے اس لئے بطور خاص حج کے جملہ مسائل کا بغور مطالعہ کرنا انہیں ذہن نشین کر کے رخت سفر حج باندھا بہت ضروری ہے حج کی اہمیت اسی سے ظاہر ہے کہ اسکا ایک مرتبہ ادا کر لینا عمر بھر کے لئے کافی ہوتا ہے لہذا علماء صلحا نے تاکید فرمائی ہے کہ حج کرنے والوں کو حتی الامکان مستحبات اور سنن وغیرہ کی ادائیگی کا بھی فرائض واجبات کی طرح اہتمام کرنا چاہیے نیز بعض مخصوص مقامات پر مخصوص ادعیہ اور ماثورہ ومسنون ازکار واوراد کی کثرت اور عجزہ نیاز خشوع وخضوع کا اہتمام بھی بطور خاص اہمیت کا حامل ہے اسی مناسبت سے یہاں مسائل حج مختصراً بیان کیے جاتے ہیں۔

marfat.com

## سفر حج وعمرہ کے آداب

ویسے تو مسلمان کی پوری زندگی شریعت مطہرہ کی تعلیمات کا عملی نمونہ ومظہر ہونی چاہیے لیکن حج کے سفر پر جانے سے قبل یادوران سفر بعض چیزوں کا لحاظ رکھنا اور اہتمام کرانا انتہائی ضروری ہے مثلاً۔

## حقوق اللہ کی ادائیگی

نماز، روزہ، زکوۃ، جیسے اہم ترین فرائض کی ادائیگی میں اگر کوتاہی ہوتی رہی تو سچے دل سے توبہ واستغفار کرتے۔

## حقوق العباد کی ادائیگی

کسی کا قرض دینا ہو یا امانت واپس کرنی ہو یا کسی کا مال ناحق لیا تو اسے واپس کرے یا معاف کرائے۔ بصورت دیگر اگر وارثوں کا پتہ نہ چلے تو اتنا مال فقیروں کو دے۔

## قصور کی معافی

اگر کسی کے دل کو دکھایا ہو یا اسے بے جا تکلیف پہنچائی ہو کسی غیبت اور چغلی کا ارتکاب کیا ہو تو اس سے معذرت کرے معافی مانگے، اگر وہ زندہ نہ ہو تو اللہ سے اپنے گناہوں کی صدق دل سے معافی مانگے۔

## لڑائی جھگڑے سے اجتناب

آداب سفر میں سب سے ضروری ہے کہ مسافر ہر حالت میں صبر وتحمل اور ضبط برداشت کی حکمت کو پیش نظر رکھے کیونکہ یہ سفر دو طرح سے آزمائش کا باعث بنتا ہے

ا۔ اگر کسی ہمراہی سے خلاف طبیعت کوئی فعل یا قول سرزد ہو گیا ہو تو نفس امارہ

marfat.com

انتقام کیلئے نہ ابھرے بلکہ قوت برداشت سے رفع دفع کردے۔

۲۔ یہ سفر چونکہ ہے ہی تکالیف اور مشکلات سے بھرپور اس لئے اسمیں بڑے دل گردے سے کام لینا چاہیے مبادا کوئی ایسی حرکت یا ذہنی وفکری لغزش ہوجائے کہ سب برکات سے ہی ہاتھ دھونا پڑے اسلئے کے سفر حج اخلاق وکردار پارسائی اور دیداری اور حسن اخلاق کو جانچے اور پرکھنے کا سب سے بڑا ذریعہ ہے لہذا جہاں ہمسفروں کے ساتھ حسن سلوک اور صبر وتحمل کی ضرورت ہے وہاں اللہ رب العزت کی ناراضگی سے بچنے اور اسکی رضا کے لیے اخلاق وتقوی بھی ضروری ہے۔

## طلب اجازت

والدین اگر زندہ ہوں تو ان سے اجازت طلب کرے اور عورت کیلئے اپنے خاوند کی اجازت ضروری ہے ورنہ اسکا سفر مکروہ ہوگا ہاں اگر کوئی شخص عام حالت میں استطاعت کے باوجود اپنی بیوی کو حج کی اجازت نہیں دیتا تو بیوی بغیر اجازت کے بھی فریضہ حج کی ادائیگی کیلئے جاسکتی ہے۔

## عورت کیلئے محرم کا ساتھ ضروری ہے

عورت کے ساتھ شوہر یا ایسا محرم بالغ قابل اعتماد شخص ہو جسکے ساتھ اسکا نکاح ہمیشہ کیلئے حرام ہے ورنہ ہر قدم پر گناہ کی مرتکب ہوگی

## اہل حجاز کا احترام

ہر ممکن کوشش کرنی چاہیے کہ اہل حجاز بالخصوص حرمین شریفین اور ملازمین کا ادب واحترام کیا جائے انکے رویے اور برتاؤ میں اگر درشتی بھی ہو تو اس سے درگزر بہرحال بہتر ہے۔

marfat.com

## متفرقات

علاوہ ازیں روانگی کے وقت اپنے عزیز واقارب سے مل کران سے اپنے قصور معاف کرائے۔ان سے دعا کرائے سفر کالباس پہن کر چار رکعت نفل ادا کرے، گھر سے رخصت ہوتے وقت اگر یہ دعا پڑھے تو باعث خیر وبرکت ہوگا۔

بسم الله وتوكلت على الله ولاحول ولاقوة الابالله اللهم انا بعوذبك ان ان نزل اوندل او نضل او نضلى اونظلم اونظلم اللهم انا نعوذ بك من عثاء السفر ومابة المنقلب وسوء المنظر فى المال والاهل والولد

ترجمہ:اللہ کے نام سے اور اسکی مدد سے میں اس سفر کا آغاز کرتا ہوں میں نے اللہ سے بھروسہ کیا گناہوں سے اجتناب اور اطاعت کی طاقت اللہ کی توفیق سے ہی ہے الٰہی اس سے ہم تیری پناہ مانگتے ہیں کہ ہم لغزش کریں یا دوسرا ہمیں لغزش دے خود یکن یا دوسرا بہکائے یا ہم خود ظلم کریں یا کوئی ہم پر ظلم کرے الٰہی ہم سفر کی مشقت واپسی کی بدحالی اور مال یا اولاد کی بری حالت کے امکان (کے منظر) سے بھی تیری پناہ چاہتے ہیں۔

## خاص وظائف

دوران سفر اگر دشمن یا رہزن کا خوف ہو تو سورہ "القریش" پڑھے۔بھوک پیاس کی صورت میں ہر روز کسی وقت بھی ایک بار سو چونتیس مرتبہ یاصمد پڑھ لے اور اگر کوئی مشکل درپیش ہو تو تین مرتبہ: یا عباداللہ اعینونی: پڑھ لے ان شاء اللہ ہر پریشانی سے حفاظت ملے گی۔علاوہ ازیں ماثورہ دعاؤں کا ورد بھی باعث سعادت وبرکت ہے

## وجوب حج کی شرائط

حج کے وجوب کیلئے مختلف کتب فقہ میں جو شرائط بیان کی گئی ہیں ان میں اجمالی طور پر دس شرائط ہیں بصورت دیگر حج فرض نہ ہوگا

marfat.com

## 1۔ مسلمان ہونا

حج کے وجوب کے لیے مرد کا مسلمان ہونا شرط اولین ہے اگر کوئی شخص اسلام کے کسی بنیادی رکن کا منکر ہو یا شعائر اللہ کے ساتھ استہزاء کرتا ہو۔ فقہا کے نزدیک اسکا اسلام پر ہونا مشتبہ اور محل نظر ہے۔

## 2۔ عقل مند ہونا

دیوانہ یا مجنون یا جس کے ہوش وحواس قائم نہ ہوں اس پر حج واجب نہیں ہوتا

## 3۔ نابالغ

نابالغ بچوں پر حج واجب نہیں۔ حج کے وجوب کے لیے فرد کا بالغ ہونا شرط ہے

## 4۔ صاحب استطاعت ہونا

حج کے وجوب کیلئے فرد کا صاحب استطاعت ہونا ضروری ہے کہ راستے کے اخراجات اور دوسرے لوازمات کا متحمل ہو۔

## 5۔ تندرست ہونا

کسی ایسی بیماری میں مبتلا نہ ہو جسکی وجہ سے اسکے لیے یہ سفر کرنا ممکن ہی نہ ہو البتہ ایسا آدمی جو نابینا یا لنگڑا وغیرہ ہو اور اس میں وجوب حج کی دیگر شرائط اہتمام پائی جائیں تو وہ دوسرے کی مدد سے حج کر سکتا ہے۔

## 6۔ آزاد ہو

فرد کا آزاد ہونا وجوب حج کے لئے شرط ہے۔

marfat.com

## 7۔راستے میں امن وامان ہونا

وجوب حج کیلئے شرط ہے کہ راستہ تمام خطرات مثلاً ،دشمنی ،ورہزنی وغیرہ سے محفوظ ومامون ہو۔

## 8۔جان کا خوف ہونا

کسی جابر حکمران یادشمن کی طرف سے جان کا خوف بھی وجوب حج کوساقط کردیتا ہے۔

## 9۔عورت کیلئے شوہر یامحرم کا ساتھ ہونا

عورت کیلئے وجوب حج کی شرط تب ثابت ہوتی ہے جب اسکا شوہر یامحرم ساتھ ہو۔اگر ساری عمر ایسا محرم نہ مل سکا تو فرض کی ادائیگی کیلئے کسی کو وصیت کرسکتی ہے۔

## 10۔عورت کا حالت عدت میں ہونا

عدت وفات یاطلاق دونوں صورتوں میں دوران عدت حج واجب نہیں ہوگا۔

## اقسام حج

ادائیگی کے طریقے کے لحاظ سے حج کی تین اقسام ہیں

(۱)۔افراد:۔اس طریقے کو کہتے ہیں جسمیں حج کا احرام باندھا جاتا ہے عازم حج اسمیں عمرہ نہیں کرسکتا بلکہ صرف حج ہی کرسکتا ہے احرام باندھنے سے حج کے اختتام تک عازم کو مسلسل احرام کی شرائط کی پابندی کرنا پڑتی ہے۔

(۲)۔قران:۔حج اور عمرہ کا ایک ساتھ احرام باندھ کر دونوں کے ارکان کو ادا

marfat.com

کرنے کا نام (قران) ہے عازم حج مکہ پہنچ کر پہلے عمرہ کرتا ہے پھر اسی احرام میں اسے حج ادا کرنا ہوتا ہے اسی دوران احرام میلا یا ناپاک ہونے کی صورت میں تبدیل تو ہوسکتا ہے مگر جملہ پابندیاں برقرار رہیں گی

## تمتع

(۳)۔وہ طریقہ حج ہے جسمیں حج اور عمرہ کو ساتھ ساتھ اسطرح ادا کیا جاتا ہے کہ مکہ مکرمہ میں عمرہ ادا کرنے کے بعد عازم حج احرام کی حالت سے باہر آسکتا ہے اسطرح اس پر ۸ذی الحجہ یعنی حج کے ارادے سے احرام باندھے تب احرام کی پابندیاں ختم ہوجاتی ہیں۔

مندرجہ بالا تینوں طریقوں میں تمتع نسبتاً آسان حج ہے تاہم اہمیت اور فضیلت کے اعتبار سے حج قران افضل ترین ہے

## عمرہ

عمرہ کے دو فرائض ہیں۔

۱۔ حدود حرم کے باہر سے احرام باندھنا۔

۲۔ خانہ کعبہ کا طواف کرنا۔

## عمرہ کے واجبات دو ہیں

صفا مروہ کے درمیان سات چکر لگانا یعنی سعی کرنا۔

سعی کے بعد سر کے بال ترشوانا، منڈوانا یا قصر یعنی بال کم کرنا (خواتین کے لئے صرف قصر ضروری ہے)

marfat.com

## عمرہ کی نیت

عمرہ کا احرام باندھنے سے پہلے عمرہ کی نیت سے غسل کر لینا افضل ہے ورنہ وضو بھی ٹھیک ہے اسکے بعد احرام یعنی ایک سفید چادر تہ بند کے طور پر باندھ لیں اور دوسری اوڑھ لیں ۔پھر دو رکعت نماز نفل برائے عمرہ ادا کریں اور سلام پھیرتے ہی سر ننگا کر لیں اور عمرہ کی نیت کر لیں۔نیت کے مسنون الفاظ یہ ہیں

اللھم انی اریدالعمرۃ فیسرھالی وتقبلھامنی واعنی علیھاوبارک لی فیھا نویت العمرۃ واحرمت بھاللہ تعالی

اے اللہ میں نے ارادہ کیا عمرے پس تو اس کو میرے لئے آسان کر دے اور قبول کر لے مجھ سے اور اسکے ادا کرنے میں میری مدد فرما اور اس کو میرے لئے بابرکت فرما میں نے عمرے کی نیت کی اور احرام باندھا اسکے ساتھ اللہ کی رضا کے لئے۔

اسکے بعد ان الفاظ میں تلبیہ کہیں

لبیک اللھم لبیک لبیک لاشریک لک لبیک ان الحمد والنعمۃ لک والملک لاشریک لک

## حج کے فرائض

### حج کے چار فرائض ہیں۔

۱۔احرام باندھنا۔

۲۔مقام عرفات میں ٹھہرنا۔

۳۔طواف زیارت کرنا۔

۴۔ان تینوں فرائض کو مقررہ مقامات اور مقررہ اوقات میں ترتیب سے ادا کرنا۔

# حج کے واجبات

مذکورہ بالا کے علاوہ سات چیزیں حج کے واجبات میں شامل ہیں۔

۱: مزدلفہ میں ٹھہرنا۔

۲: جمرات کو کنکریاں مارنا۔

۳: اگر حج قرآن یا حج تمتع کی نیت کی ہے تو قربانی کرنا۔

۴: صفا اور مروہ کے درمیان طواف زیارت کے بعد دوڑنا (سعی کرنا)۔

۵: سر کے بال منڈوانا یا بال کٹوانا۔

۶: طواف زیارت کے سات چکر پورے کرنا۔

ان واجبات میں سے کوئی واجب بھی ترک ہو جائے تو ایک قربانی دینا ضروری ہے۔

# حالت احرام میں جو چیزیں منع ہیں

حالت احرام میں عازمین حج وعمرہ پر بعض ایسی چیزیں ممنوع ہو جاتی ہیں جو عام حالات میں جائز ہوتی ہیں مثلاً

۱۔ شکار کرنا، شکاری کی مدد کرنا، شکار کی طرف اشارہ کرنا۔

۲۔ حدود حرم میں درخت، گھاس، پودے، وغیرہ کاٹنا یا مکھی، مچھر، جوں وغیرہ کو مارنا۔

۳۔ جسم سے کوئی بال توڑنا یا کاٹنا یا ناخن وغیرہ ترشوانا۔

۴۔ خوشبودار سرمہ لگانا یا کھانے پینے کی اشیاء میں خوشبو کا استعمال مثلاً کشرڈ، اچار، چٹنی اور شربت وغیرہ اسی طرح خوشبودار تمباکو اور پانی بھی اسی حکم میں آتے ہیں

۵۔ سلے ہوئے کپڑے پہننا مثلاً قمیض، شلوار، انڈرویر یا ٹوپی وغیرہ۔

marfat.com

۶۔مرد کیلئے سر اور چہرے کا چھپانا اور عورت کیلئے صرف چہرے کا ڈھانپنا (خواتین کیلئے سر ڈھانپنا ضروری ہے)

۷۔میاں بیوی کا ازدواجی تعلقات قائم کرنا، جنسی گفتگو کرنا چاہے وہ گفتگو اپنی بیوی سے کیوں نہ ہو۔علاوہ ازیں ایسے اقوال وافعال جس سے طبیعت میں ہیجان پیدا ہو اور حیوانی جذبات مشتعل ہو کر بیدار ہو جائیں

ایام حج میں وقوف عرفات سے قبل نویں تاریخ تک عورت سے مجامعت کرنا حج کو فاسد کر دیتا ہے۔دوسرے سال دونوں کیلئے اس کی قضا لازم ہوگی، نیز عدم احتیاط کے جرم میں دونوں کیلئے قربانی لازم ہوگی (قدوری، عالمگیری) علاوہ ازیں محرم کیلئے اللہ تعالی کی نافرمانی کرنا، صغیرہ کبیرہ گناہ کا ارتکاب کرنا اور گالی گلوچ یا لڑائی جھگڑا کرنا عام حالات کی نسبت زیادہ قابل گرفت اور باعث نفرت ہے ان سے بچنا بہر حال لازم ہے۔

مذکورہ بالا ممنوعات ہیں کسی ایک کے ارتکاب کرنے یا غلطی سرزد ہو جانے پر خیانت کے احکام لازم آتے ہیں جو تین قسم کے ہیں۔

(۱)دم (۲)بدنہ (۳)صدقہ

## دم

دم سے مراد پوری بکری بھیڑ یا اونٹ، گائے وغیرہ کے ساتویں حصے کی قربانی ہے

## بدنہ

بدنہ سے مراد پوری گائے یا اونٹ ذبح کر کے صدقہ کر دینا ہے اسکے وجوب کا باعث یہ صورتیں ہیں۔

marfat.com

ا۔حیض ونفاس یا جنابت کی حالت میں طواف زیارت کرنا

۲۔وقوف عرفہ کے بعد حلق سے پہلے جماع کرنا (مگر اس سے قضا ساقط نہیں ہوگی)

## صدقہ

صدقہ سے مراد کچھ گندم یا اناج وغیرہ کسی فقیر کو دیتا ہے مزید تفصیلات کیلئے مستند کتب فقہ ملاحظہ فرمائیں۔

## طواف کے واجبات

طواف کے واجبات مندرجہ ذیل ہیں۔

1۔حدث اصغر یعنی بے وضو اور حدث اکبر یعنی ناپاکی حالت سے پاک ہونا۔

2۔طواف کی ابتداء اپنی داہنی جانب سے کرنا۔

3۔جسم کے ان حصوں کو چھپانا جو ستر میں شامل ہیں۔

4۔حجر اسود یعنی استلام یعنی بوسہ دینے سے طواف شروع کرنا ہجوم کی صورت میں اشارہ استلام ہی کافی ہے۔

5۔پیدل طواف کرنا معذور اس سے مستثنیٰ ہیں۔

6۔طواف مکمل ہونے کے بعد دو رکعت نفل پڑھنا۔

7۔ان چیزوں سے بچنا جو حالت احرام میں منع ہیں۔

8۔حطیم سے باہر طواف کرنا۔

علاوہ ازیں طواف کے دیگر ضروری مسائل سے آگاہی ضروری ہے۔طواف کے چند ضروری مسائل درج ذیل ہیں۔

marfat.com

o دوران طواف کھانا پینا مکروہ ہے

o جس طواف کے بعد سعی کرنا ہو اسمیں رمل اور اضطباع ضروری ہے رمل سے مراد پہلے تین چکروں میں پہلوانوں کی طرح خوب اکڑ اکڑ کر تیزی سے چلنا ہے جس سے طواف کرنے والا طاقت ور معلوم ہو حضور نبی اکرم ﷺ نے صحابہ رضی اللہ تعالی کو رمل کا حکم دیا تھا اضطناع سے مراد چادر داہنا حصہ اپنی داہنی بغل کے نیچے سے نکال کر بائیں مونڈھے پر ڈالنا ہے۔ خواتین رمل اور اضطباع دونوں سے مستثنی ہیں۔

o طواف کرتے وقت جماعت کھڑی ہو جائے تو طواف چھوڑ کر فرض نماز میں شریک ہو جائیں، نماز پڑھنے کے بعد بقیہ طواف مکمل کر لیں۔

o بیت اللہ سے جتنا قریب ہو سکے طواف کرنا افضل ہے۔

o جن اوقات میں نماز مکروہ ہے ان میں طواف کرنا مکروہ نہیں ہے۔

o اگر کسی نے سات چکر پورے کرنے کے بعد آٹھواں چکر بھی لگا لیا تو اب اسکے لیے ضروری ہے کہ وہ چھ اور مزید چکر لگائے کیونکہ نفلی عبادت کا شروع کرنے کے بعد پورا کرنا واجب ہو جاتا ہے۔

o طواف کے بعد سعی کرنا مسنون ہے سعی میں صفا مروہ کے درمیان سات پھیرے واجب ہیں۔

## ایام حج اور اوقات حج کی ادائیگی کا مختصر بیان

۸ ذی الحجہ سے ۱۲ ذی الحجہ کے پانچ دن ایام حج کہلاتے ہیں یہی دن سفر حج کے حامل ہیں کیونکہ انہی ایام میں حج کے جملہ مناسک ادا کرنا ہوتے ہیں۔

marfat.com

## ۸ ذی الحجہ

بہتر یہ ہے کہ سات ذی الحجہ کی رات کو ہی منی کے لئے روانگی کی تیاری کر لی جائے عمرہ کی تیاری اور نیت کی طرح ہو سکے تو پہلے غسل کرے ورنہ وضو کر کے احرام کی نیت کریں، احرام باندھ کر دو رکعت نفل پڑھیں اسکے بعد اسی جائے نماز پر حج کی نیت کریں نیت حج کے الفاظ بالکل نیت عمرہ کی طرح ہیں صرف یہاں العمرہ کی جگہ لفظ الحج کی تبدیلی کر لیں۔

## منٰی کی طرف روانگی

۸ ذی الحجہ کو مکہ مکرمہ میں نماز فجر ادا کر کے سورج نکلتے ہی منی کی جانب روانہ ہو جائیں۔ سفر میں کلمہ کثرت سے پڑھیں منی میں پہنچ کر ظہر، عصر، مغرب، اور عشاء کی نمازیں پڑھیں رات یہی قیام کریں ۹ ذی الحجہ کی نماز فجر بھی منی میں ادا کریں۔

## ۹ ذی الحج کو عرفات روانگی

نماز فجر منی میں ادا کرنے کے بعد سورج نکلنے پر عرفات کو روانہ ہو جائیں اور زوال سے قبل خورد و نوش سے فراغت حاصل کر کے فجر اور عصر کی نماز مسجد میں جا کر ادا کریں ورنہ اپنی اپنی جگہ ہی دونوں نمازیں باجماعت پڑھنی بھی جائز ہیں یہ دونوں نمازیں ظہر کے وقت ملا کر پڑھنا ضروری ہیں۔

## وقوف عرفات

میدان عرفات میں اسی قیام کو وقوف عرفات کہتے ہیں جو حج کا سب سے اہم

marfat.com

رکن ہے وقوف عرفات کی اہمیت اس سے واضح ہو جاتی ہیں کہ اگر کسی وجہ سے ۹ ذی الحجہ کے دن یا اس رات بھی کوئی عازم حج یہاں پہنچنے سے رہ جائے تو اس کا حج نہیں ہوگا ورنہ ہی اس کی تلافی کی کوئی گنجائش ہے یہاں خصوصی دعائیں، استغفار اوا کثرت سے حضور نبی اکرم ﷺ پر درود شریف پڑھیں کیونکہ حضور ﷺ نے بھی اسی میدان میں اپنی امت کیلئے خوب دعائیں فرمائی تھیں۔

## عرفات سے مزدلفہ روانگی

اس دن غروب آفتاب کے وقت مغرب کی نماز پڑھے بغیر مزدلفہ روانہ ہو جائیں ،مزدلفہ میں نماز مغرب اور عشاء باجماعت پڑھیں، رات مزدلفہ میں ہی قیام کریں اور اسی رات جی بھر کر اللہ کو یاد کریں کہ بڑی افضل رات ہے۔

## ۱۰ ذوالحجہ کو مزدلفہ سے منی روانگی

فجر کی نماز کے بعد مزدلفہ میں وقوف کریں کیونکہ یہ توقف واجب ہے پھر منی کو روانہ ہو جائیں۔ منی پہنچ کر حجاج کرام کو تین واجبات بالترتیب ادا کرنے ہوں گے۔ (یاد رہے کہ عید الاضحیٰ کا دن ہوتا ہے مگر حجاج کرام کو مصروفیات حج کی بناء پر اس نماز سے مستثنیٰ رکھا گیا ہے)

۱۔ بڑے شیطان کو رمی یعنی جمرہ کو کنکریاں مارنا۔ پہلی کنکری مارنے کے ساتھ ہی تلبیہ پڑھنا بند کر دیں۔

۲۔ رمی سے فارغ ہونے کے بعد قربانی کریں۔

۳۔ قربانی کے بعد سر منڈائیں یا کتر ادائیں لیکن عورتیں قصر ہی کروائیں یعنی

marfat.com

ایک پورے کے برابر بال کٹوادیں۔

اب احرام کھول کر غسل کرلیں اور اپنے اپنے کپڑے پہن لیں۔اب سے احرام کی سب (پابندی) پابندیاں سوائے مباشرت کے ختم ہوگئیں۔

## طواف زیارت کیلئے مکہ روانگی

احرام کھولنے کے بعد مکہ مکرمہ روانہ ہوجائیں اور چوتھا رکن طواف زیارت بھی ادا کریں یہ حج کے فرائض میں شامل ہے اور ۱۲ ذوالحجہ کا آفتاب غروب ہونے تک جائز ہے اس کے بعد دم (قربانی) واجب ہوگا، اور فرض بھی ذمہ رہے گا یہ طواف کسی حالت میں ساقط نہیں ہوتا اور نہ اسکا کوئی بدل ہے۔

## خواتین

اپنی ان فطری اور قدرتی مجبوریوں کے پیش نظر ایام حج میں باقی تمام امور اسی طرح سے انجام دے سکتی ہیں۔یہ طواف زیارت اس وقت تک کرنا جائز نہیں جب تک وہ پاک نہ ہوجائیں اور نہ (دم) واجب ہوگا، جبکہ اس تاخیر سے ان پر دم واجب نہیں ہوگا اور نہ ہی گناہ۔

## صفا مروہ کے درمیان سعی

اگر عازم حج نے حج تمتع کی نیت سے احرام باندھا تھا تو اس پر طواف کے بعد سعی کرنا واجب ہے لہذا یہ سعی بغیر احرام کے روزمرہ کے لباس میں ہی کریں۔

## مکہ سے منیٰ واپسی

جب حج کی ادائیگی ہوچکی تو اللہ کا شکر ادا کرتے ہو پھر منیٰ روانہ ہوجائیں طواف

marfat.com

زیارت کے بعد دو راتیں اور دو دن منیٰ میں قیام کرنا سنت موکدہ ہے مکہ میں یا کسی اور جگہ رات گزارنا ممنوع ہے۔ ۱۱، ۱۲ اور ۱۳ ذوالحجہ کو مناسک کی اصطلاح میں ایام تشریق کہتے ہیں ان تینوں تاریخوں میں تینوں جمروں کی رمی کی جاتی ہے رات کا وقت ۱۱ اور ۱۲ کو زوال کے بعد سے غروب آفتاب تک ہوتا ہے پہلے جمرہ اولیٰ پر سات کنکریاں ماریں پھر جمرہ وسطیٰ پر آئیں اور بعد ازاں جمرہ عقبہ پر آکر حسب سابق سات سات کنکریاں ماریں اور آگے نکل جائیں۔ پہلے اور دوسرے جمرے پر رمی کے بعد دعا واستغفار اور وقوف مسنون ہے لیکن تیرہ کے بعد تھہرنا یا دعا مانگنا ثابت نہیں یاد رہے کہ ہر بار کی ترتیب ضروری ہے۔

اسی طرح ۱۲ ذوالحجہ اور اگر چاہیں تو ۱۳ ذوالحجہ کو بھی رمی کریں۔ پھر واپس مکہ آجائیں اور راستے میں حج کی اس نعمت عظمیٰ کے حصول پر اللہ کا شکر ادا کریں اور دعا مانگیں۔

## طواف وداع

یہ حج کا آخری واجب ہے جو صرف میقات سے باہر رہنے والوں پر واجب ہے جب وہ مکہ سے رخصت ہونے لگیں تو آخری طواف کر لیں طواف وداع کا وقت طواف زیارت کے بعد سے شروع ہو جاتا ہے اس کے احرام [illegible] وقت خرید کیں [illegible] طواف کے بعد دو رکعت نماز نفل ضرور پڑھیں۔

پھر آب زمزم کے پیا استعمال کریں

[illegible]

marfat.com

الٰہی میں دل کھول کر روتے ہوئے یہ جائز دعائیں مانگیں اپنے لئے احباب کیلئے دوستوں کیلئے امت مسلمہ کے ہر فرد کیلئے کیونکہ یہ وقت اور یہ مقام شاید ہی دوبارہ میسر آئیں پھر کعبہ سے آبدیدہ رخصت ہو جائیں۔

## دربار رسالت ﷺ کی حاضری

اب عشاق اپنے اگلے سفر یعنی مدینہ منورہ کیلئے روانہ ہو جائیں۔اور اس حاضری کیلئے مچلتے جذبات، دھڑکتے دلوں اور برستی آنکھوں کے ساتھ کشاں کشاں اپنے آقا مولا ﷺ کے حضور بصد ادب واحترام حاضر ہوں جہاں عشاق کے دلوں کا حج ہوتا ہے۔

حاجیو! آؤ شہنشاہ کا روضہ دیکھو
کعبہ تو دیکھ چکے اب کعبے کا کعبہ دیکھو

دربار رسالت مآب ﷺ کی حاضری کی فضیلت و برکت اپنی جگہ مسلم ہے یہاں اس کے ذکر کی قطعاً گنجائش نہیں البتہ حضور نبی اکرم ﷺ کے چند مشہور ارشادات ملاحظہ ہوں۔

من حج ولم یزرنی فقد جفانی (عجلونی کشف الخفاء۲:۳۲۰،رقم:۲۴۶۰)

جس نے حج کیا (اور حج کے بعد مدینہ تک پہنچنے کی طاقت ہوتے ہوئے حج کر کے ہی واپس چلا گیا) اور میری زیارت کو نہ آیا اس نے مجھ پر ظلم کیا۔

مَنْ زار قبری وجبت لہٗ شفاعتی
(دار قطنی السنن،۲:۲۷۸،رقم:۱۹۴،بیہقی،شعب الایمان۳،۴۹۰،رقم۴۱۵۹)

جس نے میری قبر کی زیارت کی اس کے لیے میری شفاعت واجب ہوگئی۔

marfat.com

مَنْ زارنی بعد موتی فکانما زارنی فی حیوتی (طبرانی المعجم الاوسط:۹۴،۳۸۷)

جس نے میری وصال کے بعد میری زیارت کی گویا کہ اس نے مجھے میری زندگی میں ہی دیکھا۔

مَنْ زَارَ قَبْرِیْ بَعْدَ مَوْتِی کَانَ کَمَنْ زَارَنِی فِی حَیَاتِیْ

(دار قطنی، السنن:۲،۲۷۸،رقم:۱۹۳)(بیہقی، شعب الایمان:۳،۴۸۸،رقم:۴۱۵۱)

جس نے میرے وصال کے بعد میری قبر کی زیارت کی گویا کہ اس نے میری زندگی میں میری زیارت کی۔

اور بقول پروفیسر علامہ محمد سلیمان اشرف ان دونوں آخری حدیثوں کا مطلب یہ ہے کہ زمانہ رسالت ﷺ میں جس طرح دیکھنے والوں کو نہ دیکھنے والوں پر فضیلت حاصل تھی اس طرح آپ ﷺ کے پردہ فرما جانے کے بعد جو مزار مقدس کی زیارت سے فائز ہوا وہ اس پر فضیلت رکھتا ہے جو مزار مطہر کی زیارت نہ کر سکا۔ یعنی زائر کو غیر زائر پر فضیلت حاصل ہے۔

جانم فدائے دیدہ کہ روئے تو دیدہ است
قربان پا شوم کہ بکویت رسیدہ است
خوشا چشم کہ دید آں مصطفیٰ را
خوشا دل کہ وارد خیال محمد ﷺ

marfat.com

# پانچواں رُکن: روزہ

ارکان اسلام میں روزہ پانچواں بنیادی رکن ہے جس کی پابندی شہادت توحید ورسالت اورنماز کے بعد فرض کا درجہ رکھتی ہے زیرنظر موضوع ان حکمتوں سے متعلق ہے جو فرضیت روزہ عمومی حکم میں کارفرما ہیں جس کے تحت ہم روزے کے افادی پہلوؤں کا تفصیل کے ساتھ جائزہ لیں گے۔

## روزے کی فرضیت

قرآن حکیم میں اللہ رب العزت روزے کی فرضیت کے باب میں بلا استثنائے مرد وزن تمام اہل ایمان سے ارشاد فرماتے ہیں۔

آیت : **یاایھاالذین امنوا کتب علیکم الصیام کما کتب علی الذین من قلبکم لعلکم تتقون**

ترجمہ: اے ایمان والوں تم پر اسی طرح روزے فرض کئے گئے ہیں جیسے تم سے پہلے لوگوں پر فرض کئے گئے تھے تا کہ تم پرہیز گار بن جاؤ (البقرۃ ۲:۱۸۳)

اس آیت کریمہ میں دو باتیں بصراحت بیان کی گئی ہیں ایک یہ کہ روزے صرف امت محمد یہ ﷺ پر ہی نہیں بلکہ امم سابقہ پر فرض کئے گئے تھے اور دوسرا روزے کا مقصد بیان کیا گیا ہے۔

ثقہ روایت کے مطابق روزے کی فرضیت کا حکم دوسری صدی ہجری میں تحویل کعبہ کے واقعہ سے دس روز بعد ماہ شعبان میں نازل ہوا۔ آیت روزہ شعبان کے مہینے

marfat.com

میں نازل ہوئی جس میں رمضان المبارک کو ماہ صیام قرار دیتے ہوئے باری تعالی نے اہل ایمان سے ارشاد فرمایا

آیت: فمن شهد منكم الشهر فليصمه (البقرۃ۲،۱۸۵)

ترجمہ: پس تم میں سے جو کوئی اس مہینہ کو پالے تو وہ اسکے روزے ضرور رکھے

اس آیت مبارکہ میں روزہ رکھنے کا حکم ہر اس صاحب ایمان کو دیا گیا ہے جو اپنی زندگی میں اس ماہ مقدس کو پالے۔

امت مصطفوی ﷺ سے پہلے یہودی نصاری دس محرم الحرام (عاشورہ) کا روزہ بااہتمام رکھتے تھے۔اس طرح ہر قمری مہینے کی تیرھویں، چودھویں، اور پندرھویں تاریخ کے تین دن جنہیں ایام بیض کے نام سے موسوم کیا جاتا ہے۔ کے روزے پہلی امتیں بڑے اہتمام کیساتھ رکھا کرتی تھیں۔رمضان المبارک کے روزوں کی فرضیت کے بعد ان روزوں کی حیثیت بریں بنا سنت کا درجہ اختیار کر گئی کہ آنحضور ﷺ کا عاشورہ ایام بیض کے روزے رکھنے کا معمول مدت العمر قائم رہا۔روزے کی فرضیت کا منکر کافر اور اسکا تارک گنہگار ہے۔

آیت مبارکہ میں دوسری چیز جو بیان کی گئی ہے وہ روزے کا مقصد ہے جو کہ تقوی ہے یعنی روزہ انسان میں تقوی پیدا کرتا ہے اگر انسان روزے رکھ کر بھی تقوی حاصل نہیں کرتا پھر انسان نے روزے کے حقیقی مقصد کو نہیں پایا

## روزے کے واجبات اور شرائط

روزے کو عربی میں صوم کہتے ہیں جس کا لغوی معنی کسی ارادی فعل سے باز رہنے

marfat.com

اور رک جانے کا ہے۔ اصطلاح شریعت میں روزے کی درجہ ذیل تعریف بیان کی گئی ہے الامساك عن المفطرات مع اقتران النية به من طلوع الفجر الی غروب الشمس روزے کی نیت کے ساتھ طلوع فجر سے غروب آفتاب تک ہر قسم کے مفطرات سے رک جانا (تفسیر القرطبی ۲،۲۷۳)

بعض علمائے فقہ نے الامساک عن المفطرات کا معنی (الامساك عن الاكل وشرب والجماع) کھانے پینے اور عمل زوجیت سے باز رہنا بیان کیا ہے فقہی اعتبار سے پو پھٹنے سے لے کر غروب آفتاب تک کھانے پینے اور ازواجی تعلق (مباشرت) سے باز رہنے کے عمل کو صوم سے تعبیر کیا جاتا ہے اس بنا پر روزہ مندرجہ ذیل پانچ چیزوں کو ملحوظ رکھنے سے عبارت ہے

(۱) کھانے سے اجتناب، (۲) پینے سے اجتناب، (۳) ازدواجی تعلق سے اجتناب، (۴) روزے کی مدت، (۵) اجتناب کی نیت۔

یہاں یہ بات ذہن نشین رہے کہ متذکرہ بالا افعال کا صدور اس وقت روزے کی اہمیت اختیار کرتا ہے جب یہ بہ نیت روزہ ہو بغیر نیت کے محض بھوک اور پیاس کو اپنے اوپر طاری کر لینا روزہ قرار نہیں دیا جا سکتا۔

## روزہ گزشتہ گناہوں کا کفارہ ہے

حضور نبی کریم ﷺ نے ارشاد فرمایا:۔

عن ابی هريرة رضی الله تعالی عنه قال قال رسول ﷺ من صام رمضان ايماناً واحتساباً غفرله ماتقدم من ذنبه

حضرت ابوھریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے راویت ہے کہ انہوں نے کہا کہ حضور نبی

marfat.com

اکرم ﷺ نے ارشاد فرمایا، جس شخص نے ایمان اور احتساب کے ساتھ رمضان کا روزہ رکھا اس کے پچھلے گناہ معاف کر دیئے جاتے ہیں۔

(صحیح البخاری ۱:۱۰ کتاب الایمان رقم حدیث ۳۸)

اس حدیث مبارکہ میں روزہ رکھنے اور رمضان المبارک میں قیام کرنے کے ساتھ ایمان اور احتساب کی شرائط لگادی یعنی اس حالت رمضان المبارک کے روزے رکھے اور راتوں کو قیام کرے کہ حضور ﷺ سے ثابت شدہ سب چیزوں کی تصدیق کرے اور فرضیت صوم کا اعتقاد بھی رکھے تو اس کو ایمان کا روزہ کہا جائے گا احتساب کا معنی یہ ہے کہ اللہ تعالیٰ سے طلب ثواب کے لئے یا اس کے اخلاص کی وجہ سے روزہ رکھا اور روزے کی حالت میں صبر کا مظاہرہ کیا اور اپنے نفس کا محاسبہ کرتا رہا۔

جو آدمی ایمان اور احتساب کے ساتھ رمضان المبارک کے روزے رکھتا ہے اور رمضان المبارک کی راتوں میں قیام کرتا ہے تو اس کے تمام صغائر معاف کر دئے جاتے ہیں اور کبائر کی معافی کی امید رکھی جاسکتی یا کبائر کا بوجھ بھی ہلکا ہو سکتا ہے۔

ایک روایت میں یہ الفاظ بھی ہیں

حدثنی عبدالرحمن بن عوف رسول ﷺ قال۔من قام رمضان ایماناً واحتساباً خرج من ذنوبه کیوم ولدته امه۔

(سنن النسائی ۱:۳۰۸، کتاب الصیام۔رقم حدیث ۲۲۰۸)

حضرت عبدالرحمٰن بن عوف رضی اللہ عنہ بیان کرتے ہیں کہ حضور نبی کریم ﷺ نے ارشاد فرمایا:۔

جس نے ایمان اور احتساب کے ساتھ رمضان کے روزے رکھے وہ گناہوں سے اس طرح پاک ہو جاتا ہے جس طرح ابھی ماں کے پیٹ سے پیدا ہوا ہو۔

marfat.com

# روزے دار کے حصے میں دو خوشیاں ہیں

حضور نبی اکرم ﷺ نے ارشاد فرمایا:۔

**لصائم فرحتان یفرحهما۔اذا افطر فرح واذالقی ربه فرح بصومه**

روزے دار کیلئے دو خوشیاں ہیں ایک افطار کے وقت اور دوسری خوشی اپنے رب سے ملاقات کے وقت ( صحیح البخاری ا۔۲۵۵ کتاب الصوم رقم الحدیث ۱۸۰۵)

ایک خوشی ہر روزے دار کو اس وقت میسر ہوتی ہے جب وہ کڑے دن کی بھوک اور پیاس کے بعد لذت طعام سے آسودہ ہوتا ہے دوسری خوشی حضور نبی ﷺ کے ارشاد کیمطابق اس وقت نصیب ہوگی جب عالم اُخروی میں اسے دیدار الٰہی کی نعمت عظمیٰ سے نوازا جائے گا۔

متعدد احادیث مبارکہ اس مضمون پر دلالت کرتی ہیں کہ شہید کی روح قفس عنصری سے پرواز کر رہی ہوتی ہے تو اس لمحہ اسے خدا کا دیدار نصیب ہوتا ہے روایات میں ہے کہ اہل جنت سے جب اللہ رب العزت پوچھیں گے کہ میری جنت میں کس چیز کی ہے تو وہ بے اختیار پکار اٹھیں گے کہ باری تعالیٰ تیری جنت میں ہر نعمت موجود ہے ایک گوشے میں شہید سکوت برلب اس حال میں بیٹھے ہوں گے کہ ان کے چہروں سے قدر اضطراب اور آشفتگی کے آثار مترشح ہوں گے۔ان کی اداسی اور شیر مردگی کا سبب پوچھا جائے گا تو وہ جواب دیں گے کہ اے باری تعالیٰ یوں تو تیری جنت میں کسی چیز کی کمی نہیں لیکن اس میں ایک چیز کی کمی ہے جو بہت شاق گزر رہی ہے۔تو رب تعالیٰ پوچھے گا وہ کیا ہے،تو ان کا جواب ہوگا۔اے مولا ہمیں تیری جنت میں وہ لذت وحلاوت

marfat.com

میسر نہیں۔ جو تیری راہ میں جان دیتے ہوئے نصیب ہوئی تھی، کاش ہمیں دنیا میں پھر واپس بھیج دیا جائے تا کہ بار دیگر تیری راہ میں جہاد کریں۔ جسکے حصول کے لئے شہید بار بار اپنی جان کا نذرانہ پیش کرنے کی آرزو کرے گا۔

## روزے کا اجر وثواب

عن ابی هریرة رضی الله تعالی عنه قال قال رسول ﷺ، کل عمل ابن آدم یضاعف الحسنة الی ماشاء الله یقول الله تعالی۔ الاالصوم فانه لی۔ وانا اجزی به۔

حضرت ابوھریرہ رضی اللہ سے روایت ہے کہ حضور ﷺ نے ارشاد فرمایا آدم کے بیٹے کا نیک عمل دس گنا سے لے کر سات سو گناہ تک بڑھایا جاتا ہے۔ اللہ تعالی فرماتے ہیں کہ روزہ اس سے مستثنی ہے کہ اسکی جزا میں دوں گا اس حدیث مبارکہ سے یہ چیز واضح ہوتی ہے کہ بعض اعمال کو ثواب صدق نیت اور اخلاص کی وجہ سے دس گنا سے بڑھ کر سات سو گنا تک بلکہ بعض دفعہ اس سے بھی زیادہ ثواب ہوتا ہے اس کی مقدار اللہ کے سوا کوئی نہیں جانتا ہے۔

## روزے کی فضیلت کے اسباب

روزے کی اس قدر فضیلت کے درج ذیل اسباب بیان کئے گئے ہیں۔

(۱) ایک تو یہ ہے کہ روزہ لوگوں سے پوشیدہ ہوتا ہے اسے اللہ کے سوا کوئی نہیں جان سکتا جبکہ دوسری عبادتوں کا یہ حال نہیں ہے کیونکہ ان کا حالوگوں کو معلوم ہو سکتا ہے۔

اس لحاظ سے روزہ خالص اللہ تعالی کے لئے ہی ہے۔ فانہ لی سے اسی چیز کی طرف اشارہ ہے۔

marfat.com

(۲)دوسرا سبب یہ ہے کہ روزے میں نفس کشی مشقت اور جسم کا نقصان ہوتا ہے۔اس سے بھوک پیاس اور دیگر خواہشات نفسانی پر صبر کرنا پڑتا ہے جبکہ دوسری عبادتوں میں اس قدر مشقت اور نفس کشی نہیں ہے۔

(۳)نواب صدیق بھوپالی فانہ لی اورانا اجزی لہ کی شرح میں لکھتے ہیں کہ روزے کواللہ تعالی کی طرف منسوب کرنے کی ایک علت یہ بھی ہے کہ ویسے تو ساری عبادات وطاعات اللہ ہی کے لیے ہوتی ہیں۔لیکن روزے کے ساتھ کبھی غیر اللہ کی عبادت نہیں کی گئی کیونکہ کفار مشرکین نے کسی دور میں بھی اپنے کسی معبود کی تعظیم روزے کے ساتھ نہیں کی۔اگر چہ وہ نمازی سجدے اور ذکر ونیاز کی بعض صورتوں کے ساتھ وہ اپنے معبود یعنی باطل کی تعظیم وعبادت کیا کرتے تھے پس اس وجہ سے روزہ صرف اللہ تعالی کے ساتھ خاص ہے۔

(۴)ایک وجہ یہ بھی ہے کہ روزہ میں ریا کاری کا عمل دخل نہیں ہوتا جبکہ دوسری ظاہری عبادات مثلاً نماز،حج،زکوۃ،صدقہ،میں ریا کاری کا شائبہ ہوسکتا ہے۔

(۵)امام خطابی رحمتہ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ روزے کی اس خصوصیت کی وجہ یہ بھی ہے کہ روزے دارکوروزہ میں حظ نفسانی حاصل نہیں ہوتا۔لہذا روزہ اللہ ہی کیلئے مخصوص ہے۔

(۶)اور یہ بھی کہا جاتا ہے کہ کھانے پینے سے استغناء اللہ تعالی صفات میں سے ہے روزہ دار اگر چہ اللہ تعالی کی اس صفت سے متشابہ تو نہیں ہوسکتا۔لیکن وہ ایک لحاظ سے اپنے اندر یہ صفت پیدا کر کے مقرب الہی بن جاتا ہے۔

(۷)اس کے ثواب کی مقدار کا علم اللہ تعالی کے سوا کسی کو نہیں ہے جبکہ باقی عبادات کے ثواب کورب تعالی نے مخلوق پر ظاہر کر دیا ہے۔اس لئے یہ عبادت اللہ کے لیے مخصوص ہے۔

marfat.com

(۸) باقی تمام عبادات سے تو حقوق العباد کی کوتاہیوں کی تلافی ہوگی۔لیکن روزہ اس مقصد کے لئے میدان حشر میں خرچ نہیں کیا جائے گا۔

(۹) روزہ ایسی عبادت ہے جسے اللہ کے سوا کوئی نہیں جانتا فرشتے بھی معلوم نہیں کر سکتے۔

(۱۰) روزہ کی اضافت اللہ کی طرف شرف اور عظمت کے لیے ہے ورنہ سارے گھر اللہ ہی کے ہیں۔

(۱۱) روزہ دار اپنے اندر ملائکہ کی صفت پیدا کرنے کوشش کرتا ہے اس لئے وہ اللہ کو محبوب ہے۔

(۱۲) صبر کی جزاء کی حد نہیں ہے اس رمضان کے روزے کی جزا کو بے حد قرار دیتے ہوئے اللہ تعالی نے اس کو اپنی طرف منسوب کیا کہ اسکی جزا میں ہوں۔

حضور نبی اکرم ﷺ نے ارشاد فرمایا:۔

(الصوم جنة من النار كجنة احد كم من القتال)

حضرت عثمان غنی بن ابی العاص رضی اللہ تعالی عنہ سے مروی ہے کہ انہوں نے فرمایا کہ میں نے حضور ﷺ سے سنا ہے فرمایا کہ روزہ جہنم کی آگ سے ڈھال ہے جیسے تم میں سے کسی شخص کے پاس لڑائی کی ڈھال ہو۔جس طرح کہ میدان جنگ میں ڈھال غازی کے ہاتھ میں ہوتی ہے پس گویا کہ روزہ بطور تمثیل اس کی ڈھال بن جائے گا۔اس حدیث کے مطابق نماز مومن کے ایمان کی برھان اور دلیل ہے کیونکہ برہان دائیں طرف ہوتی ہے۔گویا کہ مدعی کے لئے بطور شاھد ہے اور غازی کی دشمن کے وار سے بچاتی ہے اور خود غازی کو بری الزمہ کرتی ہے پس اب واضح ہو گیا کہ

marfat.com

غازی کا برھان ہونا اور روزے کا ڈھال ہونا محض بطور اندازہ اور مجاز وتخیل کی قسم سے نہیں بلکہ ان دونوں میں جو مخصوص معنی پایا جاتا ہے اسکے باعث یہ نام رکھا جانا مناسب ہے۔

امام احمد رحمتہ اللہ کی روایت میں ( جنة وحصن حصين من النار) کے الفاظ ہیں جبکہ دوسری روایت میں (الصيام جنة يخرقها) کے الفاظ ہیں۔

امام دارمی رحمتہ اللہ نے اسمیں بالغیبۃ کے الفاظ کا اضافہ کیا ہے دارمیؒ اور ابوداؤد نے اس لفظ کر ترجمۃ الباب میں بھی رکھا ہے جنت کے لفظ کا معنی وقایہ اور ستر ہے ان روایت سے ستر کا متعلق واضح ہو گیا کہ وہ النار ہے۔ امام بن عبدالبر نے اس حدیث کی شرح میں اس کو بالجزم لکھا ہے، لیکن صاحب نہایہ لکھتے ہیں کہ روزے کے ڈھال ہونیکا مطلب یہ ہے کہ وہ روزہ دار کو موذی شہوات سے باز رکھتا ہے۔ امام قرطبی فرماتے ہیں کہ روزہ کے ڈھال ہونے کا مطلب یہ ہے کہ وہ اپنی مشروعیت کے لحاظ سے سترہ اور حفاظت کا سامان ہے پس روزہ دار کا فرض ہے کہ اسے ایسی چیزوں سے بچائے جو اسے فاسد کر دیتی ہیں اور ثواب کم کر دیتی ہیں اور یہ بھی صحیح ہے کہ روزہ کو اس کے فائدہ کے لحاظ سے ڈھال قرار دیا جائے کہ وہ شہوات نفس کو ضعف کر دیتا ہے۔

قاضی عیاضؒ نے اکمال میں فرمایا ہے کہ جنتہ کا معنی ہے کہ روزہ گناہوں اور آگ سے حفاظت کا سبب ہے۔ امام ابن عربی فرماتے ہیں کہ روزہ ڈھال اس لئے بنایا گیا ہے کہ جہنم کو شہوات کے ساتھ گھیرا کیا ہے۔ پس جو آدمی شہوات سے بچے گا وہ جہنم سے محفوظ رہے گا اور روزہ شہوات سے چونکہ بچاتا ہے اس لئے جہنم کی آگ کیلئے ڈھال بن جاتا ہے جنتہ کا معنی ڈھال اور پس پردہ اور بچاؤ کا سامان روزہ گناہوں

marfat.com

اور جہنم سے بچاؤ کا باعث ہے۔ الصیام جنۃ کی مراد صحیح ابن حبان اور مسند احمد کی صحیح حدیث سے واضح ہو جاتی ہے۔ کہ جس میں آتا ہے کہ میت کو جب اسکی قبر میں دفن کیا جاتا ہے تو نماز اس کی دائیں طرف سے آجاتی ہے روزہ بائیں طرف سے قرآن سر کی جانب سے اور صدقہ پاؤں کی جانب سے آجاتا ہے اس سے معلوم ہوا کہ روزہ کی محافظت روزہ دار کیلئے فقط روزے سے ہی نہیں بلکہ دوسری عبادات سے بھی ہوگی۔ روزہ کی خصوصیت یہ ہے کہ وہ عذاب سے روزہ دار کو بچائے گا اور اسکے دائیں طرف آجائے گا۔

## روزہ دار کے منہ کی ہوا کا متغیر ہو جانا

حضور نبی اکرم ﷺ نے ارشاد فرمایا:۔

عن ابی هریرة رضی الله عنه قال قال رسول ﷺ والذی نفس محمد بیده لخلوف فم الصائم اطیب عندالله یوم القیامة من ریح المسك

حضرت ابوھریرہ رضی اللہ تعالی عنہ نے ارشاد فرمایا:۔

جس کے قبضہ قدرت محمد ﷺ کی جان ہے روزہ دار کے منہ کی ہوا اللہ کے نزدیک یوم قیامت مشک کی خوشبو سے بھی زیادہ بہتر ہے۔

(صحیح المسلم کتاب الصیام باب الصیام رقم حدیث ۱۱۵۱)

امام رازی فرماتے ہیں کہ اس کلام میں مجاز اور استعارہ ہے، کیونکہ بعض قسم کی خوشبوں کی طرف میدان طبع اور بعض سے نفرت مخلوق کا خاصہ ہے اللہ تعالی اس سے پاک ہے اور چونکہ انسان اپنے محاورات میں خوشبوں کی تعریف کرنے اور اس کی اچھائی کو بیان کرنے کا عادی ہے لہذا اللہ تعالی کے متعلق بھی محاوراتی کلام کے رنگ میں اس کی رضا و خوشنودی کے بارے میں یہ لفظ استعمال کیا گیا ہے۔

قاضی عیاض فرماتے ہیں کہ اس سے مراد یہ ہے کہ اللہ تعالی روزہ دار کو اس بو کے عوض جو خلو معدہ کی وجہ سے منہ میں پیدا ہو جاتی ہے کہ قیامت میں بہترین خوشبو بطور جزا دیں گے جیسا کے احادیث میں آیا ہے کہ شہید کے خون کی خوشبو مشک جیسی ہوگی۔

امام نووی ؒ نے اس جملہ کی شرح میں فرمایا کہ صحیح ترین اس کا معنی یہ ہے کہ خلوف صائم کا ثواب اللہ تعالی کے ہاں مشک سے بھی زیادہ ہے۔ عیدین اور جمعہ کے موقع پر مشک کے استعمال کو بہت زیادہ پسند کیا جاتا ہے مطلب یہ ہے کہ اللہ تعالی کے نزدیک خلوف کا ثواب مشک کی اس محبوبیت سے بھی زیادہ ہے۔

## جنت کے دروازہ کا کھل جانا اور جہنم کے دروازے کا بند ہونا

عن ابی هریرة رضی الله تعالی عنه قال قال رسول ﷺ اذا دخل شهر رمضان فتحت ابواب الجنة وغلقت ابواب جهنم وسلسلت الشياطين۔

(صحیح البخاری ۱:۲۵۵، کتاب الصوم رقم الحدیث ۱۸۰۰)

حضرت ابوھریرہ رضی اللہ تعالی عنہ سے روایت ہے کہ حضور نبی اکرم ﷺ نے ارشاد فرمایا جب رمضان داخل ہو جاتا ہے تو آسمان کے دروازے کھل جاتے ہیں ایک اور روایت میں ہے کہ جنت کے دروازے کھل جاتے ہیں اور جہنم کے دروازے بند کر دئے جاتے ہیں اور شیاطین کو زنجیروں میں جکڑ دیا جاتا ہے آسمان کے دروازے کھلنا کنایہ ہے۔ اس سے مراد یہ ہے کہ رحمت خداوندی پے در پے نازل ہوتی ہے۔ اور نیک اعمال کسی رکاوٹ کے بغیر اوپر چڑھتے ہیں اور دعا قبول ہوتی ہے اور جنت کے دروازوں کا کھولا جانا اس امر کی طرف اشارہ ہے کہ رمضان میں نیک اعمال کو توفیق ہوتی ہے جو حصول جنت کا باعث ہیں اور دوزخ کے دروازوں کے بند کئے

marfat.com

جانے سے مراد یہ ہے کہ روزہ دار کو ایسے اعمال کی توفیق دی جاتی ہے کہ جو جنت میں داخل ہونے کا باعث ہیں۔

کیونکہ وہ کبائر سے بچتا ہے اور روزے کی برکت سے اس کے صغیرہ گناہ بخش دیئے جاتے ہیں۔

شیطانوں کو جکڑ دیا جاتا اس امر سے کنایہ ہے کہ شیطان لوگوں کو بہکانے سے باز رہتے ہیں۔اور اہل ایمان ان کے وسوسے قبول نہیں کرتے۔اسکی وجہ یہ ہے کہ روزے کی وجہ سے حیوانی قوت جو غضب اور شہوت کی جڑ ہے جاتی رہتی ہے اور غضب اور شہوت ہی بڑے بڑے گناہوں کا باعث ہوتے ہیں۔

قوت عقلیہ جو طاعت اور نیکیوں کا باعث ہے روزے کی وجہ سے قوی ہوتی ہے جیسا کہ مشاہدہ ہے کہ رمضان میں اور دنوں کی نسبت گناہ کم ہوتے ہیں اور عبادت زیادہ ہوتی ہے۔

## شیطانوں کے جکڑے جانے کا مفہوم

اگر اس کو ظاہری معنی پر محمول کیا جائے پھر یہ سوال پیدا ہوتا ہے کہ یہ بات دیکھنے میں آتی ہے کہ بعض نافرمان لوگ گناہ کرتے دیکھے جاتے ہیں۔اگر وہ ایک قسم کا گناہ ترک کردیں گے تو دوسری قسم کو اختیار کرلیں گے۔

اسکا جواب یہ ہے کہ شیطانوں کے جکڑے جانے کی علامت یہ ہے کہ گناہوں میں منہمک ہونے والے اکثر لوگ رمضان میں باز آجاتے ہیں اور توبہ کرے اللہ کی طرف رجوع کرتے ہیں پہلے وہ نماز قائم نہیں کرتے تھے اب پڑھنے لگتے ہیں اور اس طرح وہ

marfat.com

قرآن مجید کی تلاوت اور ذکر کی محافل میں شریک ہونے لگتے ہیں۔ حالانکہ وہ پہلے ایسا نہیں کرتے تھے پہلے جن گناہوں میں علی الاعلان مشغول رہتے تھے۔ اب اس سے باز آجاتے ہیں اور بعض جن کا عمل اس کے خلاف نظر آتا ہے۔ اس کی وجہ یہ ہے کہ شیطانی وساوس ان کے شریر نفوس کی جڑوں میں سرایت کر چکے ہوتے ہیں اور یہ بھی حکمت ہے جیسا کہ دوسری حدیث کے الفاظ سے واضح ہے سلسلت مردہ الشیاطین، شیطانوں کے سردار کو جکڑ دیا جاتا ہے۔ ضروری نہیں کہ سب شیاطین کو جکڑ دیا جاتا ہے اسکا مطلب یہ ہوگا کہ شیطانوں کے سردار (ابلیس) کو جکڑ دیا جاتا ہے لیکن اسکے چھوٹے چیلے چانٹے نہیں جکڑے جاتے بلکہ وہ اپنے کام میں مصروف رہتے ہیں۔ دوسری بات یہ ہے کہ گناہوں کا وقوع شیطانوں پر ہی منحصر نہیں کیونکہ زمانے میں شر تو موجود ہے اور گناہ بھی مسلسل ہو رہیں۔ تو پھر اسکے جکڑنے کا کیا فائدہ اسکا جواب یہ ہے اس سے اسکی سرکشی اور طغیانی کی شوکت ٹوٹتی ہے۔ اور اسکے ہتھیار کند ہو جاتے ہیں اور اسکی بھڑکائی ہوئی آگ کچھ مدت کیلئے ٹھنڈی پڑ جاتی ہے اور اگر ایسا نہ ہو تو خدا بھی جانتا ہے کہ وہ کیا گل کھلاتا ہے کیونکہ وہ اپنے لاؤ لشکر اور چیلے چانٹوں کی مدد اور تعداد پر مغرور ہے۔

## باب الریان

حضور نبی اکرم ﷺ نے ارشاد فرمایا:

عن سهل بن سعد قال قال رسول الله ﷺ ان فی الجنة بابا یقال له الریان یدخل منه الصائمون یوم القیامة لایدخل منه احد غیرهم

(صحیح بخاری ج ۱: ص ۲۵۴۔ کتاب الصوم باب الریان الصائمین رقم حدیث: ۱۷۹۷)

ترجمہ:۔ حضرت سہل بن سعد رضی اللہ تعالیٰ فرماتے ہیں کہ حضور نبی کریم ﷺ

marfat.com

نے ارشاد فرمایا کہ جنت میں ایک دروازہ ہے جسکا نام ریان ہے روزے قیامت اسمیں روزہ دار داخل ہوں گے انکے علاوہ کوئی دوسرا اسمیں داخل نہیں ہوگا جنت میں انسانوں کے اعمال کے اعتبار سے کئی دروازے ہیں پس جو شخص دنیا میں کوئی عمل کرے گا وہ جنت میں اس عمل کے دروازے سے داخل ہوگا۔

ریان کی وجہ تسمیہ کے بارے میں محدث ملا علی قاریؒ فرماتے ہیں کہ یا تو وہ ریان ہے، کیونکہ اسکی طرف کثیر نہریں جاری ہیں اسکے قریب تازہ اور سرسبز و شاداب پھل پھول بکثرت ہیں قیامت کے دن اسکے ذریعے سے لوگوں کی پیاس زائل ہوگی اور تر و تازگی و نظامت ہمیشہ رہے گی اس لئے صرف رمضان کے روزے رکھنے والا ہی نہیں بلکہ کثرت سے نفلی روزے رکھنے والا بھی اس کا مستحق ہوگا۔

## معمولات مصطفوی صلی اللہ علیہ وسلم

اجمالی طور پر حضور اکرم صلی اللہ علیہ وسلم کے معمولات رمضان المبارک کو یوں بیان کیا جاسکتا ہے۔

(۱) صیام رمضان:۔ اس سے مراد ماہ رمضان کے درمیان اپنے اوپر روزوں کی پابندی کو لازم ٹھہرالینا ہے

(۲) قیام رمضان:۔ رمضان المبارک کی راتوں میں نماز تراویح تسبیح و تہلیل اور کثرت سے ذکر و فکر میں مشغول رہتا ہے

(۳) ختم قرآن:۔ دوران ماہ رمضان المبارک مکمل قرآن پاک کی تلاوت کا معمول۔

(۴) اعتکاف:۔ رمضان المبارک کے آخری عشرہ ایام سے' اعتکاف کی نیت مسجد میں بیٹھنا۔

(۵) نماز تہجد:۔ سال کے بقیہ مہینوں کی نسبت رمضان المبارک میں تہجد کی ادائیگی میں زیادہ انہماک اور ذوق و شوق۔

marfat.com

(۶)صدقہ وخیرات:۔حضور نبی کریم ﷺ اس مہینے میں عام مہینوں کی نسبت صدقہ وخیرات بھی کثرت سے کیا کرتے تھے۔

## روزے میں سحری وافطاری کا معمول

رمضان المبارک میں پابندی کے ساتھ سحری وافطاری کے بے شمار فوائد اور فیوض وبرکات کی حامل ہے حضور ﷺ بالالتزم روزے کا آغاز سحری کے کھانے سے فرماتے تھے اس سلسلے میں آپ ﷺ نے ارشاد فرمایا۔

عن انس قال قال نرسول ﷺ تسحروا وافان فی السحور برکة

ترجمہ: حضرت انس بن مالکؓ سے مروی ہے کہ حضور ﷺ نے فرمایا:: سحری کھایا کرو، کیونکہ سحری میں برکت ہے (صحیح البخاری: ج۱۔۲۵۷ حدیث نمبر ۱۸۲۳)

**برکت سے کیا مراد ہے:** برکت سے مراد اجر عظیم ہے کیونکہ اس سے ایک تو سنت ادا ہوتی ہے اور دوسرا روزہ کے لیے قوت وطاقت مہیا ہوتی ہے۔علامہ ابن ہمامؒ نے فرمایا کہ اس حدیث میں برکت سے مراد دوسرے دن کے روزے کی قوت حاصل ہے حدیث مبارکہ میں بھی اس کا ذکر ملتا ہے۔

عن ابن عباس قال قال رسول اللہ ﷺ استعینوا بطعام اسحر علی صیام النھار وبقیلولة النھار علی قیام اللیل

دن کو قیلولہ کر کے رات کی نماز کیلئے مدد حاصل کرو اور سحری کھا کر دن کے روزے کی قوت حاصل کرو (سنن ابن ماجہ: ۱۲۳ کتاب الصیام۔رقم حدیث ۱۶۹۳)

حضور اکرم ﷺ اکثر اوقات کھجوروں سے روزہ افطار فرمایا کرتے تھے حضرت سلیمان بن عامرؓ سے روایت ہے کہ آنحضرت ﷺ نے ارشاد فرمایا:

marfat.com

اذا افطر احدکم فلیفطر علی تمر فانه برکة فان لم یجد فلیفطر علی ماء فانه طهور۔

جب تم میں سے کوئی روزہ افطار کرے تو اسے چاہیے کہ کھجور سے کرے کیونکہ اسمیں برکت ہے اگر کھجور میسر نہ ہو تو پانی سے کیونکہ پانی پاک ہوتا ہے۔

(جامع الترمذی ج ۱، ۸۳ کتاب لازکوۃ رقم حدیث ۶۵۸)

## شرائط وجوب

روزہ پانچ شرائط کے ساتھ فرض ہوتا ہے وہ یہ ہیں۔

(۱) مسلمان ہونا

(۲) عاقل ہونا، بالغ ہونا

(۳) تندرست ہونا

(۴) مقیم ہونا

(۵) عورت کا حیض ونفاس سے پاک ہونا۔

دوسرے لفظوں میں کافر پاگل یا مجنون و بچے بیمار مسافر اور حائضہ پر روزہ فرض نہیں تا آنکہ پاگل، عقل مند، بچہ، بالغ، بیمار، صحت مند، مسافر، مقیم اور حائضہ حالت پاکیزگی میں آجائے۔

## شرائط وجوب ادا

مذکورہ بالا صورتوں میں تین وجوہات ایسی ہیں جن کے رفع ہونے پر روزے کی قضا رمضان کے بعد واجب ہوگی۔ عدم ادائیگی کی صورت میں ساری زندگی اس پر روزہ رکھنے کی استطاعت کا مالک ہو جائے۔

marfat.com

(۱) بیمار جب مکمل طور پر تندرست ہو جائے اور روزہ رکھنے کی استطاعت کا مالک ہو جائے۔

(۲) مسافر جب سفر سے واپس آجائے یا سفر کے بعد مقیم ہو جائے۔

(۳) عورت جب حیض ونفاس سے حالت طہر میں آجائے۔

## روزہ نہ رکھنے کے شرعی عذر

مجبوریوں کے باعث شریعت نے رخصت دی ہے کہ اگر وہ چاہے تو روزہ رکھے ورنہ مجبوری کے اختتام پر قضاء روزوں کو ادا کرے عام طور پر واقع ہونے والے وہ بڑے بڑے عذر یہ ہیں۔

## (۱) مرض یا بھوک پیاس کی شدت

کوئی شخص کسی ایسے مرض میں مبتلا ہو جائے کہ روزہ رکھنے سے مرض کے بڑھ جانے کا خطرہ ہو یا پھر بھوک پیاس کی وجہ جان جانے کا خطرہ ہو ان صورتوں میں دیندار اور مسلمان ڈاکٹر کی رائے ہی زیادہ قابل قبول ہوگی۔

## (۲) سفر

اس عذر کیلئے سفر کی مقدار وہی معتبر ہوگی جسمیں نماز کی قضا لازم آتی ہے۔دوران سفر اگر روزہ باعث تکلیف نہ بنے تو روزہ رکھ لینا ہی افضل ہے

## (۳) کمزور لاغر بوڑھا ہونا

کوئی شخص کسی وجہ سے اتنا کمزور یا بڑھاپے کی وجہ سے بہت زیادہ لاغر ہو اور اسے دوبارہ طاقت آنیکی امید بھی نہ ہو تو اس کیلئے رخصت ہے کہ وہ ہر روزے کے بدلے صدقہ فطر کی مقدار میں فدیہ دیتا رہے۔یا کسی فقیر مسکین وغیرہ کو پیٹ بھر کر دو وقت کا کھانا کھلاتا رہے معذور کو اس صورت میں یہ اختیار ہے کہ وہ یہ فدیہ شروع رمضان دے دے ہر روز دیتا رہے یا آخر میں اکٹھا ادا کر دے۔

marfat.com

## (۴) عورت کا حاملہ ہونا یا دودھ پلانا

رمضان المبارک میں کوئی عورت اگر حاملہ ہو یا بچے کو دودھ پلاتی ہوا ور روزہ رکھنے سے اسے یا بچے کو نقصان پہنچنے کا خدشہ ہو تو وہ بھی روزہ قضا کر سکتی ہے۔

## (۵) جہاد میں شرکت

دشمن کے مقابلے میں لڑنا پڑے اور لڑائی میں حالت روزہ کمزوری کی وجہ سے کسی رکاوٹ کا سبب بنے تو ایسے مجاہد کیلئے بھی رخصت ہے۔

ان تمام صورتوں میں معذور عورت یا مرد کو چاہیے کہ وہ سرعام کھانے پینے سے پرہیز کریں کیونکہ اس سے رمضان المبارک کا تقدس پامال ہوتا ہے۔

## روزے کے ارکان

روزے کی شرعی اور اصطلاحی تعریف سے ہی اسکے ارکان کا تعین ہو جاتا ہے۔ یعنی۔

(۱) نیت کرنا۔

(۲) امساک یعنی کھانے پینے سے پرہیز کرنا اور مباشرت سے رکے رہنا۔

(۳) سحری سے غروب آفتاب تک کے معین وقت کی پابندی کرنا۔

## روزے کی نیت کے احکام

نیت دل کے ارادے کا نام ہے روزے کی صحت کے لئے نیت سب سے اولیت درجہ رکھتی ہے ورنہ کھانے پینے سے محض رکے رہنے سے ہرگز روزہ نہ ہوگا۔

کتب فقہ میں روزوں کی مختلف اقسام بیان کی گئی ہیں جو حسب ذیل ہیں

1: رمضان کا روزہ رکھنا۔ 2: نذر معین کا روزہ۔ 3: نفلی روزہ۔

marfat.com

انکی نیت رات سے کرلیں تو افضل ہے ورنہ نصف النہار سے قبل نیت کرلینا بھی درست ہوگا لیکن ان اقسام کے روزوں کے علاوہ نیت کا صبح صادق سے پہلے کرنا ضروری ہے مثلاً کفارہ کے روزے قضا کے روزے اور نذر غیر معین کے روزے۔

اگر نیت کے مسنون الفاظ دہرالئے جائیں تو افضل ہے ورنہ اگر کوئی سحری کے وقت روزہ رکھنے کیلئے اٹھا اور کچھ کھا پی کر روزہ رکھ لیا تو یہی اسکی نیت ہے۔

جمہور ائمہ کے نزدیک روزے کی الگ نیت ضروری ہے۔ البتہ امام اعظم ابو حنیفہ رحمۃ اللہ علیہ کے نزدیک پورے رمضان المبارک میں پہلے روزے کی نیت کرلینا ہی کافی ہے بشرطیکہ پورے ماہ میں روزوں کا تسلسل قائم رہے۔

روزے کی حالت میں محض روزہ توڑنے کی نیت سے روزہ نہیں ٹوٹتا جب تک کہ کچھ کھایا پیا نہ جائے۔

اگر کوئی شخص رات کو روزہ کی نیت کر کے بعد میں اس نیت سے رجوع بھی کرے اور اگلے دن صبح سے شام تک کھائے پیئے بغیر رہا تو یہ اس کا روزہ نہیں ہے۔

نیت روزہ کے مسنون اور مختصر الفاظ یہ ہیں۔

**و بصوم غد نویت من شهر رمضان**

ماہ رمضان کے روزے کی نیت میں کرتا ہوں۔

اگر رات کو نیت نہ کر سکے اور دن کو کرلے تو یوں کہے۔

**نویت ان اصوم هذاالیوم الله تعالی من شهر رمضان**

میں ماہ رمضان کے اس دن کے روزے کی نیت کرتا ہوں۔

marfat.com

## سحری وافطاری کے احکام

1۔سحری کرنا یعنی صبح صادق سے قبل کچھ کھاپی لینا سنت ہے۔

2۔سحری کا وقت تو نصف شب کے بعد شروع ہو جاتے ہے مگر افضل ترین سحری آخری حصہ شب کی ہے۔

3۔سحری میں تاخیر افضل ہے تو افطاری میں جلدی کرنا سنت ہے۔

4۔افطاری میں بلاوجہ تاخیر کرنا مکروہ ہے۔

5۔افطاری میں عجلت سے مراد یہ نہیں کہ وقت سے پہلے ہی افطار کرلیا جائے اس پر احادیث میں سخت سزا کا ذکر آیا ہے۔

6۔روزہ کھجور، چھوہارے یا پانی سے افطار کرنا سنت ہے اور مستحب یہ ہے کہ تین پانچ یا نو دانے کھائے۔

## روزہ توڑنے والی چیزیں

ا۔عموماً کھانے پینے یا جماع کرنے سے روزہ ٹوٹ جاتا ہے اگر بھول کر کھاپی لیا یا جماع کرلیا تو روزہ نہیں ٹوٹتا۔

۲۔ہر قسم کی تمباکو نوشی سے روزہ ٹوٹ جاتا ہے۔

۳۔دانتوں میں رکی ہوئی چنے کے برابر یا اس سے کم چیز نکال کر کھالی تو بھی روزہ جاتا رہا۔

۴۔نتھنوں میں دوا چڑھائی یا کان میں تیل ڈالا یا دوائی تیل وغیرہ حلق میں چلا گیا تو روزہ ٹوٹ گیا لیکن سادہ پانی اگر کان میں چلا گیا اس سے کلی وغیرہ چاہے جتنی

marfat.com

کثرت سے کرلیں بشرطیکہ حلق کے اندر نہ جائے روزہ ٹوٹتا نہیں۔

۵۔ بلا مقصد بھی اگر کلی کرتے ہوئے پانی حلق سے نیچے چلا گیا تو روزہ نہ رہا۔

۶۔ منہ بھر کرتے کی تو روزہ ٹوٹ گیا بلا اختیار اور بلا قصد قے ہوگی تو اگر منہ بھر کر ہوئی اور کوئی قطرہ حلق سے واپس اتر گیا تو روزہ ٹوٹ جائے گا۔

۷۔ خون تھوک کے ساتھ پیٹ میں چلا گیا اور خون تھوک پر غالب تھا روزہ ٹوٹ گیا ورنہ نہیں۔

۸۔ کنکری لوہے کا ٹکڑا یا کسی ایسی چیز کا کھالینا جو عام طور پر نہیں کھائی جاتی تو بھی روزہ ٹوٹ گیا۔

۹۔ منہ میں ایسی کوئی رنگین چیز رکھی جس سے تھوک پر اس چیز کا رنگ غالب آ گیا اور وہ تھوک اس نے نگل لی تو روزہ جاتا رہا اور اگر ماہ رمضان میں اتفاق سے کسی کا روزہ ٹوٹ گیا تو روزہ ٹوٹنے کے بعد بھی کچھ کھائے پیئے نہیں بلکہ سارا دن روزہ داروں کی طرح رہنا ضروری ہے۔

## روزے کے مکروہات

مندرجہ ذیل امور روزہ کے مکروہات ہیں۔

1۔ جھوٹ، غیبت، گالی گلوچ، کرنا، یا کسی کو تکلیف دینا۔

2۔ روزہ دار کا کوئی چیز بلاوجہ زبان پر رکھ کر چبانا یا چبا کر اگل دینا وغیرہ۔

3۔ قولاً یا عملاً جنسی رغبت اور شہوانی جذبات پر انگیز کرنے والے امور۔

4۔ روزہ کی حالت میں ناک میں پانی چڑھانے یا کلی کرنے میں مبالغہ کرنا۔

5۔ پیاس کی حالت میں پانی کے غراغرے کرنا کیونکہ اس صورت سے روزہ ضائع ہونے کا قوی امکان ہے۔

marfat.com

علاوہ ازیں غسل کرنا ٹھنڈا پانی سر پر ڈالنا کلی کرنا سادہ مسواک کرنا سرمہ لگانا بدن پر تیل ملنا، خوشبو لگانا یا سونگھنا مکروہات روزہ میں شمار نہیں ہوتے۔

## روزہ توڑ ڈالنے کا کفارہ

کسی شرعی عذر کی وجہ سے رمضان کا روزہ یا کوئی دوسرا نفلی روزہ ٹوٹ گیا تو اسکی قضاء لازم ہے لیکن بلا عذر شرعی رمضان المبارک کا روزہ توڑنے پر قضا کیساتھ کفارہ ادا کرنا بھی ضروری ہے۔ رمضان المبارک کے ایک روزہ کا بدلہ تو سال بھر کے روزے بھی نہیں بن سکتے لیکن شریعت نے اسکی کم از کم مقدار یہ ہے کہ وہ شخص لگاتار دو ماہ یعنی ساٹھ ایام کے روزے رکھے اسمیں تسلسل شرط ہے یا پھر اس کی طاقت نہ رکھتا ہو تو ساٹھ مساکین کو دونوں وقت کا کھانا پیٹ بھر کر کھلائے۔

## مسنون اور نفلی روزوں کی فضیلت

**صوم عاشورہ:** صوم عاشورہ دسویں محرم کا روزہ ہے۔ بہتر یہ ہے کہ نویں محرم کو بھی روزہ رکھے، رسول اللہ ﷺ نے ارشاد فرمایا کہ۔

افضل الصیام بعد رمضان شهر الله المحرم (صحیح المسلم ۱:۳۶۸)

حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی ہے کہ رسول اللہ ﷺ نے فرمایا: کہ رمضان المبارک کے بعد سب روزوں میں افضل اللہ کے مہینے محرم کے روزے ہیں۔

عن ابی قتادة الانصاری رضی الله عنه سئل عن صوم یوم عاشوراء فقال یکفر السنة الماضیة (صحیح المسلم ۱:۳۶۸)

حضرت ابو قتادہ انصاری رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی ہے کہ رسول اللہ ﷺ سے

marfat.com

عاشورہ کے روزے کے متعلق پوچھا گیا تو آپ ﷺ نے فرمایا کہ عاشورہ کا روزہ گزشتہ سال کے گناہوں کا کفارہ ہے۔

## صوم عرفہ

یہ نویں ذوالحجہ کا روزہ ہے

عن ابی قتادۃ الانصاری رضی اللہ تعالیٰ عنہ سئل عن صوم یوم عرفۃ قال یکفر السنۃ الماضیۃ والباقیۃ (ایضاً)

حضرت ابوقتادہ انصاری رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی ہے کہ حضور ﷺ سے عرفہ کے روزے کے بارے میں پوچھا گیا تو آپ ﷺ نے فرمایا کہ عرفہ کو روزہ گزشتہ اور آئندہ سال (کے گناہوں) کیلئے کفارہ ہے۔

عن ابی ھریرہ رضی اللہ عنہ قال قال رسول اللہ ﷺ نھی عن صوم عرفۃ بعرفۃ

(سنن ابوداؤد ۱:۳۲۸)

حضرت ابی ھریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی ہے کہ حضور ﷺ نے عرفات میں عرفہ کا روزہ رکھنے سے منع فرمایا ہے۔

## شوال کے چھ روزے

عن ابوایوب الانصاری رضی اللہ عنہ رسول ﷺ قال من صام رمضان ثم اتبعہ ستا من شوال کان کصیام الدھر (صحیح المسلم ۱:۳۶۹)

حضرت ابوایوب انصاری رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی ہے کہ رسول اللہ ﷺ نے فرمایا کہ جس شخص نے رمضان المبارک کے روزے رکھے اور پھر اس کے بعد شوال کے چھ روزے رکھے تو گویا اس نے سال بھر کے روزے رکھے۔

marfat.com

## شعبان کا روزہ اور شب برآت

رسول ﷺ نے فرمایا کہ جب شعبان کی پندرھویں رات (شب برات) آئے تو اس رات میں قیام کرو یعنی نفلی نمازیں پڑھو اور دن میں روزے رکھو کہ اللہ تعالیٰ سورج ڈوبنے کے بعد سے آسمان دنیا پر خاص تجلی فرماتا ہے اور اعلان فرماتا ہے کہ کیا ہے کوئی بخشش کا طلبگار کہ میں اسے بخش دوں کیا ہے کوئی روزی طلب کرنے والا کہ میں اسے روزی دوں کیا ہے کوئی مصیبت میں گرفتار کہ میں اسکو رہائی دوں کیا ہے کوئی ایسا؟ کیا ہے کوئی ایسا؟ اس قسم کی ندائیں ہوتی رہتی ہیں یہاں تک کہ فجر طلوع ہو جاتی ہے۔

## ایام بیض کے روزے

ہر مہینے کی تیرہ، چودہ اور پندرہ تاریخوں کے روزے ایام بیض کے روزے کہلاتے ہیں۔

عن ابی ذر رضی اللہ عنہ قال: قال رسول اللہ ﷺ من صام من کل شھر ثلٰثۃ ایام فذلک کمن صام الدھر (جامع الترمذی ۱:۹۵)

حضور ﷺ نے فرمایا جس نے ہر مہینے کے یہ تین روزے ایسے ہیں کہ جیسے اسنے ہمیشہ روزے رکھے۔

رسول ﷺ نے فرمایا کہ ہر مہینے کے یہ تین روزے ایسے ہیں، جیسے کوئی ہمیشہ روزے رکھتا رہا ہو اور فرمایا کہ جس سے ہو سکے ہر مہینے میں تین روزے رکھے۔ ہر روزہ دس دن کے گناہ مٹاتا ہے۔ اور وہ شخص گناہوں سے ایسا پاک ہو جاتا ہے جیسے پانی کپڑے کو پاک کر دیتا ہے۔

marfat.com

قال کان رسول اللہ ﷺ لایفطر ایام البیض فی حضر ولا سفر

(سنن انسائی ۱:۳۲۱)

حضرت ابن عباس رضی اللہ عنہ سے مروی ہے کہ رسول اللہ ﷺ سفر اور حضر میں ایام بیض کے روزے رکھا کرتے تھے۔

## دوشنبہ اور جمعرات کا روزہ

عن ابی ھریرۃ رضی اللہ عنہ قال قال رسول اللہ ﷺ تعرض الاعمال یوم الاثنین والخمیس فاحب ان یعرض عملی وانا صائم (جامع ترمذی ۱:۹۳)

حضرت ابوہریرہ رضی اللہ عنہ سے مروی کہ رسول اکرم ﷺ نے فرمایا کہ سوموار اور جمعرات کو اعمال (بارگاہ خداوندی میں) پیش کئے جاتے ہیں میں پسند کرتا ہوں کہ میرے اعمال اس صورت میں پیش ہوں کہ میں روزہ سے ہوں۔

عن ابی ھریرۃ رضی اللہ عنہ قال قال رسول اللہ ﷺ ان یوم لاثنین والخمیس یغفر اللہ فیھما لکل مسلم الامتھا جرین یقول دعھما حتی یصطلعا (سنن ابن ماجہ:۔۱۶۴)

حضرت ابوھریرہ رضی اللہ عنہ سے مروی ہے کہ رسول اللہ ﷺ نے فرمایا کہ سوموار اور جمعرات کے روز اللہ تعالی ہر مسلمان کی مغفرت فرماتا ہے۔سوائے باہم لڑنے والوں کے ان کیلئے حکم ہوتا ہے کہ انہیں چھوڑ دو تاوقتیکہ یہ دونوں صلح کرلیں۔

## بدھ جمعرات و جمعہ کا روزہ

عن انس بن مالک انہ سمع النبی ﷺ یقول من صام الاربعاء

marfat.com

والخميس والجمعة بنى الله له قصرا فى الجنة من لولو وياقوت وزبرجد وكتب له براءة من النار (المعجم الاوسط ۱۸۸۶)

حضرت انس بن مالک رضی اللہ عنہ سے مروی ہے کہ میں نے حضور نبی کریم ﷺ سے سنا کہ آپ ﷺ نے فرمایا۔ جس نے بدھ، جمعرات اور جمعہ کا روزہ رکھا اللہ تعالیٰ اس کیلئے جنت میں موتی اور یاقوت وزبرجد کا محل بنائے گا اور اس کیلئے دوزخ سے برات لکھ دی جائے گی۔

## صوم داؤدی

سال بھر اسطرح روزے رکھنا کہ ایک دن روزہ دار رہے اور ایک دن بلا روزہ صوم داؤدی کہلاتا ہے یہ حضرت داؤد علیہ السلام کا روزہ تھا۔

عن عبداللہ بن عمر رضی اللہ عنہ قال قال لی رسول اللہ ﷺ احب الصیام الی اللہ تعالیٰ صیام داود و کان یفطر یوماً ویصوم یوماً۔

(سنن ابوداؤد ج ۱ ص ۳۳۹ کتاب الصوم رقم حدیث ۱۶۴۲۸)

حضرت عبداللہ بن عمرؓ سے مروی ہے کہ رسول اللہ ﷺ نے فرمایا کہ اللہ تعالیٰ کو روزوں سے داؤدی روزے سب سے زیادہ پسند ہیں وہ ایک دن روزے رکھتے تھے اور ایک دن بغیر روزے کے رہتے تھے۔

## حالت جنابت میں روزہ رکھنا

جمہور آئمہ کے نزدیک اگر کوئی [illegible] حالت جنابت میں صبح صادق کے بعد تک رہے تو اس صورت میں اسکا روزہ صحیح ہوگا۔ البتہ اتنا ضرور ہے کہ دن نکلنے سے پہلے

marfat.com

نہالے تا کہ فجر کی نماز پڑھ سکے اگر اس وقت غسل نہ کیا تو گنہگار ہوگا اور روزے میں بھی کراہت ہوگی۔

## ایام مخصوصہ میں خواتین کا روزہ

حالت حیض ونفاس میں عورت روزہ نہیں رکھے گی اور حیض ونفاس کی مدت ختم ہوجانے کے بعد اس پر ان دنوں کے روزوں کی قضاء واجب ہے۔ جیسا کہ حضرت عائشہ صدیقہ رضی اللہ عنہ فرماتی ہیں کہ حضور نبی اکرم ﷺ ہمیں حالت حیض سے پاک ہونے پر روزوں کا حکم فرماتے (ترمذی ج ۲۔ جن ۱۴۵ رقم ۷۸۷)

## ایام مخصوصہ

حالت حیض ونفاس میں خواتین کا روزہ رکھنا حرام ہے روزہ رکھا تو رائیگاں جائے گا اور اسکی قضاء واجب ہوگی اسلام سہل العمل اور انسانی فطرت کے عین مطابق دین ہے۔ اور شارع علیہ السلام نے اسکے احکامات اور تعلیمات اس احسن طریقہ سے دیتے کہ کسی بھی فرد واحد کو اپنی انفرادی یا اجتماعی زندگی میں اس پر عمل کرنے میں کوئی تنگی محسوس نہ ہو معاذ عدویہ رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ انہوں نے ام المومنین حضرت عائشہ صدیقہ سے دریافت کیا کیا بات ہے کہ حائضہ عورت کی قضا تو کرتی ہیں لیکن نماز کی قضا نہیں کرتی ؟ حضرت عائشہ صدیقہ رضی اللہ عنہ نے فرمایا یہ عارضہ ہمیں لاحق ہوتا تھا پھر ہمیں روزے قضا کرنے کا حکم ہوتا مگر نماز قضا کرنے کا حکم نہ ہوتا۔

(مسلم الصحیح، کتاب الحیض باب وجوب قضاء الصوم علی الحائف دون الصلوۃ ج ۱ ص ۴۶۵ رقم ۳۳۵)

حضرت عائشہ صدیقہ رضی اللہ عنہ کے قول سے پتہ چلا کہ جس چیز کا شریعت میں حکم دیا جائے یا کسی سے منع کیا جائے اسے بلا چوں وچراں قبول کرنا ہی فرمانبردار امتی کی علامت ہے۔

marfat.com

اگر عقل کی رو سے دیکھ جائے تو ایام مخصوصہ میں خواتین کے لئے ہر ماہ فوت روزہ نمازوں کی قضا روزمرہ زندگی میں ادا کرنا نہایت دشوار ہے جبکہ ماہ رمضان سال میں صرف ایک مرتبہ آتا ہے لہٰذا دنوں کے روزوں کی قضاء کرنا نماز کی نسبت زیادہ آسان اور قابل عمل ہے پس اسی آسانی اور سہولت کو پیش نظر رکھتے ہوئے شریعت مطہرہ نے ایام مخصوصہ میں خواتین کو نمازوں کی مکمل اور روزوں کی قضاء کی رخصت دی ہے۔

## حیض کا طلوع فجر سے پہلے رکنا

اگر حیض طلوع فجر سے پہلے رک جائے جبکہ وقت اتنا کافی ہے کہ اس میں صرف سحری کھائی جاسکتی ہے تو اس صورت میں غسل کیے بغیر وضو کر کے سحری کھانا پینا جائز ہے سحری سے فراغت کے بعد غسل میں تاخیر نہیں کرنی چاہیے علاوہ ازیں ایسی عورت پر طلوع فجر سے پہلے روزہ رکھنے کی نیت واجب ہے۔

مسئلہ:۔ جی ہاں اگر صبح صادق کے بعد غروب آفتاب سے چند منٹ پہلے تک کسی وقت بھی عورت حائضہ ہو جائے تو روزہ ٹوٹ جائے گا بعد ازاں اس پر روزہ کی قضا کرنا واجب ہوگا۔

## اعتکاف کے مسائل

## فضیلت اعتکاف

حضرت عائشہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے مروی ہے کہ حضور نبی اکرم ﷺ رمضان المبارک کے آخری دس دن اعتکاف کیا کرتے تھے یہاں تک اللہ تعالیٰ کے حکم سے آپ ﷺ کا وصال مبارک ہو گیا پھر آپ ﷺ کے بعد آپ ﷺ کی ازواج مطہرات نے بھی اعتکاف کیا ہے (بخاری، مسلم)

marfat.com

حضرت ابوہریرہ رضی اللہ عنہ سے مروی ہے کہ حضور ﷺ ہر سال رمضان المبارک میں دس دن اعتکاف کیا (بخاری شریف، ابن ماجہ)

حضرت عبداللہ بن عمر سے روایت ہے کہ حضرت عمر رضی اللہ تعالی عنہ نے حضور ﷺ سے دریافت کیا کہ میں نے دور جاہلیت میں منت مانی تھی کہ خانہ کعبہ میں ایک رات اعتکاف کروں گا آپ ﷺ نے فرمایا اپنی منت پوری کرو (متفق علیہ)

حضرت عبداللہ بن عباس رضی اللہ تعالی عنہ سے مروی ہے کہ رسول اللہ ﷺ نے اعتکاف کے بارے میں فرمایا۔ وہ گناہ سے روک دیتا ہے۔ اس لئے ایسی نیکیاں لکھی جاتی ہیں جو تمام نیکیوں پر عمل کرنیوالوں کے لئے لکھی جاتی ہیں (رواہ ابن ماجہ)

حضرت عبداللہ بن عباس رضی اللہ تعالی عنہ سے روایت ہے کہ حضور نبی اکرم ﷺ نے فرمایا جو شخص اللہ تعالی کی رضا کے لیے ایک دن اعتکاف کرتا ہے تو اللہ تعالی اسکے اور دوزخ کے درمیان تین خندقوں کا فاصلہ کر دیتا ہے اور ہر خندق مشرق سے مغرب کے درمیان فاصلہ سے زیادہ لمبی ہوتی ہے (طبرانی)

حضرت علی بن حسین رضی اللہ تعالی عنہ اپنے والد (حضرت امام حسین علیہ اسلام) سے روایت کرتے ہیں۔ کہ رسول اللہ ﷺ نے فرمایا جو شخص رمضان المبارک میں دس دن اعتکاف کرتا ہے اسکا ثواب دو حج اور دو عمرہ کے برابر ہے (طبرانی۔ بیہقی)

حضرت عائشہ رضی اللہ تعالی عنہ سے روایت ہے کہ رسول ﷺ نے ارشاد فرمایا، شب قدر کو رمضان کے آخری عشرے کی طاق راتوں (ایک اور روایت میں ہے) کہ رمضان کی آخری سات طاق راتوں میں تلاش کیا کرو (متفق علیہ)

حضرت عائشہ رضی اللہ عنہ سے مروی ہے کہ انہوں نے فرمایا جب رمضان کے

marfat.com

(آخری عشرہ) کے دس دن باقی رہ جائے تو آپ ﷺ اپنا کمر بند کس لیتے اور اپنے اہل خانہ سے الگ ہو کر عبادت و ریاضت میں مشغول ہو جاتے (رواہ احمد)

حضرت ذوالنون مصری رحمۃ اللہ علیہ نے فرمایا:۔

مومن کی خوشی سرور اور لذت تنہائی میں اپنے رب سے مناجات میں ہے۔

حضرت مالک بن دینار رحمۃ اللہ علیہ نے فرمایا:۔

جو شخص لوگوں کے ساتھ گفتگو کو چھوڑ کر اللہ تعالیٰ سے مانوس نہیں ہوتا اس کا علم اور دل ضائع اور عمر ضائع ہو گئی۔

حضرت عبداللہ بن مالک رحمۃ اللہ علیہ نے فرمایا۔

اس شخص کی حالت کتنی اچھی ہے جو سب سے الگ ہو کر اللہ تعالیٰ کی طرف متوجہ ہوتا ہے۔

امام زہری رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ تعجب ہے ان لوگوں پر جو اس قدر ثواب والے اور بابرکت کام یعنی اعتکاف کو چھوڑ دیتے ہیں۔ حالانکہ حضور ﷺ جب کوئی نفلی کام کو کرتے تو کبھی اسے چھوڑ دیتے تھے لیکن مدینہ طیبہ میں آپ ﷺ نے پابندی کے ساتھ ہر سال اعتکاف فرمایا ایک سال رہ گیا تو اس کی قضاء فرمائی (بدائع الصنائع)

## حقیقت اعتکاف

اعتکاف کی حقیقت خلوت نشینی ہے اور یہ اللہ رب العزت کا اپنے محبوب ﷺ کے تصدق سے امت مصطفوی ﷺ پر خاص کی لطف و احسان ہے کہ وصال حق کی وہ منزل جو ہم ساجھ کو زندگی بھر کی مشقتوں اور بے جا ریاضتوں کے نتیجے میں بھی حاصل نہیں

marfat.com

ہوسکتی تھی۔ فقط چند روز کی خلوت نشینی سے میسر آسکتی ہے۔ چنانچہ اعتکاف کی حقیقت یہ ہے کہ انسان چند روز کیلئے دنیاوی مصروفیات سے کٹ کر گوشہ نشین ہوجائے ایک محدود مدت کیلئے خلوت گزیں ہوکر اللہ کیساتھ اپنے تعلق بندگی کی تجدید کرے۔ اپنے من کو آلائش نفسانی سے علیحدہ کر کے اپنے خالق و مالک کے ذکر سے اپنے دل کی دنیا آباد کر کے مخلوق سے آنکھیں بند کر کے اپنے خالق کی طرف لو لگالے ان کیفیات سے مملو ہوکر جب انسان دنیا و مافیھا سے کٹ کر صرف اپنے خالق و مالک کے ساتھ لو لگالیتا ہے تو اسکے یہ چند ایام سالوں کی عبادت اور محنت و مشقت پر بھاری قرار پاتے ہیں۔

## خلوت نشینی کیوں؟

سوال پیدا ہوتا ہے آخر خلوت نشینی کا فلسفہ کیا ہے؟ انسان آخر خلوت نشینی کیوں اختیار کرے؟ یہ ایک ناقابل تردید حقیقت ہے کہ انسان کا نفس انسان کو ہمہ وقت برائی کی طرف اکساتا رہتا ہے۔

ان النفس لامّارۃ بالسوء (یوسف ۱۲:۵۳)

ترجمہ: بیشک نفس انسان کو برائی کی طرف ہی اکساتا رہتا ہے۔

ارشاد قرآنی کی رو سے تمرد و انحراف انسانی نفس کا شیوہ اور اسکی فطرت میں شامل ہے۔ چنانچہ کاروبار حیات کی ذمہ داریاں نبھاتے ہوئے انسان بالعموم غفلتوں کا شکار رہتا ہے نتیجتاً انسان میں کسی کا بندہ ہونیکا شعور بیدار نہیں رہتا ہے اور انسان مسلسل بغاوت و سرکشی پر مائل رہتا ہے اسی شعور و بندگی کو پیدا کرنے کیلئے اسلام نے اپنے ماننے والوں کو اس امر کی تعلیم دی ہے کہ دن کے چوبیس گھنٹوں میں تھوڑی دیر کیلئے

marfat.com

گوشہ تنہائی میں بیٹھ کر اپنے نفس کا محاسبہ کرے اور اپنے آپکو ایک مجرم کی حیثیت سے اپنے آقا و مولا کی بارگاہ میں پیش کر کے اصلاح احوال کا متمنی ہو، یہ معمول زندگی بھر رہنا چاہیے لیکن رمضان المبارک چونکہ رحمتوں کا مہینہ ہے اسلئے اس ماہ رحمت میں خلوت نشینی سے اس تصور کو ایک باقاعدہ ضابطے کے تحت اعتکاف کی صورت میں متعین کر دیا گیا تا کہ سال بھر آلائش دنیا میں ملوث رہنے والا انسان چند روز کیلئے اپنے نفس کے متمرد و سرکش گھوڑے کو لگام ڈال سکے نیز کثرت ذکر الٰہی اور ریاضت و مجاہدہ کے ذریعے تصفیہ باطن کر کے خلوت میں جلوت محبوب کی دولت سے بہرہ ور ہو سکے۔

## اعتکاف کے مسائل

عبادت کی نیت سے اللہ تعالیٰ کے لئے مسجد میں ٹھہرنیکا نام اعتکاف ہے۔

اعتکاف کی تین قسمیں ہیں۔

(1)اعتکاف واجب (2)اعتکاف سنت (3)اعتکاف مستحب

## اعتکاف واجب

کسی نے منت مانی کہ میرا فلاں کام ہو جائے تو میں ایک دن یا دو دن کا اعتکاف کروں گا اور اسکا کام ہو گیا تو اعتکاف واجب ہے اور اسکا پورا کرنا ضروری ہے یاد رکھو کہ اعتکاف واجب کے لئے روزہ شرط ہے بغیر روزہ کے اعتکاف واجب صحیح نہیں ہے۔

(درمختار: ج:۳:۱۲۹)

## اعتکاف سنت

یہ اعتکاف رمضان المبارک کے آخری دس دنوں میں کیا جاتا ہے۔ یعنی

marfat.com

بیسویں رمضان کوسورج ڈوبنے سے پہلے اعتکاف کی سنت سے مسجد میں داخل ہوجائے تو بیسویں رمضان کوسورج ڈوبنے کے بعد یا انتیسویں رمضان کوچاند ظاہر ہونے کے بعد مسجد سے نکلے یادرہے کہ اعتکاف سنت موکدہ کفایہ ہے یعنی اگر محلہ کے سب لوگ چھوڑ دیں گے تو سب آخرت کے مواخذہ میں گرفتار ہوں گے اوراگر ایک آدمی نے بھی اعتکاف کرلیا تو سب آخرت کے مواخذہ سے بری ہوجائیں گے اس اعتکاف میں بھی روزہ شرط ہے مگر وہی رمضان کے روزے کافی ہیں (درمختار: ج۲ صفحہ ۱۳۰)

## اعتکاف مستحب

اعتکاف مستحب یہ ہے کہ جب بھی دن یا رات میں مسجد کے اندر داخل ہوتو اعتکاف کی نیت کرے جتنی دیر مسجد میں رہے گا اعتکاف کا ثواب ملے گا۔نیت کے لیے صرف دل میں اتنا خیال کرلینا اور منہ سے کہہ لینا کافی ہے کہ میں نے خدا کے لیے اعتکاف مسجد کی نیت کی (فتاوی عالمگیری: ج۱: صفحہ ۱۹۷)

## اعتکاف کے چند دیگر مسائل

o اعتکاف کرنے والوں کیلئے بلاعذر مسجد سے نکالنا حرام ہے اگر نکلے تو اعتکاف ٹوٹ جائے گا چاہیے ارادۃً نکلے یا بھول کر۔اسطرح عورت نے جس گھر میں اعتکاف کیا ہے اسکا بھی اس گھر سے نکلنا حرام ہے اگر عورت اس مکان سے باہر نکل گئی تو خواہ وہ قصداً نکلی ہو یا بھول کر اسکا اعتکاف ٹوٹ جائے گا (درمختار: ج۲ ص ۱۳۳)

o مرد کیلئے ضروری ہے کہ وہ مسجد میں اعتکاف کرے اور عورت اپنے گھر میں اس جگہ اعتکاف کرے جو جگہ اس نے نماز پڑھنے کے لئے مقرر کی ہو (درمختار: ج ص ۱۲۹)

marfat.com

o اعتکاف کرنے والا دوعذروں کے سبب سے مسجد سے باہر نکل سکتا ہے ایک عذر طبعی جیسے رفع حاجت غسل فرض اور وضو کے لیے دوسرا عذر شرعی جیسے نماز جمعہ کے لئے جانا اگر مسجد میں نماز جمعہ نہ ہوتی ہو ان دونوں عذروں کے سوا کسی اور وجہ سے مسجد سے نکلا تو اعتکاف ٹوٹ جائیگا اگر چہ بھول کر ہی نکلے (درمختار ج ۲: ص ۱۳۳)

o اعتکاف کرنے والا دن رات مسجد میں ہی رہیگا وہی کھائے پیئے سوئے مگر احتیاط رکھے کہ کھانے پینے سے مسجد گندی نہ ہونے پائے معتکف کے سوا کسی اور کو مسجد میں کھانے پینا اور سونے کی اجازت نہیں ہے اسلئے اگر کوئی آدمی مسجد میں کھانے پینا اور سونا چاہے کہ اعتکاف مستحب کی نیت کر کے مسجد میں داخل ہو اور نماز پڑھے یا ذکر الٰہی کرے پھر اسکے لئے کھانے پینے اور سونے کی بھی اجازت ہے (درمختار: ۱۳۴)

o اگر اعتکاف میں بیٹھتے وقت یہ شرط کرلی کہ مریض کی عیادت و نماز جنازہ میں جائے گا تو یہ شرط جائز ہے اب اگر ان کاموں کے لئے مسجد سے باہر گیا تو اعتکاف فاسد نہ ہوگا مگر دل میں نیت کر لینا کافی نہیں بلکہ زبان سے کہنا بھی ضروری ہے۔

(بہار شریعت: ج ۱: ص ۴۷۴)

o اگر مسجد گر گئی یا کسی نے زبردستی نکال دیا اور فوراً ہی کسی دوسری مسجد میں چلا گیا تو اعتکاف فاسد نہ ہوگا۔

o اعتکاف کرنیوالا بالکل ہی چپ نہ رہے اور نہ لوگوں سے بہت زیادہ بات چیت کرے بلکہ اسکو چاہیے کہ نفل نمازیں زیادہ پڑھے تلاوت کرے علم دین کا درس دے اولیاء و صالحین کے حالات سنے اور دوسروں کو سنائے کثرت سے درود شریف پڑھے اور ذکر الٰہی کرے۔ اور باوضو رہے اور دنیاداری کے خیالات سے دل کو پاک

وصاف رکھے اور بکثرت رو رو کر اور گڑگڑا کر خداوندی تعالیٰ سے دعا مانگے۔

o اعتکاف کی قضاء صرف قصداً اعتکاف توڑنے ہی سے نہیں ہوتی بلکہ اگر عذر کی وجہ سے بھی اعتکاف چھوڑ دیا، مثلاً بیمار ہو گیا یا بلا اختیار چھوٹا جیسے عورت کو حیض یا نفس آیا جنون یا بے ہوشی طاری ہوئی ان صورتوں میں بھی قضاء واجب ہے۔

o معتکف اگر بے نیت عبادت بالکل چپ رہے کہ جب رہنے کو ثواب سمجھے تو یہ مکروہ تحریمی ہے اور اگر چپ رہنے کو ثواب کی بات سمجھ کر چپ نہ رہنے کو ثواب سمجھے تو یہ حرج نہیں اور بری باتوں سے چپ رہا تو یہ چپ رہنا مکروہ نہیں بلکہ یہ تو اعلیٰ درجے کی بات ہے کیونکہ بری باتوں سے زبان کو روکے رکھنا بہر حال واجب ہے اور جس بات میں ثواب ہو نہ گناہ یعنی مباح بلا ضرورت مسجد میں مباح کلام بھی نیکیوں کو اسطرح کھا لیتا ہے جیسے آگ لکڑی کو کھا جاتی ہے (بہار شریعت ج ۱: ص ۴۷۴)

o سب سے اہم ضروری بات یہ ہے کہ اعتکاف ہو یا کوئی بھی عبادت اسمیں صرف رضائے الٰہی کی نیت رکھے۔ دکھاوا نیک نامی اور شہرت کو ہرگز ہرگز دخل نہ دے ورنہ ساری عبادت بے نور و بے رونق بلکہ ضائع ہو جائے گی اور ثواب کی جگہ گناہ نامہ اعمال میں لکھا جائے گا۔

## فضیلتِ اعتکاف

حضرت عبداللہ بن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے مروی ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے معتکف کے بارے میں ارشاد فرمایا وہ (یعنی معتکف) گناہوں سے کنارہ کش ہو جاتا ہے اور اسے عملاً نیک اعمال کرنے والے کی مثل پوری پوری نیکیاں عطا کی جاتی ہیں (ابن ماجہ ج ۶ ص ۳۷۲ رقم: ۱۷۸۱)

marfat.com

حضرت عبداللہ بن عباس رضی اللہ تعالی عنہما سے ہی ایک اور حدیث مروی ہے کہ حضور نبی اکرم ﷺ نے ارشاد فرمایا:۔

جو شخص اللہ تعالی کی رضا کے لئے ایک دن اعتکاف کرتا ہے اللہ تبارک وتعالی اسکے دوزخ کے درمیان تین خندقوں کا فاصلہ کر دیتا ہے ہر خندق مشرق سے مغرب کے درمیان فاصلے سے زیادہ لمبی ہے۔(طبرانی ج ۷:۲۲۱رقم ۷۳۲۶)

حضرت علی (زین العابدین) بن حسین اپنے والد امام حسینؓ سے روایت کرتے ہیں کہ رسول اللہ ﷺ نے ارشاد فرمایا:۔

من اعتکف عشرا فی رمضان کان کحجین وعمرتین (بیہقی :ج ۴رقم ۳۹۶۶)

جس شخص نے رمضان المبارک میں دس دن کا اعتکاف کیا اسکا ثواب دو حج اور دو عمرہ کے برابر ہے۔

## اعتکاف بیٹھنے کی شرائط

اعتکاف بیٹھنے کی شرائط درج ذیل ہیں۔

1: مسلمان ہونا۔ 2: اعتکاف کی نیت۔

3: حدث اکبر (یعنی جنابت) اور حیض ونفاس سے پاک ہونا۔

4: عاقل ہونا۔ 5: مسجد میں اعتکاف کرنا۔

6: اعتکاف واجب کے لیے روزہ بھی شرط ہے۔

## نفلی اعتکاف

واجب اور مسنون اعتکاف کے علاوہ جو اعتکاف کیا جائے وہ نفلی اعتکاف کہلاتا ہے۔ نفلی اعتکاف میں نہ روزہ شرط ہے اور نہ ہی اس کے لیے کوئی خاص وقت اور معیاد مقر

marfat.com

# اجتماعی اعتکاف کے فضائل وثمرات

اجتماعی اعتکاف کے فضائل وثمرات درج ذیل ہیں۔

(۱)اجتماعی اعتکاف میں باقاعدہ نظام الاوقات کے تحت نماز پنجگانہ تہجد چاشت اوابین اور وظائف حمد ونعت خوانی دروس ہائے قرآن وحدیث حلقہ ہائے فقہ وتصوف تربیتی لیکچرز خوف خدا فکر آخرت اللہ ورسول کی محبت کی شمع دلوں میں فروزاں کرنا، جدید ترین علمی وروحانی پیچیدگی کا قرآن وسنت اور عقل سلیم روشنی میں تسلی بخش حل بتایا جاتا ہے۔انفرادی اعتکاف میں ان تمام فوائد کا حصول ممکن نہیں ہوتا۔

(۲)علماء اولیا،صوفیاء اور ائمہ دین کی سنگت وزیارت ان سے مسلسل فیوض و برکات کا حصول، قرآن وسنت اور فقر کی بیش بہا معلومات اجتماعی اعتکاف کی منفرد خصوصیات میں سے ہیں۔

(۳)اجتماعی اعتکاف میں اوراد و اذکار ،درود وسلام گریہ زاری توبہ واستغفار اور عبادت کی زبانی ہی نہیں بلکہ عملی مشق کروائی جاتی ہے۔

(۴)اجتماعی اعتکاف میں چند دن کے فیوض وبرکات کی رحمت وبرکات تعلیم وتربیت اور ذوق وشوق کے وہ نقوش قلب وذہن پر منقش ہوجاتے ہیں جس سے قلب وذہن کے آئینے ہمیشہ چمکتے دمکتے رہیں گے تنہا اعتکاف میں یہ سب کچھ کہاں میسر ہوتا ہے۔

## مسنون اعتکاف کے ٹوٹنے کے بعد نفل کی نیت سے جاری رہنا

مسنون اعتکاف ٹوٹنے کے بعد مسجد سے باہر نکلنا ضروری نہیں بلکہ عشرہ اخیرہ کے بقیہ ایام میں نفل کی نیت سے اعتکاف جاری رکھ سکتا ہے۔اس طرح مسنون اعتکاف

marfat.com

تو نہیں ہوگا مگر نفلی اعتکاف ہو جائیگا لیکن اگر کوئی شخص اعتکاف جاری نہ رکھ سکے تو بھی جائز ہے اور یہ بھی جائز ہے کہ جس دن اعتکاف ٹوٹا ہے اس دن باہر چلا جائے اور اگلے دن سے یہ نیت نفل پھر اعتکاف شروع کر دے۔

## اعتکاف کا توڑنا

درج ذیل صورتوں میں اعتکاف توڑنا جائز ہے

**(۱) بیماری:۔** اعتکاف کے دوران ایسی بیماری لاحق ہو جائے جس کا علاج اعتکاف گاہ سے باہر جائے بغیر ممکن نہ ہو تو اس صورت میں اعتکاف توڑنا جائز ہے۔

**(۲) والدین، بیوی، بچوں کی تکلیف:۔** والدین، بیوی، بچوں یا بہن بھائیوں میں کسی کو کوئی شدید مرض لاحق ہو جائے یا کوئی حادثہ آجائے اور گھر میں کوئی دوسرا تیمارداری کرنے والا موجود نہ ہو تو اس صورت میں اعتکاف توڑنا جائز ہے۔

**(۳) جنازہ:۔** والدین بہن، بھائی یا کوئی عزیز اچانک فوت ہو جائے تو اس کی تجہیز و تکفین کے لئے اعتکاف توڑ دینا جائز ہے۔

**(۴) زبردستی نکالنا:۔** اگر کسی معتکف کو کوئی زبردستی مسجد سے نکال دے یا حکومت اعتکاف میں گرفتار کرے تو اعتکاف ٹوٹ جائے گا مگر اس صورت میں معتکف پر اعتکاف توڑنے کا گناہ نہیں ہوگا۔

**(۵) اعتکاف توڑنے والے امور۔**

(۱) بلا عذر مسجد سے باہر نکلنا۔

(۲) حالت اعتکاف میں مباشرت کرنا۔

(۳) عورت اعتکاف میں ہو حیض و نفاس کا جاری ہونا۔

marfat.com

(۴) کسی عذر کے باعث اعتکاف گاہ سے باہر نکل کر ضرورت سے زیادہ ٹھہرنا۔

ان سب صورتوں میں اعتکاف ٹوٹ جاتا ہے۔

## مکروہات اعتکاف

(۱) بالکل خاموشی اختیار کرنا کہ ذکر ونعت وتبلیغ سے بجائے خاموش رہنا کو عبادت سمجھا تو مکروہ تحریمی ہے اگر بری باتوں سے خاموش رہا تو وہ اعلیٰ درجے کی چیز ہے۔

(۲) مال واسباب مسجد میں لاکر بغرض تجارت بیچنا یا خریدنا۔

(۳) لڑائی جھگڑا یا بیہودہ باتیں کرنا۔

## کیا خواتین کا اعتکاف بیٹھنا درست ہے

خواتین بھی اعتکاف بیٹھ سکتی ہیں۔ حضور ﷺ کی ازواج مطہرات اعتکاف بیٹھا کرتی تھیں، جیسا کہ حدیث مبارکہ میں ہے ام المومنین حضرت عائشہ صدیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی نبی کریم ﷺ رمضان کے آخری دس دنوں میں اعتکاف کیا کرتے تھے۔ یہاں تک کہ اللہ کے حکم سے آپ ﷺ کا وصال مبارک ہوگیا۔ پھر آپ ﷺ کے بعد آپ کی ازواج نے بھی اعتکاف کیا ہے۔

## بیوی کا خاوند کی اجازت کے بغیر اعتکاف

بیوی کا خاوند کی اجازت کے بغیر اعتکاف بیٹھنا جائز نہیں ہے۔

## عورت کہاں اعتکاف بیٹھے

عورت کیلئے بہتر یہی ہے کہ وہ اپنے گھر میں اعتکاف بیٹھے جو جگہ نماز کیلئے مخصوص ہے اور اس جگہ کو مسجد البیت بھی کہا جاتا ہے۔

marfat.com

# گھر سے دور عورتوں کا اجتماعی اعتکاف

اگر ان کے لئے باپردہ اور باحفاظت انتظام ہو اور اعتکاف کے ساتھ ساتھ مزید تعلیم وتربیت اور تزکیہ وتصفیہ کا اہتمام ہو تو خواتین کا اجتماعی اعتکاف بیٹھنا جائز ہے۔ بعض بڑی مساجد اور مراکز پر الحمدللہ ہزاروں کی تعداد میں مرد وخواتین الگ الگ باپردہ باحفاظت اعتکاف بیٹھتے ہیں۔

شب وروز کے معمولات کیلئے ایک نظام الاوقات مہیا کیا جاتا ہے تعلیم اور تربیت وتزکیہ کا یہ انتظام واہتمام ہر مسجد میں نہیں ہوسکتا۔

علامہ ابن نجیم حنفی عورت کے مسجد میں اعتکاف بیٹھنے کے حوالے سے رقم طراز ہیں۔

ان اعتکافها فی مسجد الجماعة جائز

بیشک عورت کا جماعت والی مسجد میں اعتکاف جائز ہے۔

علامہ کاسانی کی بدائع الضائع کے حوالے سے آپ مزید لکھتے ہیں

ان اعتکافها فی مسجد الجماعة صحیح بلاخلاف بین اصحابنا

(ابن نجیم البحر الرائق، ۲:۳۲۴)

عورت کا مسجد جماعت میں اعتکاف بیٹھنا درست ہے اس میں ہمارے ائمہ احناف کے مابین کوئی اختلاف نہیں۔

علامہ ابن عابدین شامی درالمختار میں عورت کا مسجد میں اعتکاف بیٹھنا مکروہ تنزیہی قرار دیتے ہیں بدائع الصنائع کے حوالے سے لکھتے ہیں۔

صرح فی البدائع بانه خلاف الافضل (ابن عابدین شامی درالمختار، ۲:۴۴۱)

البدائع والضائع میں علامہ کاسانی نے تصریح فرمائی ہے کہ مسجد میں عورت کا

اعتکاف بیٹھنا خلاف افضل ہے۔

مراد یہ ہے کہ مسجد کی نسبت عورت کا گھر میں اعتکاف بیٹھنا افضل ہے

## وضاحت

ہر مسجد میں عورتوں کے اعتکاف کا خاطر خواہ انتظام نہیں ہوتا نہ باپردہ الگ تھلگ باعزت طور پر ان کے لیے محفوظ جائے اعتکاف کا اہتمام ہوتا ہے۔

یہی چیزیں مسجد میں عورتوں کے اعتکاف پر ممانعت کا شرعی جواز مہیا کرتی ہیں مگر جس مسجد میں وسعت ہو مردوں اور عورتوں کے لیے الگ الگ باپردہ محفوظ جائے اعتکاف ہو تمام حاضرین کو ایک معقول و مفید نظام الاوقات کی پابندی سے تعلیم وتربیت تزکیہ وطہارت اور فرائض وواجبات کے ساتھ نوافل پر بھی عامل بنایا جائے۔

درود وسلام: ذکر اذکار، وعظ، ونصیحت اور وظائف پڑھنے کی پابندی لگائی جائے تو وہاں اعتکاف بیٹھنے کا فائدہ اور اجر وثواب انفرادی اعتکاف سے بھی بڑھ جاتا ہے۔

## عید کے دن کے مسنون اور مستحب امور

عید کے دن مندرجہ ذیل امور بجالانا مسنون ومستحب ہے

(۱) مسواک کرنا۔

(۲) غسل کرنا۔

(۳) کپڑے نئے ہوں تو بہتر ہے ورنہ دھلے ہوئے پہننا۔

(۴) خوشبو لگانا۔

(۵) صبح سویرے اٹھ کر عیدگاہ جانے کی تیاری کرنا۔

marfat.com

(٦) نماز عید الفطر سے پہلے صدقہ فطر ادا کرنا۔

(٧) پیدل عیدگاہ جانا۔

(٨) ایک راستے سے جانا اور دوسرے راستے سے واپس آنا۔

(٩) نماز عید الفطر کو جانے سے پہلے طاق عدد کھجوروں یا چھواروں کا کھانا یا کوئی اور میٹھی چیز کھالینا۔

(١٠) عید الضحیٰ کی نماز سے پہلے کچھ نہ کھانا مستحب ہے۔

اگر قربانی کا گوشت میسر ہو تو نماز عید کے بعد اس کو کھانا مستحب ہے یہ اللہ تعالیٰ کی طرف سے اس کے بندوں کی ضیافت ہے لیکن اگر کچھ کھالیا تب بھی کوئی حرج نہیں۔

عیدین کی نماز کسی بڑے میدان میں ادا کرنا سنت ہے لیکن بڑے شہر یا اس جگہ جہاں زیادہ آبادی ہو ایک سے زائد مقامات پر عیدین کے اجتماعات بھی درست ہیں اور میدان کی بھی شرط نہیں بڑی مساجد میں بھی یہ اجتماعات صحیح ہیں جیسا کہ آج کل ہو رہا ہے اسکی اہم وجہ یہ ہے کہ اگر کسی ایک جگہ اجتماع ہوگا تو بہت سے لوگ نماز عید سے محروم رہ جائیں گے کچھ حقیقی مشکلات کے باعث اور کچھ اپنی سستی کے باعث

نماز عید کیلئے تکبیر تشریق کہتے ہوئے جانا عید الاضحیٰ میں آواز بلند اور عید الفطر میں آہستہ کہنا چاہیے۔

عیدین کا خطبہ سنت ہے یہ خطبہ نماز کے بعد ہوگا۔

اگر خطبہ نماز عید سے پہلے دیا تو کافی ہے اگرچہ مکروہ ہے بعد مین اعادہ نہیں کیا جائیگا۔

marfat.com

# صدقہ فطر

صدقہ فطر مالی انفاق ہے جس کا حکم حضور نبی اکرم ﷺ نے زکوۃ سے پہلے اس سال دیا جس سال رمضان کا روزہ فرض ہوا صدقہ فطر روزے دار کو فضول اور فحش باتوں کی پاکی اور مساکین کیلئے کھانے کا باعث بنتا ہے۔

## صدقہ فطر کن پر واجب ہے

صدقہ فطر تمام مسلمانوں پر واجب ہے حضرت ابن عمر رضی اللہ تعالی عنہ روایت کرتے ہیں۔

فرض رسول الله زكاة الفطر من رمضان صاعاً من تمر اوصاعاً من شعير على العبد والحر والذكر والانثى والصغير والكبير من المسلمين

رسول اللہ ﷺ نے غلام اور آزاد مرد اور عورت چھوٹے اور بڑے سب مسلمانوں پر صدقہ فطر کھجور یا جو کا ایک صاع فرض کیا ہے۔

اس طرح حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ تعالی عنہ سے روایت ہے کہ رسول اللہ ﷺ نے فرمایا صدقہ فطر ہر تونگر پر (واجب) ہے۔ (زجاجۃ المصابیح ج ا ص ۵۱۱)

شرع کی رو سے تونگر اس شخص کو کہتے ہیں جس پر زکوۃ واجب ہے یا اس پر زکوۃ واجب تو نہ ہو لیکن اس کے پاس ضروری اسباب جیسے گھر، کپڑے، اور گھر کا سامان ہو کہ جتنی قیمت پر زکوۃ واجب ہو جاتی ہے۔ خواہ وہ تجارت کا مال ہو یا نہ ہو اور اس پر سال گزرے یا نہ گزرے ایسی صورت میں اس شخص پر صدقہ فطر ادا کرنا واجب ہے۔

marfat.com

## صدقہ فطر ادائیگی کا وقت

صدقہ فطر کی ادائیگی کا افضل وقت عید کی صبح صادق کے بعد اور نماز کی طرف جانے سے پہلے کا ہے حضور نبی اکرم ﷺ کا فرمان ہے کہ مسجد کی طرف جانے سے پہلے زکوۃ فطر ادا کی جائے لیکن اگر کوئی شخص صدقہ فطر کسی وجہ سے عید کے روز ادا نہ کر سکا اور بعد میں ادا کیا تو اس کا شمار قضا میں نہیں ہوگا صدقہ فطر کسی وقت بھی ادا کیا جائے وہ ادا ہی ہوگا۔

## صدقہ فطر کے فوائد

صدقہ فطر کے درج ذیل فوائد ہیں۔

صدقہ فطر ادا کرنے سے حکم شرعی پر عمل کرنے کا ثواب ملتا ہے۔

صدقہ فطر روزوں کو کمی کوتاہی سے پاک کرنے کا ذریعہ ہے۔

صدقہ فطر دینے سے عید کے دن ناداروں اور مفلسوں کی کفالت ہو جاتی ہے اس لئے اس کی ادائیگی کا صحیح وقت عید الفطر سے پہلے ہے۔

## ماہ رمضان میں صدقہ خیرات کرنے کی فضیلت

صدقہ خیرات وہ مال جو اللہ کی رضا کیلئے غریب و مساکین لوگوں کو دیا جاتا ہے زکوۃ و عشر اور صدقہ فطر تینوں واجب ہیں جو ان تینوں میں کسی ایک کو ادا نہ کرے گا سخت گناہ گار ہوگا ان کے علاوہ بھی راہ خدا میں صدقہ خیرات کرنے کا بہت اجر و ثواب ہے اور دنیا و آخرت میں اس کے لیے بے شمار فوائد ہیں۔ رمضان المبارک میں صدقہ و خیرات کی فضیلت کا علم ہمیں حضور ﷺ کی متعدد احادیث سے ملتا ہے۔

حضرت انس بن مالک رضی اللہ عنہ سے مروی ہے کہ حضور نبی اکرم ﷺ سے پوچھا گیا: کہ کونسا صدقہ افضل ہے؟ آپ ﷺ نے فرمایا رمضان میں صدقہ افضل ہے

(ترمذی، سنن، ج ۲، ص ۴۳: رقم حدیث ۶۶۳)

marfat.com

حضرت عبداللہ بن عباس رضی اللہ تعالی عنہ سے مروی ہے کہ حضور نبی اکرم ﷺ تمام لوگوں سے بڑھ کر سخی تھے۔ رمضان میں جب حضرت جبرائیل امین علیہ السلام کی آپ ﷺ سے ملاقات ہوتی تو آپ ﷺ بہت زیادہ سخاوت کیا کرتے تھے حضرت جبرائیل علیہ السلام کی ملاقات کے وقت تو آپ ﷺ کی سخاوت میں تیز ہوا کے جھونکے سے بھی بڑھ جاتی (بخاری: الصحیح کتاب الصوم ج ۲: ص ۶۷۲ رقم ۱۸۰۲)

## فطرانہ لینے کے مستحق لوگ

صدقہ فطر فطرانہ کے مصارف وہی ہیں جو زکوۃ کے ہیں یعنی جن کو زکوۃ دے سکتے ہیں انہیں صدقہ فطر دے سکتے ہیں اور جنہیں زکوۃ نہیں دے سکتے انہیں فطرانہ بھی نہیں دے سکتے مصارف میں سے بہتر یہیں ہے کہ فقراو مساکین کو ترجیح دی جائے اس لیے کہ حضور نبی اکرم ﷺ کا ارشاد ہے۔

اغنوھم فی ھذاالیوم (دار قطنی السنن ج ۲: ص ۱۵۲)

ترجمہ: اس دن مساکین کو (سوال سے) بے نیاز کردو

## رشتہ داروں کو صدقہ فطر دینا جائز ہے

رشتہ داروں مثلاً بھائی، بہن، چچا، ماموں، خالہ وغیرہ کو صدقہ فطر دینا جائز ہے لیکن اپنی اولاد کو یا، ماں، باپ، نانا، نانی، دادی، کو زکوۃ اور صدقہ فطر نہیں دے سکتے علاوہ ازیں شوہر بیوی کو یا بیوی شوہر کو بھی صدقہ فطر نہیں دے سکتی۔

## صدقہ کرنے کی فضیلت

زکوۃ وعشر وصدقہ فطر، یہ تینوں تو واجب ہے جو ان تینوں کو ادا نہ کرے گا۔ سخت

marfat.com

گنہگار رہوگا مگر ان کے علاوہ صدقہ دینے اور خدا کی راہ میں خیرات کرنے کا بھی بہت بڑا ثواب ہے اور دنیا و آخرت میں اس کے بڑے بڑے فوائد و منافع ہیں چنانچہ اس کے بارے میں یہاں چند احادیث لکھتے ہیں ان کو غور سے پڑھیں اور اپنے پیارے رسول ﷺ کے ان مقدس فرمانوں پر عمل کر کے اپنی دنیا اور آخرت سنوار لیجئے

## حدیث:1

حضرت انس رضی اللہ عنہ کا بیان ہے کہ رسول اللہ ﷺ نے فرمایا کہ جب اللہ تعالی نے زمین کو پیدا فرمایا تو ہلنے لگی اللہ تعالی نے پہاڑوں کو زمین میں گاڑ دیا زمین نے ہلنا بند کر دیا تو فرشتوں کو پہاڑوں کی طاقت پر بڑا تعجب ہوا اور انہوں نے عرض کی کہ اے پروردیگار کیا تیری مخلوق میں پہاڑوں سے بھی بڑھ کر طاقتور کوئی چیز ہے۔

اللہ تعالی نے ارشاد فرمایا کہ ہاں لوہا فرشتوں نے عرض کیا کہ تیری مخلوق میں لوہے سے بڑھ کر کوئی طاقت ور چیز ہے؟ تو فرمایا کہ ہاں آگ پھر فرشتوں نے پوچھا کہ کیا آگ سے بھی بڑھ کر کوئی طاقت والی چیز تیری مخلوق میں ہے؟ اللہ نے فرمایا ہاں پانی پھر فرشتوں نے سوال کیا کہ کیا تیری مخلوق میں پانی سے بھی زیادہ طاقتور کوئی چیز ہے؟ تو ارشاد ہوا کہ ہاں ہوا یہ سن کر فرشتوں نے دریافت کیا کہ کیا تیری مخلوق میں ہوا سے بھی بڑھ کر طاقت رکھنے والی کوئی چیز ہے؟ تو فرمایا ہاں ابن آدم اپنے داہنے ہاتھ سے صدقہ دے اور بائیں ہاتھ سے چھپائے مطلب یہ ہے کہ اس قدر چھپا کر صدقہ دے کہ دائیں ہاتھ سے صدقہ دے اور بائیں ہاتھ کو بھی خبر نہ ہو۔ یہ صدقہ، پہاڑ، لوہا، آگ، پانی، ہوا، اور تمام چیزوں سے بڑھ کر طاقتور ہے (مشکوۃ ۱:۱۷۰)

marfat.com

## حدیث:2

صدقہ گناہوں کو اس طرح مٹا دیتا ہے جس طرح پانی آگ کو بجھا دیتا ہے (مشکوۃ ۱:۱۴)

حضرت ابو موسیٰ اشعری رضی اللہ عنہ سے مروی ہے کہ رسول اللہ ﷺ نے فرمایا کہ ہر مسلمان کو صدقہ کرنا چاہیے تو لوگوں نے عرض کی یا رسول اللہ ﷺ جو شخص صدقہ کرنے کیلئے کوئی چیز نہ پائے وہ کیا کرے؟ تو ارشاد فرمایا کہ اس کو چاہیے کہ وہ ہاتھ سے کوئی کام کر کے کچھ کمائے پھر خود بھی اس سے نفع اٹھائے اور صدقہ بھی دے تو لوگوں نے عرض کیا کہ اگر وہ کمانے کی طاقت نہ رکھتا ہو تو آپ ﷺ نے فرمایا کہ وہ کسی حاجت مند کی کسی طرح سے مدد کر دے اس پر لوگوں نے کہہ کہ اگر وہ یہ بھی نہ کرے؟ تو آپ ﷺ نے فرمایا کہ اس کو چاہیے کہ وہ یہ بھی نہ کرے؟ تو آپ ﷺ نے ارشاد فرمایا کہ وہ خود برائی کرنے سے رک جائے یہی اس کیلئے صدقہ ہے (مشکوۃ ۱:۱۲۷)

## حدیث:3

حضرت انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ راوی ہیں کہ رسول ﷺ نے فرمایا کہ صدقہ خدا کے غضب کو بجھا دیتا ہے اور بری موت کو دفع کرتا ہے (مشکوۃ ۱:۱۲۸)

## حدیث:4

حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کہتے ہیں کہ ایک زنا کار عورت ایک کتے کے پاس سے گزری جو ایک کنویں کے پاس پیاس سے زبان نکالے ہوئے تھا اور قریب تھا کہ پیاس اس کتے کو مار ڈالے تو اس عورت نے اپنا چمڑے کا موزہ نکالا اور اس کو اپنی اوڑھنی میں باندھ کر اس میں کنویں سے پانی بھرا اور اس کتے کو پلایا تو اتنا ہی صدقہ کرنے سے اس کی مغفرت ہو گئی (مشکوۃ ۱:۱۲۸)

marfat.com

## حدیث:5

حضرت سعد بن عبادہ رضی اللہ عنہ نے عرض کیا یا رسول اللہ ﷺ میری ماں کی وفات ہوگئی ہے تو اس کی طرف سے کون سا صدقہ افضل ہے؟ آپ ﷺ نے فرمایا پانی حضرت سعد رضی اللہ تعالی عنہ نے ایک کنواں کھدوایا اور یہ کہا کہ یہ سعد کی ماں کیلئے ہے (یعنی اس کا ثواب سعد کی ماں کو پہنچے) (مشکوۃ ۱:۱۶۹)

## حدیث:6

حضرت ابوسعد رضی اللہ عنہ سے مروی ہے کہ رسول ﷺ نے فرمایا کہ جو کسی ننگے بدن والے مسلمان کو کپڑا پہنائے گا تو اللہ تعالی اس کو جنت کا سبز لباس پہنائے گا اور جو کسی بھوکے مسلمان کو پانی پلائے گا تو اللہ تعالی اسکو جنت کا شربت پلائے گا جس پر مہر لگی ہوگی (مشکوۃ ۱:۱۶۹)

## حدیث:7

حضرت عبداللہ ابن عباس رضی اللہ عنہ کہتے ہیں کہ میں نے رسول اللہ ﷺ کو یہ فرماتے ہوئے سنا کہ جو کسی مسلمان کو کپڑا پہنائے گا تو جب تک اس کے بدن پر اس کپڑے کا ایک ٹکڑا بھی رہے گا اس وقت تک کپڑا پہنانے والا اللہ تعالی کی حفاظت میں رہے گا (مشکوۃ ۱:۱۶۹)

## حدیث:8

حضرت جابر رضی اللہ عنہ نے کہا کہ رسول اللہ ﷺ نے فرمایا کہ جو شخص کسی مردہ زمین کو زندہ کرے (یعنی بنجر زمین کو کھیتی کے قابل بنا کر کھیت بوئے یا درخت لگائے) تو اس کو صدقہ کا ثواب ملے گا (مشکوۃ ۱:۱۳۹)

marfat.com

## حدیث:9

حضرت ابوذر رضی اللہ عنہ نے کہا کہ رسول اللہ ﷺ نے ارشاد فرمایا کہ اپنے کسی (مسلمان) بھائی کے سامنے (خوشی سے) مسکرا دینا بھی صدقہ ہے اور کسی بھٹکے ہوئے کو راستہ بتا دینا بھی صدقہ ہے اور کسی اندھے کی مدد کرنا بھی صدقہ ہے اور راستے سے ہڈی، پتھر اور کانٹا ہٹا دینا بھی صدقہ ہے اور اپنے ڈول سے اپنے بھائی کے ڈول میں پانی ڈال دینا بھی صدقہ ہے (مشکوۃ ۱:۱۴۹)

## مآخذ و مراجع


| | |
|---|---|
| القرآن الحکیم | تنزیل من رب العلیمن |
| کنز الایمان | اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان فاضل بریلوی |
| الصحیح المسلم | ابوالحسین مسلم بن حجاج القشیری |
| الصحیح البخاری | ابوعبداللہ محمد بن اسماعیل بن ابراہیم بن مغیرہ |
| مشکوۃ المصابیح | محمد بن عبداللہ خطیب تریزی |
| سنن ابن ماجہ | ابوعبداللہ محمد بن یزید قزوینی |
| مسند الامام الربیع | آزدی ربیع بن حبیب بن عمر بصری |
| الھدایہ | برہان الدین ابی الحسن علی بن ابی |
| سنن ابی داؤد | سلمان بن اشعث سجستانی |
| نور الایضاح | حسن بن عمار بن علی بن یوالفائی الشرنبلائی |
| جامع ترمذی | ابوعیسی محمد بن عیسی بن ترمذی |
| الترغیب والترھیب | حافظ زکی الدین عبدالعظیم بن عبدالقوی المنذری |
| طبرانی | ابوقاسم سلیمان بن احمد بن ایوب |


marfat.com

| | |
|---|---|
| سنن نسائی | احمد بن شعیب |
| فتاوی عالمگیری | ملا نظام الدین و دیگر علماء احناف |
| فتاوی رضویہ | امام احمد رضا خان فاضل بریلوی |
| مسند امام اعظم | نعمان بن ثابت امام ابو حنیفہ |
| ابن عابدین شامی | محمد بن محمد امین بن عمر |
| بہار شریعت | مولانا امجد علی اعظمی رحمۃ اللہ علیہ |
| بیہقی شریف | ابو بکر احمد بن حسین بن علی بن عبد اللہ |
| مسند امام احمد بن حنبل | امام احمد بن حنبل |
| مجمع الزوائد | الحافظ نور الدین علی بن ابی بکر بن سلیمان |
| دار قطنی السنن | ابو الحسن علی بن عمر بن احمد بن مہندی بن مسعود بن نعمان |
| کشف الخفاء | ابو الفداء اسماعیل بن محمد بن عبد الہادی بن عبد الغنی میرانی |
| ابن نعیم | الشیخ زین ابراہیم بن محمد بن بکر الحنفی |
| زجاجۃ المصابیح | احمد بن ابی بکر بن اسماعیل |
| کتاب الشفاء | قاضی ابو الفضل عیاض |
| جامع صغیر | امام جلال الدین سیوطی |
| روا ابن عدی | عبد اللہ بن عدی بن عبد اللہ بن محمد ابو احمد الجرجانی |
| مدارج النبوت | شیخ محمد عبد الحق محدث دہلوی رحمۃ اللہ |
| موطا امام مالک | امام مالک رحمۃ اللہ علیہ |
| ادب المفرد | امام محمد بن اسماعیل بخاری |
| صحیح ابن حبان | ابو خاتم محمد ین حبان بن احمد بن حبان |

marfat.com

| | |
|---|---|
| الدارمی | ابومحمد عبداللہ بن عبدالرحمٰن |
| مستدرک حاکم | ابوعبداللہ محمد بن عبداللہ بن محمد |
| کنزالعمال | العلامہ علاءالدین علی المتقی بن حسام الدین الہندی |
| الدرالمنظم فی المولدالمعظم | ابوالقاسم ابسیؒ |
| حسن الظن | ابن ابی الدنیا |
| مسند ابویعلی | ابویعلی الموصلی |
| الفتح الربانی | عبدالقادر جیلانی رحمۃ اللہ علیہ |
| احیاءالعلوم الدین | امام محمد غزالی رحمۃ اللہ علیہ |
| ابن ابی شیبہ | ابوبکر عبداللہ بن محمد بن ابراہیم بن عثمانی کوفی |
| طحاوی | ابوجعفر احمد بن محمد بن سلاحہ بن مسلمہ بن عبدالمالک |
| اصول الشاشی | نظام الدین الشاشی |
| المختصر قدوری | لابی الحسین احمد بن محمد بغدادی |
| ہدایۃ الھدایہ | امام غزالی رحمۃ اللہ علیہ |
| جدالمختار علی ردالمحتار | اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان بریلوی |
| جوہرہ نیرہ | |
| بحرالرائق | علامہ زین الدین ابن نجیم (رحمۃ اللہ علیہ) |
| کتاب صدقات | |
| تفسیر القرطبی | امام ابوعبداللہ |
| بدائع الصنائع | امام کاسانی |
| مسند الفردوس | امام حافظ شہردار دیلمی |

marfat.com

آستانہ عالیہ ڈھوڈا شریف میں تعلیمی سرگرمیاں

مرکزی دارالعلوم جامعہ قادریہ قاسمیہ ڈھوڈا شریف

## کا تعارف

### (1) طلباء کے شعبہ جات

شعبہ ناظرہ:۔اس شعبہ میں طلباء کو تلفظ کے ساتھ قرآن پاک پڑھایا جاتا ہے۔

شعبہ حفظ:۔اس شعبہ میں طلباء قرآن پاک کو حفظ کرنے کی سعادت حاصل کرتے ہیں۔

شعبہ تجوید وقرأت:۔اس شعبہ میں قرآن کو قرأت کے ساتھ پڑھنا سیکھتے ہیں۔

شعبہ درس نظامی:۔اس شعبہ میں طلباء ادیب عربی، میٹرک، ایف اے، عالم عربی، فاضل عربی، بی اے اور دورہ حدیث کا امتحان پاس کرتے ہیں۔

### (2) طالبات کے شعبہ جات:۔

شعبہ ناظرہ:۔اس شعبہ میں طالبات کو تلفظ کے ساتھ قرآن پاک پڑھایا جاتا ہے۔

تربیتی کورس:۔طالبات کی اخلاقی تربیت کی جاتی ہے۔

تفسیر القرآن:۔اس شعبہ میں قرآن پاک کا ترجمہ اور تفسیر پڑھائی جاتی ہے۔

فاضل عربی:۔اس شعبہ میں فاضل عربی بورڈ کا امتحان دلوایا جاتا ہے۔

### .....ہاسٹل.....

دارالعلوم کے تمام طلباء وطالبات کو ہاسٹل کی تمام تر سہولیات مہیا کی جاتی ہیں۔

## قاسمیہ اکیڈمی ڈھوڈا شریف

نرسری سے ایف اے تک تعلیم کے لیے محنتی، شفیق اور نہایت ہی قابل ٹیچرز موجود ہیں۔

## سیّدہ آمنہ گرلز ہائیر سیکنڈری سکول

نرسری سے بی اے تک تعلیم کے لیے نہایت محنتی اور قابل ٹیچرز موجود ہیں۔

**ہاسٹل:۔** طالبات کے لیے ہاسٹل کی مکمل سہولت موجود ہے۔

# سالانہ عرس مبارک

## بزرگانِ ڈھوڈا شریف گجرات پاکستان

ہر سال باقاعدگی کے ساتھ 23,24 نومبر کو بڑے پُر وقار انداز سے منایا جاتا ہے تمام دوست احباب سے شرکت کی اپیل کی جاتی ہے۔ شرکت کر کے ثواب دارین حاصل کریں۔

# اجتماعی اعتکاف

## 1995ء سے صاحبزادہ پیر محمد احمد قاسمی قادری مدظلہ العالی

آستانہ عالیہ قادریہ قاسمیہ ڈھوڈا شریف کی زیرِ نگرانی اعتکاف ہو رہا ہے جس میں ہزاروں کوگ اندرون و بیرون ممالک سے آتے ہیں اور اجتماعی اعتکاف کرتے ہیں جس میں بے شمار لوگوں کو آپ ﷺ کی زیارت ہوتی ہے۔

## .....اپیل.....

حسب توفیق دارالعلوم جامعہ قادریہ قاسمیہ ڈھوڈا شریف (گجرات پاکستان) کے ساتھ تعاون فرمائیں۔

مثلاً زکوٰۃ، خیرات، قربانی کی کھالیں وغیرہ کی رقم دارالعلوم کے اکاؤنٹ میں جمع کروائیں۔

**اکاؤنٹ نمبر: 223600001507**

رابطہ نمبر:۔ موبائل:۔0300-6229094 لینڈ لائین 053-3653011,211

(dhodasharif_pakistan@yahoo.com)

dhodasharifgujratpakistan@yahoo.com

0302-6231133, 0347630143

marfat.com

# مصنف کی دیگر کتب




ادارہ قاسم المصنفین